यदि (अगर) यीशु महापौर होते

परिवर्तन और स्थानीय कलीसिया संक्षिप्त अनुवाद

''जाओ और जातियों के लोगों को चेला बनाओं'' मसीही की इस आज्ञा को पूरा करने के लिए बोब मोफिट कलींसिया को कार्य करने हेतू बुलाते है। चुनौती के लिए और परिवर्तन के लिए तयार रहे।

लौरेन कनिंघम, संस्थापक
यूथ वित ए विजन

बॉब मॉफिट मोफिट अनुचित प्रश्न को उठाते हैः ''यीशु क्या करते यदि वे आपके समाज के महापौर होते?'' उनका उत्तर (जवाब) पुस्तक (खिताब) के रूप में आता है जो पूर्णतः बाईबिल संबंधी प्रमाणित किया गया है पाठों और उदाहरणों के संग, स्थानीय कलीसिया के लिए एक मामला बनाते हुए परिवर्तन के एक प्रतिनिधि के समान।

तेतसुनाओ यामामोरी, अन्तरराष्ट्रीय अध्यक्ष,
लौसेन कमिटी फौर वर्ल्ड ईव्हॉनजलैजेशन्

सेवकाई के लिए क्या होना ावश्यक है यही सार (सारांश) बॉब मॉफिट ने अभिग्रहण किया है। मै इस किताब (पुस्तक) को अत्यन्त मनसे सौंपता हूँ (इसको सिफारिश करता हूँ।)

राल्फ नेबर, अध्यक्ष
टच ग्लोकल ट्रेनिंग सेन्टर, युएसए

The Lord intends for His church to thrive and grow as self-sufficient and abundantly provided for. This conviction has gripped and led Bob Moffitt to develop down-to-earth teaching material which has now been used around the world to bless the church. Having used it in India and seen its value, I commend this work to churches, that they may realize a healthy future in an age of many challenges.

Siga Arles, Dean
Consortium for Indian Missiological Education

बॉब मॉफिट और हार्वेस्ट के द्वारा अन्य कार्य:
यदि यीशु महापौर होते (मूल, सम्पूर्ण अनुवाद)

बेसिक्स् सर्वांगिण शिष्यता

पुस्तक १: यीशु राजा
पुस्तक २: परमेश्वर की प्रतिमा
पुस्तक ३: कलीसिया

सर्वांगिण सेवकाई प्रशिक्षण

मानवीय आवश्यकता को एक मसीही प्रतिक्रिया (जवाब)
बाईबिल सम्बन्धी पूर्णता
सेवकत्व
परमेश्वर का राज्य
राज्य गणित
कलीसिया एक खिडकी (झरोखा) समान
बीज प्रकल्प

समाप्त विकास के लिए हुनर (फल)

सहयोगी जानकारी (शिक्षा–प्राप्ति)
नेतृत्व (नेतागिरी)
परियोजना प्रबंध (व्यवस्था)

राज्य जीवनशैली श्रृंखला *(श्रेणी, अनुक्रम) (डॅरो मिलर और स्कॉट अलन के साथ)*

राष्ट्रोंके लिए परमेश्वर की असाधारण योजना
परमेश्वर के राज्य का विश्वदर्शन
परमेश्वर का अटल (अविचलित) राज्य

कलीसिया एक खिडकी (झरोखा) समान *(टेलिविजन)*

कारापिता के लिए दर्शन *(टेलिविजन)*

जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो *(डॅरो मिल्लर के साथ डेलिविजन श्रुंखला)*

यदि (अगर) यीशू महा पौर होते

परिवर्तन और स्थानीय कलीसिया

संक्षिप्त अनुवाद

बॉब मॉफिट

कार्ला टेस्क के साथ

Copyright 2004, 2005 by Bob Moffitt and licensors. All rights reserved.
Second international edition. Revised for submission to Monarch Books, 2005.

Unless otherwise noted, all Scripture references in this book are taken from the HOLY BIBLE, NEW INTERNATIONAL VERSION. Copyright 1973, 1978, 1984 International Bible Society. Used by permission of Zondervan Bible Publishers. Scripture quotations in this edition are printed in an italicized font.

Book layout designed by Brian Gammill, Harvest, 2004.

विषय-सूजी

प्रस्तावना		*vi*
भाग एक	**महापौर की कार्यसूची (कार्यक्रम)**	
अध्याय १	यात्रा (सफर) का आरंभ	३
अध्याय २	(अगर) यदि यीशु महापौर होते	८
भाग दो	**कलीसिया के द्वारा (जरिये) सांस्कृतिक परिवर्तनः बाइबिल - सम्बन्धी और ऐतिहासिक तत्व (खोज)**	
पूर्वरंग (प्रस्तावना)		१७
अध्याय ३	सांस्कृतिक परिवर्तन और इतिहास की कलीसिया	२१
अध्याय ४	परमेश्वर की बडी (विशाल) कार्यसूची	३१
अध्याय ५	परमेश्वर की प्रतिमा प्रदर्शित हुई	४३
अध्याय ६	कलीसिया का उद्देश्य (लक्ष्य)	५०
अध्याय ७	कलीसिया और आज का संसार (दुनिया)	५५
अध्याय ८	कलीसिया की विशेषताएँ जो परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करती है	७५
भाग तीन	**स्थानीक कलीसिया जो संस्कृति बदलती (बदल दे ती) है**	
पूर्वरंग (प्रस्तावना)		९०
अध्याय ९	स्थानीक कलीसिया के द्वारा परिवर्तन	९३
अध्याय १०	सर्वांगीण गवाह के लिए स्थानीक कामीसिया को सुसाज्जत करना	१११
अध्याय ११	राज्य गणितः सेवा के लिए गुणन	१३२
अध्याय १२	परिवर्तन के लिए उपकरण (हथियार)	१४३
उपसंहार		*१४९*
बाइबिल पाठों का उल्लेख		*१५०*
कार्यों का उल्लेख		*१५१*
लेखकों के विषय में		*१५४*

प्रस्तावना

क्या आपने कभी इसके विषय में सोचा है: *क्या यदि (अगर) यीशु आप के समाज के महापौर होते तो?* मैनें कभी नही सोचा। मैंने कई साल तक ऐसे लोगो में काम किया जो गरीभ है और जिन्हें मताधिकार नही है। मालूम था (मैं जानता था) कि उनकी परिस्थितीयों से परमेश्वर के हृदय के टुकडे टुकडे हो गये। लेकिन एक दिन, बीस साल पहले, होन्डुरास में एक छोटे समाज में मै कुछ निराश पाद्रीयों से बातचीत कर रहा था। जैसे ही मैने यह खत्म किया, परमेश्वर ने एक प्रभाव शाली दृष्टांत (दर्शन) से और प्रश्न (सवाल) से मुझे तोडा: *''यदि (अगर) यीशु आपके समाज के महापौर होते तो वे क्या करते?''* मनसे उसके संग रास्तों से जा रहे थे (गये)। हमने उसे लोगों के दु:ख देखकर रोते हुए देखा। समाज के लिए हमने उसके आभास को पकड लिया। भाग एक में आप खुद ही (स्वयं) ही कहानी को पढेंगे।

कलीसिया-इस संसार (जग) में मसीह का शरीर-जिस जागृत अन्त शक्ति और जिम्मेवारी है। वह यीशु मसीह द्वारा अधिकृत और साज्ञित की गई है। होन्डुरास में उस दिन मैने सोचा, ''मसीह के शरीर (देह) यीशु जैसे करता था वैसे ही समाज को सेवा करनी चाहिए!'' मैने यह जाना की यीशु हमारे समाजों का महापौर है जिस तरह सें वह उसके परिवर्तित प्रतिनीधी के द्वारा कार्य करता है, कलीसिया... हम! यही उसकी योजना है- उसकी मुख्य कार्यसूची - पृथ्वीपर (संसार में) उसके प्रति निधि के लिए।

मै पूर्ण से समझ गया की कोई इस पुस्तक के शीर्षक को जरूर यह सोचके उत्तर देगा'' यीशु समाज सुधारक बनने नही आये!'' इस भाव सें वे सही है। मै ओस्वाल्ड चेम्बर्स के टिप्पणी को कदर करता हूँ:

> ''लोग कह रहे है की यीशु मसीह समाज सुधारक के रूप मे आये है। मूर्ख! हम ही तो समाज सुधारक है; यीशु मसीह हमे बदलने आये है और हम आपना कार्य उसपर थोपकर हमारी (अपनी) जिम्मेवारी को टालने की कोशिश करते है। यीशु हमे बदल देते है और हमें सही करते है; और फिर उसके यह तत्व हमें तत्काल समाज सुधारक बना देते है। वे सीधे रास्ते से कार्य करना आरंभ करते है, जहॉ हम रहाते है ...[१]

यदि यीशु महापौर होते यह एक प्रकार से समाचार है जो पुरुषों और स्त्रियों का मसीह के साथ 'परिवर्तीत' सम्बन्ध लाता है और उनके राष्ट्र के शिष्यता को और आगे ले जाता है - कलीसिया के द्वारा।

---

१. ओस्वाल्ड चेम्बर्स, *मेरी परम (उच्चतम) धार्मिक (भक्तिमय) बाइबिल,* पाठ ९२। यह उल्लेख (आव्हान) इस पुस्तक के सामने के आदर्शवाक्य के लिए भी है।

मुलतः यह पुस्तक स्थानिक कलीसिया के अगुवों के लिए लिखी गई है, जिसे कभी कभी ''दो तिहाई (तृतीयांश) समाज (दुनिया)[२] कहा (जाता) गया है। फिर भी वे स्वयं सुझसे पुछते है: *''यह हमारे लिए ही क्यों लिखा गया है? क्या संपूर्ण संसार के पाद्री और कलीसिया के अगुवों को जानने की आवश्यकता नही है अथवा कमसे कम मसीह के शरीर होने का आशय (तात्पर्य) का स्मरण दिलानेको आवश्यकता नही है?''*

अच्छा, हा! सच, वे करते है। हम सब करते है! हा, सिद्धान्त (तत्व) सभी तरफ (जगह) सही है। जहा भी आप रहते है, मैं आपको पढ़ने के लिए आमंत्रित करता हूँ, और मैं यही प्रार्थना करुंगा की आपके लिए वे चुनौतीपूर्ण और महत्वपूर्ण हो!

मुझे इस निमंत्रण को विस्तार करने दे। इस कार्य में मैं प्रायः (बहुधा) सढ़िवादी (सुसमाचारी चॅरीसमॅटीक अथवा पेन्टी कोस्टल) कलीसिया को संबोधित करता हूँ। यही वे कलीसिया है अपने कार्य मे हमप्रायः (बहुधा) मिलने रहते है। फिर भी, मैं सभी कलीसिया की परमारा के लोगों को संदेशों को उनके स्वयं के विन्यास में पढ़ने और उसके प्रयोग का अन्वेषण (छान-बीन, खोज) करने निमंत्रण देता हूँ। मेरी एक धारणा (विश्वास) यह है के कलीसिया यह इस संसार के टूटे पर अच्छे करने के लिए परमेश्वर का प्रमुख अस्तित्व है। दुसरी धारण यह है की जब हम एकसाथ मिलकर सेवा करते है तो परमेश्वर हमारे मध्य में एकता निर्माण करना चाहता है। हां, कृपया पढ़ीये, *जो भी आपकी परमारा हो!*

दुसरा कारण मैंने कढ़िवादी कलीसिया के भाई और बहनों के लिए यह लिखा उनकी कलीसिया असंतुलित है और आध्यात्मिक सेवकाई के प्रति उनका संकुचित (संकीर्ण) केंप्रबिन्दु है। बहुतों ने यह कभी नही सिखा (पढ़ा) होगा की भौतिक और समाजिक टुटेपण के लिए परमेश्वर अपने बच्चोंको उसकी दया (करुणा) जानबूजकर और क्रियात्मक रीतिसे सिद्ध (प्रमाणित) करने के लिए आज्ञा करता है। अक्सर उनमे युद्धनीति, बायबिल सम्बन्धी ''अनुमति'' और साधनो का अभाव था। सभी जगह मैं सिखाता हूँ-गत बीस सालों से तीस से अधिक देशों में - मैंने कलीसिया के अगुवों को देखा जिन में एक अत्यावश्यक अनुभव (संवेदन) है की परमेश्वर ने उन्हे अधिक और अधिक कुछ करने बुलाया है। मूलतः यह पुस्तक उन्ही के लिए लिखी गयी थी, लेकिन यह सभी के लिए एक चुनौति होगी जो स्वयं को और उनकी कलीसिया के लोगों को अधिक विस्तृत और गहरी सेवा में ले आने को तैयार है।

---

२. *दो तिहाई संसार (विश्व)* : पश्चिम के बाहर भौगोलिक क्षेत्र। विशेष रूपसे आशिया आफ्रिका लॅटीन अमेरिका और युरोप और उत्तर अमेरिका के सिमित क्षेत्र संदर्भों की आवश्यकता और अनूठे (अनुपम) विश्वदर्शन और संस्कृति से चरित्र-चित्रण किया गया। कभी कभी इसे तिसरा संसार (विश्व) कहां जाता है (एक सत्र जो आर्थिक और जीवन की विशेषता कें सूचक पर आधारित है)। फिर भी दो तिहाी विश्व उन भौगोलिक क्षेत्रों मे विश्व की जनसंख्या के सैकडेवारी (प्रतिशत) को बेहतर सूचित करता है।

परमेश्वर की कार्यसूची का आरंभ प्रत्येक व्यक्ति के आध्यात्मिक मुक्ति (छुटकारे) के साथ आरंभ होता है, मुख्यतः स्थानिक कलीसिया की सेवकाई के द्वारा - लेकिन उसकी सम्पूर्ण कार्यसूची राष्ट्र के शिष्यता से कम नही है। जो कलीसिया इस समिती की कार्यसूची के प्रति वचनबद्ध है वे व्यक्तियों को मसीह को ओर लाने जारी रहती है - और समाजों के लिए परमेश्वर का शालोम। हम कलीसिया के परमेश्वर की समिती की कर्यसूची के परिदृश्य (संदर्श) के धर्मग्रन्थ की ओर देखेंगे। हमारे एक कर्मचारी सदस्य जो सुसमाचारी सेवकाई के साथ पहले काम करता था जिसने हय टिप्पणी को सूनाः ''मैं कल्पना नही कर सकता की कितनी बार मैंने इस विशिष्ट परिच्छेद (लेखांश) को सिखाया (पढ़ाया) है, परन्तु मैंने कभी भी उसके व्यापक (विस्तृत) आशायों को देखा नही। अघापि वह ठिक वहाँपर है।'' मेरा विश्वास है की इस तरह का प्रकटन तुम्हे भी होगा जैसे आप इन पुष्ठों को (पन्नों को) पढ़ेंगे। यदि यीशु महापौर होते इस पुस्तक में परिवर्तीत सेवकाई की कई वास्तविक जीवन की कहानियाँ सम्मिलित है। इन कहानियों को सम्पूर्ण पुस्तक में अलंकृत किया गया है, ताकि आप संसार के चारो ओर से कुछ अधिक व्यक्तियों से और कलीसिया से मिले (भेंट करें) जिन्होंने स्वयं के लिए जवाब (उत्तर) दे दिया हैः ''यदि यीशु हमारे समाज के महापौर होते तो क्या होता?'' इन कहानियों को आपके स्वयं के सन्दर्भ में (परिस्थिती में) अनुवाद करने के लिए मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ। अपने भाई और बहनों को आत्मा, समर्पण और रचना को जीत लो!

मैं विनम्र हूँ, की परमेश्वर जो आन्दोल्झन का विकास कर रहे है मैं उसमें सेमैएक आवाज हूँ, और दृश्य से मैं ..... दर्शन बॉटता हूँ मेरी यात्रा के दौरान जो परमेश्वर ने मुझे इस मुकाम (पड़ाव) में मुझे दिया है। में आपसे अनुरोद करता हू की, आप जों इन लिखित शब्द और पवित्र आत्मा के आन्तरिक (भीतरी) अनुबोधन के द्वारा यहाँ पढ़ने है तो उसे नाप लें। ब्राझील मे; एक हमारे कर्मचारी सदस्य ने कहा की इस हस्तलिपि को पढ़ना मेरे साथ एक दीर्घ बातचित करने समान है। मैं आपको भी इस दीर्घ (लम्बी) बातचित में आमत्रित करता हूँ। मुझे खुशी है की परमेश्वर ने यह मोका (सुअवसर) हमें दिया है की हम एकत्र होकर उसके ओर देखे - बिलकुल यथार्थ रिती से - संसार जो कुछ मतलब का है. (दुनिया, जग) उसके प्रति!

बॉब मॉफिट

यदि आपको ''यदि यीशु महापौर होता'' का यह संक्षिप्त अनुवाद दिलचस्प (साझा) और महत्व का लगे तो आप आवश्य असंक्षिप्त अनुवाद को पढ़ना चाहेंगे।

भाग एक

महापौर की कार्यसूची (कार्यक्रम)

. . . तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है,
वैसे पृथ्वी पर भी हो।

—मत्ती ६:१०

यात्रा (सफर) का आरंभ

१

मेरी यात्रा

परमेश्वर ने मुझे एक भाव (आवेश) दिया है। मेरा भाव (आवेश) यह है की मसीह की देह- विशेष रूप से स्थानिक कलीसिया- देखेगी और पूरा करेगी उस महान उद्देश्य को जिसके लिए उसने निर्माण (बनाया) किया है। यह एक कहानी है की मैं इस भाव में (आवेश में) कैसे आया। यह मेंरी यात्रा की कहानी हैं - अक्षरशः और प्रतीकात्म करिती से! मेरा विश्वास है की यह आपको वह संदर्भ समझने (जानने) मे मदत होगी जिस से मै लिख रहा हूँ और लोगों को उत्तेजित होकर पूछने का कारण को यीशु क्या करते यदि (अगर) वे महापौर होते।

मुझे सतक (सवाधान) रहना होगा, कलीसिया के लिए मसीह उसका सिर है यह जाने बगौर मैं अपना भाव (उत्साह, आवेश) उसपर रखूंगा नही। किसी से भी अधिक मसीह को जानने की चाह (इच्छा) है, जैसे (जिस तरह) प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया से कहा था। हम में से जिसमे भाव (आवेश, उत्साह) है कार्य (काम) देनेवाले के बजाय काम (कार्य) पर अधिक एकाग्रता होने से वे खतरे में है। जब हमारी एकाग्रता किसी मे ना होते हुए मसीह में है, हम हमारे कार्य के संघट्टन को घटाते है (कम करते है)। फसल (उपज) के लिए शक्ति (ताकत, बल) हमारे काम से नही आता है, लेकिन उस से आता है जो हमें हमारे कर्तव्य (कार्यभार) देता है। प्रभू, पहले तेरी इच्छा रखने मे हमारी मदद करो!

मै एक प्रचारक का बच्चा (बेटा) हूँ मेरे बचपन से लेकर आयु के पंद्रह वर्ष का होनेतक, मेरे पिता ने एक मध्य लॉस एंजलिस मे एक काम करनेवाले पडोसी वर्ग के एक प्रेमी बॅप्टीस्ट की कलीसिया मे सेवकाई की थी। मेरे मातापिता ने लॉस एंजलिस के बायबिल संस्था मे सेवा की आज वह बायोला विद्यापीठ से जाना जाता है। वह इस तरह से या की परमेश्वर ने इस संसार के लिए सुसमाचार सुनानेका आवेश उनमे पैदा किया या। मिशनरी बनके उन्होंने आफ्रिका जाने की तैयारी की, लेकिन उस के बजाय उन्होंने दुसरों को मरना और उन्हे भेजने की चुनौति को स्विकारा।

उस कलीसिया के बपतिस्मा-कष्त के उपर लिखे थे वे आज भी मेरे मन पर निक्षारित हैः ''क्या किसी एक को सुसमाचार दोबारा सुनने का हक है जबतक सभी ने उसे एकबार सुना है?'' हमारे परिवार ने और हमारी कलीसिया ने मिशनरी लोगों की सहायता की और भेंट करने (देनेवाले) मिशनरी हमारे ही घर मे ठहरते ये। मैं उनकी कहानियों को सुना करता था। वे मेरे नायक थे। मैं उन्ही के समान होना चाहता था।

जब मैं पंद्रह साल का था, मेरे पिता ऑरिझोना बॅप्टीस्ट सम्मेलन के प्रधान सचिव बन गये। कलीसिया का रोपण करने का उनका दर्शन था। उनकी सेवकाई ी पच्चीस साल में सौ से अधिक

---

१. फिलिप्पियों ३:७-९०

कलीसिया का रोपण हुआ। विश्व का सुसमाचार और कलीसिया का रोपण यह बहुत ही अदभुत (चमत्कारिक) मीरास थी लेकिन मेरी आरंभिक बालिग अनुभव के द्वारा मेरे लिए परशानी में डालने वाले प्रश्नों के उत्तर खोजना मेरे लिए कारण बन गया।

मैंने पीस कॉर्पस् में एक माध्यमिक शाला में पढाते हुए दो वर्ष बिताए। मेरी व्यवस्था एक ग्रामीण मिशन शाला में की गई थी दुसरे लडकों के समान जिसके विषय में मैं सुनाता था। मिशनरी लोगों ने बहुत अच्छा काम (कार्य) किया था। यह शाला देश की एक उत्तम ..... शाला थी। उस शाला को अच्छी तरह से चलाया जाता था। और सफलतापूर्वक संचालन (प्रशासन) किया जाता था। मिशनरी लोग स्पष्टतया विद्यार्थीयों से प्रेम रखते थे और सुसमाचार को लेकर उनतक पहुँचना चाहते थे। मैं भी अपने विद्यार्थीयों को यीशु के साथ व्यक्तिगत सम्बन्धों मे देखना चाहता था और मैंने भी गुप्तरूपसे एक मिशनरी के साथ हो लिया और प्रातःकाल विद्यार्थीयों के लिए मध्यस्थता (निवेदन) करता था।

फिर भी, कुछ विद्यार्थी सुसमाचार से मूहँ मोड रहे थे। उन्होने संदेश को अनुभव किया। (समझा) - सही या गलत - की मिशनरी के ईसाई धर्म ने ऑफ्रिकी लोगों के लिए आदर्श (प्रतिरूप) समान सेवकाई करना चाहिए जिन्हों ने ईसाई धर्म को अपनाया है (जो ईसाई बने है)। विद्यार्थीयों ने संस्कृतिक साम्राज्यवाद पर संदेह किया और यह संदेह के कारण बहुतो ने जो मिशनरी उनसे ..... प्रेम रखते थे उनके संस्कृति और विश्वास को अस्वीकार करने का कारण हो गया। इस विषय पर मैं ने प्रतिकूल - सांस्कृतिक सुसमाचार प्रचार विषयक प्रश्न करना आरंभ किया। अद्यापि (अब तक) मैंने विश्वास किया की मुझे कार्यो के लिए बुलाया गया था।

पीस कॉर्पस् भी सेवा के पश्चात लगभग दो वर्षीय खोज (तलाश) का क्या उध्देश्य है और उसमें मेरी संभाव्य भूमिका को समझना मैने आरम्भ किया। मैंने मोठर साइकिल से अधिक से अधिक उप-भूमध्यवर्ती आफ्रिका के अन्त तक यात्रा की जहां मैंने कई सेवकाई करने वालों से भेंट की और उनके साथ समय भिताया। इस भ्रमण में, मैं ने दो आफ्रिकी युवकों से भेंट की जो आजीवन भरके लिए मेरे भाई बवें। अभी वें उनके स्वयं के देशों में मसीही अगुवे है।

मैंने मध्य पूर्व के अन्त तक अनुरोध सैर की और इस्त्राएल की स्नातक शाला में एक सत्र को पूरा किया। दुसरा, बेल्जियम में, मैंने उपयोग मे लाये गये (Cylinder Citroes) (फ्रेन्च द्वारा दिया गया उपनाम ''बदसूरत बतख का बच्चा'' (Ugly Duckling) को खरीदा और उसे भारत में चलाकर ले आया, जहा वह सुअर्जित थकावट से देर हो गया। मेरे भ्रमण के अन्तिम मार्ग मे मैं दक्षिण और पूर्व आशिया में नौ देशों में विमान से सफर किया। इस सम्पूण (पूरी) यात्रा मे मैने सेवकाई करनेवाले और राष्ट्रीय मसीहीयों का साक्षात्कार लिया। मै यह जानना चाहता था की सुसमाचार फैलाने में क्या काम हुआ और क्या नही हुआ। मैंने निष्कर्ष निकाला की प्रति - सांस्कृतिक सुसमाचार प्रचार वैध है, लेकिन उसका सबसे बड़ी संभावना यह है जब पृति - सांस्कृतिक सेवकाई करनेवाले ''मालिकों के'' अथवा ''bwanas'' के .....राष्ट्रीय कलीसिया के प्रति नही आये है परन्तु भाईयों और सेवकों के (दासों के) समान आये है। जीवन-लक्ष्य के प्रति मैंने मेरे बुलाये की पुष्टि की। मै घर लौट आया और जीवन लक्ष्य को मुख्य मानते हुए मैने तुरन्त डनवर मे गुरुकुल (Seminary) में प्रवेश लिया।

अनजाने मे मुझे वास्तविकता के मुश्किल के लिए अग्रभागी बनाया जो कलीसिया के प्रति मेरी भावना के मूलत: बदल जाये।

गुरुकुल ने विद्यार्थीयों को समाज सेवा में उलझने के लिए प्रोत्साहित किया। कानून तोडनेवाले युवाओं के लिए परामर्शदाताओ का प्रबन्ध करके उनके लिए नये कार्यक्रम को समकक्ष बनाना, जिन मे सें कई आफ्रिकी, अमेरिको और हिस्पॉर्नक थे, यही मेरी प्रतिक्रिया थई। भले हो हमारा कार्यक्रम खुलेआम मसीही था की अदालत उनके युवा लोगों को हमे सौंपना चाह रहे थे। ..... मसीही गरीब युवाओं के मित्रता का प्रबन्ध कर सकते है और उन्हे मसीह में विश्वास के विषय में (बारे में) बता सकते है - एक महान आज्ञा[२] को और महान अधिकार को[३] को मिलाना (जोडना) एक सम्पूर्ण (सही) सुअवसर है! गुरुकुल (सेमिनरी) के अध्यक्ष ने स्थानीय कलीसिया को पत्र लिखे, और मैंने कलीसिया के सैकडों से बात की। उनकी और से अल्प प्रतिक्रिया हुई। शाचद उस समय के जातीय (जातिगत) तनाव से लोगों को भयभीत किया। सौभाग्यवश, मेरे गुरुकुल (सेमिनरी) के सहयोगी विद्यार्थी इच्छक थे। गुरुकुल के दस विद्यार्थीयों ने एक-एक करके युवाओं के साथ सम्बधोंको परामर्श देना आरम्भ किया। परिणाम अच्छे थे, और अदालत ने और अधिक युवाओं को हमें सौप दिया। हमने साहसपूर्ण रितीसे स्थानीय कलीसिया से मसीही लोगों को इसमें समाविष्ट करने की कोशिश की लेकिन (परन्तु) अल्प सफलता के साथ। यह आवश्यकता इतनी बड़ी (महान) थी की हमें गैर मसीही विश्वविदयाल्य के विद्यार्थीयों को मंजूर (स्वीकार) करना पडा जिन्हों ने अक्षरश: सम्मिलित होने के लिए भीख माँगी (प्रार्थना की, विनय किया)। हमारा कार्यक्रम बढ़ता गया और एक राष्ट्रीय नमूना (आदर्श) बना। परन्तु विकास मुख्यता था क्यों कि गैर मसीही गरीब युवा लोगों के मित्र (दोस्त) बनना इच्छुक हो रहे थे। मै, मेरे मीरास के कलीसिया के साथ गंभीररूप से नाराज हुआ। बढ़कर मुझे लोगों के साथ कुछ थोडा करना था जिन्होनेप्रेम के विषय मे बात की, लेकिन (परन्तु) परेशान युवाओं को मदद करने के लिए अनिच्छुक थे, जो शायद कभी भी परमेश्वर के प्रेम का सामना नही कर पाते। मैंने परमेश्वर से प्रेम किया, परन्तु मै खफा (नाराज) था-बहुत खफा-कलीसिया से।

मेरे आशाभंग के (नैराश्यके) बीच में, परमेश्वर ने मुझसे बात की। वचन और प्रार्थना के द्वारा उसने मुझे कहा ''बॉब, यह मेरी कलीसिया है, मेरी दुल्हन है। जैसे जैसे वह दुटी है, मैं उससे प्रेम रखता हूँ। मैने अपना जीवन उसके लिए दे दिया है। जबतक तु मेरे प्रेम के साथ उससे प्रेम नही रखता, मैं तुम्हे उसकी मदद करने के लिए, मेरा इरादा (आशाय) है उसे क्या बनाना तुम्हारा उपयोग नही कर सकता।

मुझे ऐसा महसूस हुआ की जैसे मेरी अन्तरात्मा में खंजर (छुरा) को डाल दिया है। मैने कबूल किया, ''परमेश्वर, मुझे माफ करो। जब तक आप अपना प्रेम मेरे हृदय मे नही भरते (डालते), मैं

---

१. बडी आज्ञा: यीशु ने कहा की पहली और सबसे बडी आज्ञा यह है की ''तु परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्दि के साथ प्रेम रख।'' और दुसरी है ''तू अपने पडोसी से अपने समान प्रेम रख।'' वे एकत्र (एकसाथ) पुराने नियम के कानून और शिक्षा को संक्षिप्त करते है (मत्ती २२:३७-४०)।

२. महान (बडा) अधिकार: यीशु उसके चेलों को जाने के लिए कहा और सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, उन्हे बापतिस्मा दो और उन्हे उसकी आज्ञा को मानना सिखाओ (मत्ती २८:१७-२०)।

कलीसिया से प्रेम नही रख सकता, लेकिन मैं इच्छुक हूँ।'' परमेश्वर ने प्रार्थना का उत्तर दिया। आज, कलीसिया के टुटेपण के बावजूद मैं उससे प्रेम रखता हूँ और उसकी स्वस्थता मे सहयोग करना मेरा भाव (आवेश) है। क्या मै लक्ष्य के प्रति बुलाया गया था? हा! मैंने देखा मेरा लक्ष्य कलीसिया की सेवा करना था, उसकी विरासत पर उसका दावा (अधिकार) करने में उसकी मदद करना। (शीघ्र ही) भूखे लोगों के स्वयंसेवी कार्यक्रमों के चलाने के लिए (आरम्भ करने के लिए). और स्पष्ट करने के लिए, मैं जल्दी ही (शीघ्र ही) भूखे लोगों के लिए आयोजित भोजन मे शामिल हो गया। दीर्घ समय के पहले, परमेश्वर दूसरा दरवाजा (द्वार) खोला - दो - तृतियांश संसार मे कलीसिया के लिए।

हमारी यात्रा

१९८१ में मैंने हार्वेस्ट की स्थापना की। मूलतः, हार्वेस्ट ने दो-तिहाई संसार मे मसीही लोगों को उत्तर अमेरिका मे विश्वासियों के साथ साझी (साथी) बनाए। हमारे कलीसिया से कलीसिया के सम्बंध बहुत थे। हमने मसीहि संघटनाओं को भी साक्षी बनाया-उदाहरण के लिए, अमेरिकी पूर्वशाला के साथडोमिनीकन डे के आर सेन्टर; यु एस नर्सिंग स्कूल के साथ एक डोमिनिकन जलन - चिकित्सा केन्द्र; और अमेरिकी परिवारों के साथ हैतियन कृषि सरकारी। इन साझीदारी का आशय (इरादा) भौतिक दृष्टि से आधिक गरिब कलीसिया को मदत करना था अथवा समूह मसीह का प्रेम को उनके समाज मे वास्तविक से प्रदर्शन करना ऐसी कई अच्छी परियोजनाओं को चलाया (आरम्भ किया गया)। परन्तु कुछ कलीसिया की भागीदारी में हमने कलीसिया के अगुवों को उनके उत्तर - अमेरिकी भागीदारो सें साधनों के नियन्त्रण के लिए कार्यक्षम (सुयोग्य) बनते हुए अवलोकन किया था। दो-तिहाई संसार में एक कलीसिया भी पैसा नियन्त्रण के मामलों (विषयों) को अलग कर दिया और एक पुरोहित भ्रष्टाचार के निचे दब गया। हमने यह भी देखा की स्थानीय संघटना जो भागी बन गए थे परियोजनाओं को बाहरी आने जाने वाले साधनों के बगैर सँभाल नही पाए - और वह हमारा उद्देश्य (लक्षय) नही था!

१९८६ में हमारा हार्वेस्ट का मण्डल (समिति) और कर्मजारी, परमेश्वर से निर्देशन मांगने घुटनों पर प्रार्थना कि। परमेश्वर ने उत्तर दिया। हमारा केन्द्रबिन्दु स्थानीय कलीसिय बना-अन्य मसीही संघटनाएँ नही - और हम उन परियोजनाओं से हटने लगे जो समाज के बाह्य (बाहरी) साधनों से निधिबद्द थी। बजाय (सिवाये) इसके हमने स्थानीय कलीसिया के अगुवे और मण्डली को बायबिल सम्बन्धी आदेश को, वचन और कार्य (कर्म) मे विश्वास के विषय के प्रथिक्षण देने पर केन्द्रित लिया - स्थानीय साधनों के आरम्भ के साध।

हमारे प्रथम प्रयास (कोशिशे) पाँच लेटीन अमेरिकी और केरीबियन देशों मे थे। उसके परिणाम उत्तेजक थे! कलीसिया ने परमेश्वर का अवलोकन (प्रेक्षण) किया और उनकी कोशिशों (प्रयास) को बढ़ते हुए देखा। पूर्व के (पहले के) समाज मे दिलचस्पी न लेने वाले लोग, परमेश्वर के प्रेम के प्रदर्शन के द्वारा मसीह में विश्वास मे आये। कलीसिया बढ़ती (विकसित होती गयी) गयी, और ये कलीसिया ने आध्यात्मिक और भौतिक रूप से उनके समाज में संघट्टन करना आरम्भ किया। ध्येय के (उद्देश्य, लक्ष्य) के साथ युवा (YWAM वाय डब्लू ए एम) ने उनके समाज विकास के विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देने हमे निमंत्रित किया। १९९७ में हार्वेस्ट ने अनौपचारिक रुप से लोगों को खाने के

साथ सहयोग दिया। हमारी संघटनाओं के लिए कलीसिया और कलीसिया से सम्बन्धित उद्देश्यों को प्रशिक्षत करने चालीस से अधिक देशों में और दर्शन को विदित करके बायबिल-सम्बन्धी सर्वांगीण सेवा[४] की योजना (कल) के लिए सहयोग ने द्वार खोला। हमारे प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम एक स्थानीय समूह के द्वारा बीस से अधिक भाषाओं मे अनुवादित किया गया है। पंद्रह (पन्द्रह) देशों में, इस पहुँचमार्ग को बढ़ाने और प्रोत्साहित करने के लिए स्थानीक समूहों का संगठन किया गया। यह सहज (सरल) समझ ही कलीसिया और समाज को परिवर्तित कर रही है। परमेश्वर ने यह सब कर दिखाया और यह देखना विस्मयकारी है!

हमारी बढ़ती यात्रा (सफर)

परमेश्वर का इरादा (आशय) उसकी कलीसिया के लिए कभी बदलता नही, परन्तु मेरी समझ बदलती है जैसे मैं उस मार्ग (रास्ते) पर चलना जारी रखता हूँ जहाँ परमेश्वर ने मुझे रखा था। भूखे लोगों के लिए खाने मे हमारा सहयोग न केवल हमारे प्रशिक्षण सुअवसरों की ही नही परन्तु हमारे विचारों की भी वृद्दित (परिवर्द्धित) किया! हम यह देखने आए की कलीसिया ने केवल उसकी स्थानीय समाज को ही संघट्टीत नही करना परन्तु उनके जातियों[५] को भी चेले बनाना होगा। और हम देखने आए है की बायबिल-सम्बन्धी विश्वदर्शन अनिवार्य है यदि हम हमारे जातियों को चेले बनायें और हमारे समाज की सेवा करेंगे यदि यीशु महापौर होते। एक विश्वदर्शन, केवल (सिर्फ) परिसरों का एक संचयन (संग्रह) है जिससे लोग अपनी दुनिया को देखे और वह कैसे कार्य (काम) करता है वह भी देखे। एक बायबिल सम्बन्धी विश्वदर्शन हमें बताता है की हम एक टूटी हुई जाति (वंश) है। परमेश्वर के हस्तक्षेप के बगैर, हम आशाहीन है - परन्तु परमेश्वर के सुसमाचार के साथ हमारे टुटेपण को स्वस्थ (चंगा) करने के लिए एक आशा है! यही विश्वदर्शन को हम अंगीकार करते है (ग्रहण करते है)।

... अभी, हम महापौर से मिलते है!

---

४. बायबिल-सम्बन्धी सर्वांगिण सेवा: जो सेवा सम्पूर्ण व्यक्तियों के लिए और सम्पूर्ण निर्मिती के लिए परमेश्वर की चिन्ताओं को (सम्बन्धों को) प्रति बिम्बित करती है, जैसे धर्मग्रन्थ में व्यक्त (प्रदर्शित) किया गया।

५. जब से परमेश्वर ने दोनो संघटनाओं को Nations Alliance (DNA) के आधारित भागीदार (साझीदार) बनाने की अगुआई की है।

यदि (अगर) यीशु महापौर होते

परमेश्वर की कार्यसूची के दर्शन को पकड़ना

२

''*यदि यीशु महापौर होते तो तुम्हारा समाज कैसे बदलना?*''[१] मैं अक्सर संसार के चारों ओर हमारे सम्मेलनों मे पाद्रीयों को और कलीसिया के अगुवों को पूछता हूँ। उनके जवाब उन्ही को दर्शन को पकडने मे मदद करते है, उनके समाज में उनकी कलीसिया को वचनबद्ध होने मे।

बायबिल स्पष्टतया कहती है: ''*जहाँ दर्शन नही है वहाँ लोग नष्ट हो जाते है।*''[२] यदि जवानों मे उनके भविष्य के लिए दर्शन का अभाव है, उन्हे समय किस तरह से व्यतित करना है या जानकारी (मालूम) नही है। उनकी दिशा के विषय में वे विश्वस्त नही है, और वे थोडा संम्पादित भी करते है। फिर भी, दर्शन के साथ जवान लोगों को उनके भविष्य के लिए समय का सदुपयोग करने और निर्णय लेने मे कोई भी समस्या नही है। उनके जीवन उनके बविष्य के लिए विशिष्ट दर्शन के आसपास सुव्यवसस्थित (संघटित) है। इसी तरह से कलीसिया बगौर दर्शन के बजाय अपनी प्रतिमा बनाए रके कुछ कमी अधिक करती है। उसे अपने ही समाज में परमेश्वर के राज्य के लिए संघट्टन (टक्कर) बनाने में अवसर की कमी है। परन्तु, दर्शन के साथ जो कलीसिया है उसे ऐहिक और अनन्त सार्थकता के लिए सुअवस (मौका) है। हमें केवल कोई दर्शन नही चाहिए - लेकिन परमेश्वर का दर्शन लोगों के लिए और उस संसार के लिए जिसे उसने (परमेश्वर ने) बनाया है और जिस से वह प्रेम रखते है।

हमारा प्रश्न (सवाल) उठाते हुए, हम यह कल्पना नही कर रहे है की यीशु सामाजिक नेता (अगुवा) समान अक्षरशः मानवी शरीर से लौट आयेंगे। बजाय इसके, हम यह कल्पना कर रहे है हमारे समाज के लिए यदि यीशु का चरित्र (स्वभाव), नैतिक मूल्ये, कानून और उसकी शिक्षा प्रबंध-आधार होता तो क्या हो जाता। यीशु के महापौर होना यह विचार हमें केवल सोचने में मदद करता है की कैसा होगा यदि उसकी इच्छा हमारे समाज और संस्था मे कार्यान्वित होगी। हम यह मानते है की उसने इस पृथ्वी पर राजनीतिक राज्य संस्थापित नाही किया!

हम तश्यतः (ठीक ठीक) नही जानते की यीशु महापौर होते हुए क्या करते, परन्तु हम धर्मशास्त्रों का अध्ययन कर सकते है और हमारे समाज के लिए उनकी क्या जाह है यह पवित्र आत्मा को प्रकट होने के लिए निवेदन करते है। परमेश्वर का वचन और चरित्र (स्वभाव) को जानना हमे अनिवार्य है - और उसकी आवाज को सुनना। जो बाते यीशु महापौर होते हुए करेंगे वे समाज के लिए पिता की इच्छा को परावर्तित करेगी। यीशु ने हमेशा अपने पिता[३] की इच्छा के कार्यान्वित किया। यीशु ने हमें अपने पिता को प्रार्थना सिखायाः ''*तेरा राज्य आए; तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी*

---

१ महापौरः स्थानीक समाज मे एक मुख्य (प्रधान) नेता (अगुवा)। (जैसे आप इसे पढ़ते है, आपके समाज में मुख्य नेता को इस शब्द को कृपया प्रतिस्थापित करें। आपका समाज कैसे होगा यदि यीशु उस भूमिका में होते?)

२ नीतिवचन २९:१८ (KJV)

३ यूहन्ना १५:१०; युहन्ना ५:१९

पर भी हो।''[४] परमेश्वर चाहते है की उसकी इच्छा पृथ्वी पर पूरी हो जाए - अभी - जैसी स्वर्ग में पूरी होती है। वह यह चाहता है क्यों कि वह हमसे प्रेम रखता है और इस संसार से भी जिसे उसने निर्माण (बनाया है) किया है। वह हमारे लिए च्छे से अच्छा चाहता है। जैसे ही हम सिखेंगे, वह स्वयं सनसे वापस मेल मिलाप कराना चाहता है।

कल्पना करे, यदि परमेश्वर की इच्छा स्वर्ग जैसी इस पृथ्वी पर पूरी होती है तो क्या होगा। और एक तरीका यह सोचने का यह है की हमें स्वयं को पूछना है: *''यदि अगले सोमवार ९ बजे से आरंभ करते हुए हमारे समाज के सभी जैसे परमेश्वर के विचार के अनुसार रहते है जैसे वो चाहता है, तो क्या होगा?''*

- व्यक्तिगत रितीसे, यदि हम हमारे सम्बन्धों के लिए परमेश्वर के निश्चयों को पूरी तरह से मानते है, हमारे शरीरों की (देह) परवाह (देखभाल) करते है और परमेश्वर के साथ हमारा चलना है तो क्या होगा?
- हमारे परिवारों में सभी सभासद पूरी तरह से एक दुसरे के प्रति उनके सम्बन्धों मे परमेश्वर के निश्चय को मानते है तो हमारे परिवारों मे क्या होगा?
- यदि सभी नेतागण (अगुवे) और सभासद एक दुसरे से सच्चा प्रेम रखते एक दुसरे की सेवा करते जो लाचार लोगों के लिए समर्थन करते और एकता के साथ रहते तो हमारी कलीसिया और हमारे समाज की अन्य कलीसिया में क्या होगा?
- यदि हमारे अगुवे ईमानदारी और सम्पूर्णता से एक सामान्य लाभ के लिए एकत्र होकर काम करते है तो हमारे समाज में क्या होगा?
- यदि हमारे व्यावहारिक समाज मे बेईमानी, कपट अथवा भ्रष्टाचार कभी भी ना होता तो क्या होगा?
- यदि बच्चे अपने मातापिता का आदर करते और उनसे सिखते तो क्या होगा?
- यदि हमारे देश में भ्रष्टाचार ना होता तो क्या होगा - परन्तु (लेकिन) वास्तविक इसाफ (न्याय)?

एक समय कई साल पहले, मैं होन्डरास के एक गंदी बस्ती में पाद्रीयों के संग प्रार्थना और बात कर रहा था। अचानक, परमेश्वर ने उनूके साथ बाँटने के लिए मुझे एक कहानी दी। मेरे समाप्ति के बाद, हमने एक पूर्णतया परिवर्तीत संस्कृति के लिए परमेश्वर के दर्शन को खोज लिया। वह एक यात्रा थी जो मैं कभी नही भूलूंगा । मेरे साथ फिर आईए और सुनिए,''जुआन का दृष्टान्त।''

जुआन का दृष्टान्त

जुआन नें परमेश्वर की बुलाहट को महसूस लिया, शीघ्र बढ़नेवाले उसके शहर के एक बहिष्कृत क्षेत्र मे आगे बढ़े और एक कलीसिया की शुरुआत (का आरंभ) करें। वास्तव में, काम से वह हरबार बस मे सवारी करता था, यह बस लास पलास के आबादकार समाज से होकर गुजरती थी। जो लोग

[४] मत्ती ६:१०

वहां रहते थे उनके प्रति जुआन को अनूठा (अनोखा) आकर्षण महसूस करता था। उसके पास कुछ आधिक अभ्यास का अनुभव नही है - केवल कुछ बाइबिल स्कूल के अतिरिक्त कक्षाएँ। उसके पास जो था वह थाएक आवेश यह देखने की लोगों मे यीशु को जानना चाहिए।

जुआन ने अपनी पत्नी के साथ इसपर विचार-विमर्श किया, और उन्होंने लास पलास की ओर अपनी दो छोटी बेडियों के साथ जाने का (आगे बढने का) निर्णय लिया। उन्होंने एक छोटा कमरा लकडी से बनी एक झोपडी (कुटीर) किराये से लिया। लास पलास में पानी, बिजली, शाला और चिकित्सालय की भी कतई व्यवस्था नही थी। रास्तों पर गंदगी थी। लोग गरीब थे। वे ऐसी झोपडीयों में रहते थे जो डामर लगे काजग, टिन, पुठ्ठे, इस्तेमाल किये हुए तख्ते से बने हो, कुछ भी आश्रय (पनाह) के लिए दृढते थे। वह बहुत ही कठिन (दुष्कर) जीविका थी, लेकिन, जुआन और उसकी पत्नी को विश्वास था की परमेश्वर ने उन्हें सेवा करते और रहने बुलाया है।

दिन के समय मे जुआन काम किया करता था, लेकिन शाम का समय वह अपने पडोसियों से मिलने और बायबिल अध्ययन के लिए अपने घर मे उन्हे निमंत्रित करने में बिताया करता था। एक पाद्री होने के नाते वह अपने सप्ताहान्त को समर्पित करता था। कुछ महिनों के भीतर ही, महिला और बच्चों का एक छोटा समूह हर (प्रत्येक) रविवार को जुआन के एक कमरे वाले घर एकत्रित होता था। कुछ और अधिक महिनों में, वे एक किराये का कमरा लेने योग्य हो गये जिसे सभा का स्थान कहा गया। जुआन की मण्डली मे करिब करीब बीस महिलाएँ और बहुत से बच्चे थे, लेकिन उनमे पुकष नही थी। समाज के पुकष जुआन को पसंद करते थे, लेगिन यही सोचते थे की धर्म महिलाओं और बच्चों के ही लिए कुछ और है।

जुआन एक ईमानदार और स्नेही (प्रेममय) पाद्री (धर्मगुरू) था। वह रोज सुबह प्रातः उठकर उसके लोगों के लिए प्रार्थना किया करता था और बाईबिल अध्ययन करता था। पहिले वर्ष के पश्चात, वहां अच्छी संगती हो गई लेकिन कुछ ज्यादा विकास (वृद्धि) नही हुआ। जुआन और उसकी पत्नी ने अनुभव किया की जीवन जीने की दशा (स्थिती) उन्हें शारीरिक दृष्टी से कमजोर बना रही है। उसकी छोटी बच्चियों अक्सर बिमार रहती थी। उनकी योग्य चिकित्सा के लिए वह पर्याप्त पैसेकी कमाई नही कर सकता था। जुआन निराश हो गया।

एक प्रातः काल करीब करीब सुबह के चार बजे, जुआन शान्तिपूर्वक उठा। हमेशा (रोज) की तरह उसकी पत्नी और बच्चियाँ जाग ना जाए इसके लिए वह सतर्क था। उसने अपने कमरे को एक प्लास्टिक परदा लटकाकर (टांग) विभाजित किया था। रात में, वह परदा सोनेवाले क्षेत्र को बैठकवाले क्षेत्र से अलग कर देता था, जिसमे एक रेबल और चार कुर्सियाँ थी। जुआन टेबल के पास बैठ गया और एक पुराने दूध के कॅन के बच्ची को जलाया। वह पराफिन से भरा हुआ था और दिये के समान सेवा दे रहा था। उसने बायबिल खोली और पढ़ना आरंभ किया।

उस विशेष सुबह वह यशायाह ५८ पढ़ रहा था। उसने भूखे लोगों के पृति, नंगे लोगों के प्रति, बेगरों के प्रति और उत्पीडित लोगों के प्रति परमेश्वर की चिन्ता के विषय मे पढ़ा। जुआन का दिल खामोशी से रो पड़ाः ''परमेश्वर बायबिल में मै गरिबों के प्रति आपकी चिन्ता को देखता हूँ। वही चिन्ता मैं यहाँ लास पलास मे क्यों नही देख सकता?'' जुआन उन लोगों की आवश्यकताओं से गहराई

से प्रभावित हुआ और जैसे वह प्रार्थना कर रहा था उसकी कपोलों से अआँसू लुढ़क रहे थे। जिस तरह से वह उसका अनुभव और जो सने पढ़ा इस फरक (अन्तर)पर वह चिन्तन (मनन) कह रहा था तो दरवाजे पर एक हल्कीसी दस्तक हुई।

तुरन्त जुआन दरवाजे की तरफ चला, लेकिन उसने दरवाजा नही खोला। अन्धेरे में किसी अजनबी के लिए दरवाजा खोलना खतरे से खाली नही था। कौन है?'' जुआन फुसफुसाया।

दूसरी ओर से एक हल्कीसी आवाज आयी और कहा, ''जुणान, मैं यीशु हूँ।''

''आप वास्तव में कौन है?'' जुआन ने पूछा। फिर से आवाज ने कहा, ''मैं यीशु हूँ, जुआन।''

वह आवाज इतनी कोमल सुनाई दे रही थी की जुआन ने लगभग विश्वास कर लिया था की वह आवाज यीशु है। उसने धीरे से दरवाजे के ताले की चटखनी सरका (खिसका) दो और सावधानी पूर्वक उसे क दरज (दरार) के समान खोला। वह अन्धेरे में एक मानव का छायाचित्र आसानी से देख सकता था और वह छायाचित्र धमकानेवाली नही दिख रही थी। जुआन ने दरवाजा और थोडा विस्तृत खोला और कहा, ''अन्दर आओं।''

परन्तु यीशु ने कहा, ''नही, जुआन, आज सुबह मैंने तुम्हारी रोने की आवाज सुनी। मैं यहाँ आरा हूँ ताकि तुम मुझे वो चीजे दिखाओंगे जो तुम्हें यहाँ लास पलस मे तकलिफ देती है।''

जुआन ने शीघ्र और शान्तिपूर्वक बाहर कदम रखा, इस निमंत्रण के प्रति उसका आज्ञाकारी होने से वह थोडा आश्चर्यचकित हुआ। उनके पिछे उसने दरवाजा बन्द कर दिया। जुआन ने कहा ''ठिक है यीशु, लेकिन आप मेरे निकट ही रहिए। यह बारिश का मौसम है, और मैं जानता हूँ की चलते हुए कीचड को कैसे चूकना है।''

यीशु ने कहा, ''ठीक है जुआन, मैं तुम्हारे पीछे-पीछे आता हूँ।''

उन्होंने घुमावदार रस्ति से चलना आरंभ किया। जैसे वे चल रहे थे, जुआन ने यीशु से बातें की।'' यीशु, उस झोपडी में एक अकेली माँ रहती है। वह अपना शरीर बेचती है- उसके ही घर में और उसके बच्चों के सामने - खाने के लिए पैसों का बन्दोबस्त करने के लिए।'' वे थोडा और आगे बढ़े। ''और उस डामर लगे कागज की झोपडी में एक परिवार है। वह पुरुष (आदमी) शराबी है। वह घरमें अक्सर शराब पीकर आता है और अपनी पत्नी और बच्चों को मारता है। यह पूरा क्षेत्र उसे चीखते-चिल्लाते हुए सुन सकता है। यीशु, मैं वहाँ ठहर नही सकता जब मैं उनकी चीख सुनता हूँ, लेकिन मैं कुछ भी नही कर सकता।'' वे और आगे बढ़े और जुआन ने कहा, ''आप अपनी नाक वन्द करके रखे जैसे हम यहाँ से जाते है। यही जगह में लोग उनका कूडा-कचरा फेंकते है और शौचहर का इस्तेमाल करते है।'' कूडे-कचरें से चुहों की दौडने की आवाज उन्हे सुनाई दे रही थी। जुआन ने दुसरे झोपड़ी के ओर इशारा किया। बाकी झोपडीयों से यह अधिक बड़ी (विशाल) थी। नुआन ने कहा, ''यीशु, यह वो जगर है जहाँ लास पलास के सभापति (अध्यक्ष) रहते है। वह स्वयं को अधिक बलवान (शक्तिशाली) महसूस करता है। वह पैसे इकला करता है और लोगों से कहता है की इस पैसे से वह

यहाँ पानी और बिजली की व्यवस्था करेगा। लेकिन सभी जानते है की वह पैसा शराब और औरतों के लिए इस्तेमाल करता है। ''फिर जुआन एक कोने से मुडा, नीचे चल दिया, और फिर वापस जाने निकला जहां से उन्होंने आरंभ किया था। जुआन ने पहाडी के निचली भाग में एक छोटी-सी जोपडी की ओर इशारा किया। उसने कहाँ, ''यीशु लास यह पलास मे, मेरे लिए एक सबसे अधिक दुःख की बात है। जो महिला वहाँ रहती है वह उसके बच्चों के पिता ने उसे त्याग (छोड) दिया। जब भी बारिश होती है, पानी उसकी छोटी झोपड़ी मे बाढ़ ले समान घूस जाता है। वे सभी जमीन (फर्श) पर सोते है और उसे अपने बच्चों को पकडकर रहना पडता है ताकि वे उस पानी मे बह ना जाए।''

जुआन ने किसी को हलके से रोते हुए सूना। उसने चारो ओर देखा। वह यीशु के काँपते हुए कधों को देखकर बता सकता था की जो रो रहा है वह यहोवा परमेश्वर ही है। जुआन ने देखा की वही बात जिससे उसका दिल टूट गया उसी से यीशु का भी दिल टूटा! यीशु ने मुडकर टूटे हुए स्वर मे करा, ''जुआन लास पलास के प्रति (लिए) मेरे इरादे (अभिप्राय) मैं तुम्हे दिखाऊंगा।''

जुआन को समजा ही नही की यह कैसे हुआ, लेकिन अचानक ही वह और यीशु लास पलास की ओर नीचे देख रहे थे। जुआन की सम्पूर्ण (पूरा) समाज दिखाई दे रहा था। यीशु ने पर्याप्त घर के प्रबन्ध के विषय मे बातें करना आरंभ किया। अचानक, वहाँ की झोपडीयाँ छोटे और साफ सुथरे कुटियों मे बदल गयी। वे विलक्षण (विशिष्ट) नही थी लेकिन वे सुंन्दर (रमणीय) थी। यीशु ने नौकरी (काम) के विषय मे बातें की और जुआन ने लास पलास के लोगों को नौकरी (काम) पर जाते हुए देखा। जुआन ये बताया की यह नौकरी ज्यादा पैसे वाली नही है, लेकिन यह भी बताया की लास पलास के परिवारों को सँभालने के लिए उन्हे पर्याप्त वेतन दिया जाता है। यीशु ने पानी के विषय में कहा। अचानक, समाज में औचित्य से पानी के पम्प दिखाई दिये और सभी के लिए साफ स्वच्छ पानी उपलब्ध हुआ। यीशु ने शिक्षा और स्वास्थ्य के विषय में कहा। ठीक जुआन के ऑखो के सामने वहाँ शाला और चिकित्सालय दिखाई पड़ा। यीशु ने सुन्दरता के विषय में बात की। जुआन ने कूडे-कचरे को लूप्त (अदृश्य) होते देखा। उसी जगह में, खेत में बच्चों को पेड और फूलों के संग खेलते हुए देखा। यीशु ने स्वस्थ परिवारों के विषय मे बात की, जहाँ पुरूष और महिलाएँ और बच्चे एकदूसरे का आदर करते है और एकदूसरे से प्रेम रखते है। फिर यीशु ने आध्यात्मिक चंगाई के विषय मे कहा। जुआन ने अपनी छोटी कलीसिया में पूर्ण (सम्पूर्ण) परिवारों के देखा-जिसमे पुरुष भी सम्मिलित थे। वह उत्तेजित हुआ! उसने सोचा, ''इसी प्रकार का समाज मैं चाहता था!''

सहीं में, यीशु ने उसके विचारों को पढ़ा और कहां, ''जुआन, लास पलास के लिए मेरे यही इरादे है। मै चाहता हूँ लोगों को मेरी योजनाओं के विषय में बताओ और उनकी अगुवाई करना आरंभ करो।''

''लेकिन यीशु,'' जुआन ने विरेध किया, ''यह मैं नही कर सकता! मेरी छोटी मण्टली की महिलाएँ और बच्चे यह कैसे कर सकते है? हम तो केवल जीवित रहने के लिए संधर्ष कर रहे है!''

''जुआन मेरी सुनो। मैं चाहता हूँ की तुम मेरी योजनाओं के यहाँ लोगों के साथ बाँटो और फिर मैं चाहता हूँ की तुम तुम्हारी मण्डली को सूचित करे की अपने पडोसियों की सेवा करे। बिमारों की ..... । अकेली माताओं भेंट करें। उनके पडोसियों के साझेदार बने। वे रविवार को कलीसिया में

एक कप चावल, एक छोटा साबून, कुछ शक्कर अथवा नमक, कुछ सब्जियाँ और अतिरिक्त कपडे ला सकते है। उसे एक टोकरीयों मे इकठ्ठा करो और जिन्हे इनकी बहुत ज्यादा आवश्यकता है उनके पास ले जाओं। ऐसा उन्होंने हर (प्रत्येक) सप्ताह करना चाहिए। फिर तुम जाओ और शहर के अधिकारीयों के साथ सम्बन्धों को विकसित करो। लास पलास के लिए पानी और बिजली लाने की क्या आवश्यकता है उसकी खोज करो...''

जुआन ने कहा, ''यीशु, हमे यथार्थवादी बनने को जरूरत है। ये छोटी बातें कभी फरक नही कर सकती। मै...''

''जुआन, पृथ्वी किसने बनायी?'' (किसने बनाया)?

''आपने बनाय यहोवा परमेश्वर, लेकिन...''

''जुआन, लाल समुद्र को किसने दोभागा ताकि इस्त्राएल के लोग (बच्चे) उसके पार जा सके?''

''आपने किया परमेश्वर, लेकिन...''

''जुआन पांच हजारलोगों को पांच रोटी और दो मछलियों के साथ किसने खिलाया?''

''आपने किया परमेश्वर, लेकिन...''

''जुआन मै कल, आज और सदा के लिए एक समान हूँ। तुम तुम्हरी दि गई भूमिका करो और बाकी मैं करूंगा। जब तक नैं लौटू कुछ बातें पूर्ण हो पायेगी, लेकिन मैं चाहता हूँ की तुम इस प्रक्रिया का आरंभ करो। तुम और तुम्हारा छोटा झुंड मेरे राजदूत और प्रतिनिधी हो। जैसे तुम आज्ञा का पालन करोगे, मैं लास पलास को स्वस्थ करना आरंभ करूंगा।''

यीशु जो कहा जुआन उस्पर विचार (सोचने) करने लगा। अचानक उसने मूर्गे की बाँग सुनी। उसने सुना उसकी पत्नी ने विभाजक परदे के पीछे हिलना आरंभ (गुरू) किया। वह मेज के पास बैठा हुआ था। तेल की बत्ती बुझ गयी थी। बाहर मे उजियाला होने लगा था।

जुआन ने चारों ओर यीशु का खोजा, लेकिन उसे कोई भी, नही दिखायी दिया। ''क्या हुआ?'' जुआन ने सोचा। ''क्या मुझे दर्शन मिला? क्या मुझे दर्शन मिला? क्या वह एक सपना था?'' जुआन नही जानता। लेकिन वो जानता है की यीशु ने उससे मुलाकात की - और लास पलास की कलीसिया और समाज के लिए उसके पास एक नया दर्शन है।

मेरा यही विश्वास है की जुआन की और दुसरों की समाज के लिए यीशु यही चाहता है। वैसे भी, मैंने इस दृष्टान्त को कई देशों के स्थानिक कलीसिया के अगुवों और अन्य लोगों को दर्शन और आशा को प्रेरित (बढ़ावा देने) करने के लिए बाँट।

इस मुद्देतक, मैं सवाल (प्रश्न) पूछे और दृष्टान्त को बताया। आशान्वित होकर आप पहले ही इस प्रश्न पर विचार करना आरंभ करेंगे: ''यदि यीशु महापौर होते तो समाज कैसे बदलता (परिवर्तित होता)?'' मैं अभी मेरे विचारों को आपको बताना चाहता हूँ। यदि यीशु महापौर होते, तो मेरी कल्पना है की वे कई बातें (काम) करते:

- वे ऐसा जीवन जीत जो एक आदर्श है जो यह कहेगा की उसकी पिता की इच्छा पूरी होती।
- वे कलीसिया के लोगों को उनकी भूमिका जानने मे (समझने में) उसके (यीशु के उदाहरण को अनुसरण करने में, उसके पिता के आदेशों के अनुसार (मुताबिक) जीना (रहना) और समाज में जहां जहां वे जाते और जो कुछ वे करते उसके पिता की इच्छा के जानबूझकर समर्थन करने में (बढ़ावा देने में) उनकी (लोगों की) मदत करते।
- वे विश्वस्त होते की समाज उसके पिता की इच्छा को समाज के जीवन के प्रति सभी पहलूओं को जानता है - कारोबार, शिक्षा, स्वास्थ्य, पुलिस, घर का प्रबन्ध और हरएक (प्रत्येक) अन्य क्षेत्र।
- वे सहानुभूतिपूर्वक निम्न लिखित फायदों को (लाभों को) प्रस्तुत करते और लापरवाही के खतरे (धोखे) को - उनके पिता की योजना। वह प्रत्येक (हरएक) नागरिक को उस योजना को स्वीकार करने अथवा अस्विकार करने विकल्प देंगे।

पिता की इच्छा की प्राप्ति और उसे कार्यान्वित करना यह एक विशाल (महान) कार्य (काम) है! यीशु शारीरिक दृष्टी से हमारे महापौर नही है। उसने हमारे घर के दरवाजो को नही भपभपाचा , जैसे उसने जुआन के दरवाजे पर किया, और अलौकि करिती से हमे उसका दर्शन दिया है और उसकी करुणा (सपानुभूति) हमे दिखायी है। यह जानते हुए भी, मेरी एक सहकर्मी ने जो कठिन समय से जा रही थी यीशु मसीह के समाज के एक अधिकारी होने की कल्पना करते हुए मूलभूत प्रश्न को फिर से व्यक्त किया। उन्हों ने पूछा: ''यदि में महापौर होती और पवित्र आत्मा की सामर्थ से यीशु के इरादों को (आशायों को) कार्यान्वित करती, तो मेरा समाज किस के समान दिखता?''

यह एक बड़ा (महान) प्रश्न (सवाल) है और एक लायक (योग्य) विचार। तथापि, एक व्यक्ति के लिए यह काम बहुत अधिक विशाल (बड़ा) है! यदि वहाँपर केवल संस्था (संघटना) होती - लोगों का समूह होता - वह इसके लिए सुसज्जित रहती... एक समूहकाजो हमारे समाजों को सभी खण्डों में अस्तित्व में रहता... एक समूह जिसकी अच्छी नैतिक नियमावलि होती... एक संस्था (संघटना) जो परमेश्वर के निर्मिती के सभी अवस्था और पहलूओं को प्रस्तुत करती - व्यक्तिगत, परिवार, अडोसपडोसी, स्थानीक कारोबार स्थानीक शासन (सरकार), शिक्षा, स्वास्थ्य की देखभाल. और भौतिक परिवेश।

वास्तव में (असल में) एक ऐसा समूह है - उसे कलीसिया कहते है। उनके विविध सदस्तयों के द्वारा, प्रत्येक खण्ट में परमेश्वर की इच्छा को समर्थक और आगे बढ़ने के लिए लाजवाब तरीकेसे (अद्वितीय रीती से) स्थापित है।

हम यह पूछते हुए इस अध्याय को खोलते है की यीशु क्या करते यदि वे महापौर होते। यह प्रश्न अन्य रिती से (तरीक से) पूछने की शायद हमें आवश्यकता हो। ''यीशु क्या करते यदि वे उनके लोगों के द्वारा, कलीसिया के द्वारा, सेवा करते?'' परमेश्वर ने पहले ही कलीसिया को उसकी इच्छा को समाज के खण्डों में संचालित करने के लिए अधिकृत और सुसज्जित किया है जहा उसके लोग रहते है और काम करते है। हम, कलीसिया, परमेश्वर की इच्छा को पूरा करेंगे, जैसे स्वर्ग में वैसी प्रथ्वी पर भी। जैसे हम यह करते है, मेरा विशावस है की हमारी कोशिशे इतिहास के ईसाई कलीसिया के गतिविधियों के सदृश्य रहेगी (साम्य रखेगी)। आरंभिक कलीसिया के समय से परमेश्वर के लोगोंने अन्य लोगों की चिन्ता (परवाह, देखभाल) की और उनके पडोस के समाज को प्रभावित किया की जैसे यीशु ही महापौर थे।

भाग दूसरा

कलीसिया के द्वारा सांस्कृतिक परिवर्तन

बायबिल सम्बन्धी और ऐतिहासिक मूल

. . . ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान उन प्रधानों और अधिकारियों पर, जो स्वर्गीय स्थानों में है प्रगट किया जाए।

—इफिसियो ३:१०
(आदी महत्वपूर्ण)

दूसरे भाग का आरंभ

कलीसिया के द्वारा सांस्कृतिक परिवर्तन

बायबिल सम्बन्धी और ऐदिहासिक मूल

''*यदि यीशू महापौर होते तो क्या करते?*'' इस मध्य (प्रमुख) प्रश्न (सवाल) को हम इस पुस्तक मे पूछते है, चाहे हम हमारे पडोस में दयालुता का एक छोटे कार्य (कर्म) का देख रहे है- अथवा ब्रिटिश साम्राज्य मे चापलूसी (खुशामदी) के समापन को।

उसी तरह हम अन्य प्रश्नों को भी जाँचते (परखते) है। कलीसिया के लिए परमेश्वर की भूमिका क्या है? उस समाज को बनाने में कलीसिया का क्या योगदान है, जहाँ परमेश्वर उसे रखता है? मुख्यतः क्यायह है की भटके हुए लोगों को मसीह के पास (निकट) लाया जाए? क्या आध्यात्मिक शिष्यता में विश्वसियों को सूचित करना और प्रोत्साहित करना है? क्या समाज की असुरक्षिता के लिए समर्थन करना है दुखी मानवजाति की सेवा करना, और सामाजिक अन्यायों को सम्बधित करना जिसेसे परमेश्वर घुणा करते है? अथवा क्या कलीसिया के पास एक विस्तृत उद्देश्य (लक्ष्य) है जो आध्यात्मिक मुक्ति से (छुटकारे से) आरंभ होता है लेकिन उसकी संस्कृति को परिवर्तीत करना जारी रखता है?

अगले कई पाठों में संसार में बदलते प्रतिनिधी के समान हमारे बायबिल सम्बन्धी और ऐतिहासिक जडों को (मूलों को) जाचते (परखते) है। हम धर्मग्रन्थों के द्वारा तत्वों को खोजते है और पूरे इतिहास उनका अवलोकन (निरीक्षण) करते है। बाकी पुस्तक को वे नींव (बुनियाद) की समान सहारा (बढ़ावा) देते है (स्थानीक कलीसिया को उनके कार्य (काम) के लिए सुसज्जित करते हुए।

संसार मे, उसके आशयों को (शरादों को) प्रस्तुत करनेके लिए, यीशु मसीह की कलीसिया, परमेश्वर का प्रमुख प्रतिनिधी है। इसपर विश्वास करते हुए हम समाज में ओर संस्कृति मे उच्च सदृश्य परिवर्तन की अपेक्षा करते है, जहाँ कलीसिया का अस्तित्व है। निशिचतरूप से, कलीसिया का इतिहास उसकी संस्कृति को सुगठिक्त करता है (रूप देता है)! हालाँकि (भले ही) आज के लग कहानी है। ईसाई कलीसिया ने भूमण्डल के चारों ओर तेज (शीघ्र)विकास को अनुभव किया है, लेकिन अक्सर हमेशा यह गुणन (गुणा) समाज पर पालनीय (दृष्टिगोचर) संघट्टन (टक्कर) नही बना पाता है।

संस्कृतियों में भी जहां आधी से ज्यादा जनसंख्या ईसाई होने का दावा करती है, कारोबार (व्यवसाय) और सरकार प्रदुष्ट है, लोग उनके निर्माण करने वाले के प्रति और एक दुसरे के प्रति बगौर आदर के साथ रहते है, और राष्ट्र और जाति एक दूसरे के साथ लडाई करते है। दुःख की बात यह है की, हमारि देश (राष्ट्र) मे जाति संहार भी हो रहे है जहाँ अधिकतर जनसंख्य ईसाई होने का दावा करती है।

कलीसिया ने उसके चारो ओर के संसार को परिवर्तित क्यों नही किया? व्यापक (सार्वत्रिक, विश्व के) स्तर पर कदाचित मुख्य (प्रधान) अभाव (कमी) यह है की परमेश्वर के इरादों की उसकी कलीसिया के प्रति बायबिल सम्बन्धी समझ। कृपया ध्यान दे - उसकी बायबिल सम्बन्धी भूमिका के बगैर, यीशु मसीह की कलीसिया सम्पूर्ण (पूरी) ही हो सकती अथवा परमेश्वर के इरादों के लिए आवेश (अनुराग) होना चाहिए।

इस पिढ़ी मे बहुत (कई) कलीसिया कह सकती है की उनका मुख्य काम मसीह के अधिकारों को (आयोग) पूरा करना - की ''*इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ।*''[१] अक्सर, ये कलीसिया हालाँकि - दर्मविज्ञान मे चाहे उदारता ..... अथवा रूढ़िवादी हो - महान अधिकार (आयोग) की पूर्णता को वे नही पकड पाए है।

प्रोटेस्टंट कलीसिया की रुढ़िवादी शाखा जानती है की महान अधिकार सुसमाचार और कलीसिया के रोपण से सम्बन्धित हैं - लेकिन कभी-कभार पहचानती है की वह हमे शिष्य राष्ट्रों को यीशु राजा के प्रभुत्व के निचे रहने की आज्ञा देती है। (''रूढ़िवादी'' का उल्लेख सुसमाचारी, चारिशमॅाटीक पेन्टिकोस्टल व अन्य विश्वासी परम्परा है की अन्य सिध्दान्तो में विश्वास है की पवित्र शास्त्र यह परमेश्वर का प्रकटित वचन है और व्यक्तिगत आध्यात्मिक भुक्ति (छुटकारा) अत्यावश्यक है।)

कलीसिया की उदारतावादी शाखा जानती है की कलीसिया को मजबूत समाजिक संघट्टन (टक्कर) होना चाहिए लेकिन व्यक्तिगत आध्यात्मिक पुनरुज्जीवन (पुनरुद्धार) का महत्व नीचे को ओर उतरता है। (''उदारतावादी'' कलीसिया में बहुत कई मुख्य समुदाय और अन्य कलीसिया और संघटनायें सम्मिलित है जो धर्मग्रन्थ की ओर निर्देश देती है और उसका अनुवाद रूढ़िवादी कलीसिया से कम अधिकारयुक्त रिती से है। एक मूल सिद्धान्त यह है की कलीसयिा को बोलने की और समाज के असुरक्षित सदस्यों सेवा करने की एक महान (बडी) जिम्मेवारी है।)

न तो कलीसिया की कोई शाखा ने महान अधिकार (आयोग) की चौडाी को पूरी रिती से पकडे है। धर्मग्रन्थ स्पष्ट कहता है की कलीसिया के लिए परमेश्वर का उद्देश्य सुसमाचार फैलाने से भी अधिक चौडा है। वह कलीसिया के रोपण से भी अधिक चौडा है। वह आध्यात्मिक शिष्यता से भी अधिक गहरा है। वह समामाजिक अन्यायों को सम्बोधिक करने से भी अधिक बडा (विशाल) है। वह भूखों को भोजन खिलाने से भी अधिक बड़ा है।

परमेश्वर की युद्धनीति आनन्द के सुसमाचार दोनों के लिए है, घोषणा (उदघोषणा) - और प्रदर्शन। इस पुस्तक में मैं मुख्यतः प्रदर्शन के विषय में लिखता हूँ, लेकिन सुसमाचार को बताते हूए दोनों की भूल भूमिका है। सन्त फ्रान्सीस ने अच्छा ही कहा है: ''सभी समय सुसमाचार का प्रचार करो और जब जरूरत (आवश्यकता) है शब्दों का स्तिमाल करो।''[२] अधिकाधिक कलीसिया और कलीसिया के अगुवों को यह समझ में आ रहा है। जब सभी परम्परा के लोग जो धर्मग्रन्थ को सत्तावादी मानते है विचारों को सुनते है वे परमेश्वर के वचन पर स्पष्टता परावर्तित है वे उसे स्विकारते है और उसे अमल मे लाते है। वे असमंजस में है और सिखने के लिए रूके है की लोग और कलीसिया कैसे होनी चाहिए जैसे परमेश्वर का अभिप्राय है। मुझे बड़ी आशा है। मसीह उनके कलीसिया के शीर्ष भाग में रहना जारी रहते है।

---

[१] मत्ती २८:१९-२० अ

[२] असीसी के संत फ्रान्सीस। अवतरण संदर्भ.com. संत फ्रान्सीस ११८२ से १२२६ तक रहे।

दो भागों के लिए आधार-वाक्य

अधार वाक्य यह एक आध्यात्मिक तत्व है, हमारे विवेचन (तर्क) के लिए आधार। हम किस तरह से सोचते है और कार्य करते है, उसे आधार वाक्य आकार देते है। इस मामलें मे संसार परमेश्वर, धर्मग्रन्थ और कलीसिया के विषय में हम क्या सोचते है इसे वे आकार देते है और कलीसिया को उनके कार्य को पूरा करने, में मदत करने के लिए बाध्य करते है।

आधारवाक्य १: संसार गंभीररूप से टूटा हुआ है। मानवबुद्धि और भौतिक साधन उन्हे स्वस्थ नही कर सकते।

आधारवाक्य २: राष्ट्र और समाज के लिए स्वस्थता आती है जैसे परमेश्वर के लोग उसके आज्ञाकारिता में प्रतिक्रिया दिखाते है और जैसे वह सुचित करता है वैसे है। नतीजा यह है, वह उनके इतिहास में अलौकिक रिती से हस्तक्षेप करता है।

आधार-वाक्य ३: पवित्र शास्त्र, हमारे स्वस्थता के लिए परमेश्वर का प्रकटन है।

आधार-वाक्य ४: कलीसिया परमेश्वर का प्रमुख (प्रधान) अस्तित्व है, उसके स्वस्थता का उद्देश्य पूरा करने के लिए जो सब विनाश (वतन) में टूट चुका था।[३]

शायद ये विचार आपको प्रेरित करें और आगे बढ़ो जैसे आप और आपकी कलीसिया परमेश्वर के समिति की कार्यसूची के दर्शन को पकड कर उसे कार्यान्वित कर सके, जैसे यदि यीशु महापौर होते।

मूल परिभाषाएँ

संस्कृति: जीवन के सभी रास्ते जो परिभाषा करती है की हम होने के नाते और समाज होने के लाते कौन है। संस्कृति मे आचरण (व्यवहार), नमूने विश्वास विचार (सोच) संस्थाएँ, मूल्ये, आदते, परम्पराएँ, पद्धति और विशेषताएँ साम्मिलित है जो आनेवाले पिढ़ि को हम आगे में बढ़ा सकते हैं।

समाज: लोगों का भिन्न (अलग, पृथक) समूह जिसे उनके संस्थाएँ, सम्बन्धों और संस्कृतियों से पहचाना गया है।

संस्कृति: यह परिभाषा करती है समाज कैसे सोचता है और कैसे क्रियाशील होता है। यदि हमें समाज को परिवर्तित करना है, हम उनके संस्कृति को परिवर्तित करके कर सकते है।

परिवर्तन: स्वभाव और चरित्र में वास्तविक (भौतिक) बदल। बायबिल सम्बन्धी परिवर्तन लोगों को परमेश्वर के इरादों (आशय) के साथ सिधाई लाते है।

[३] विनाश (पतन): परमेश्वर के विरोध मे मनुष्य का विद्रोह और इस विद्रोह के परिणाम (उत्पत्ति ३)।

सांस्कृतिक परिवर्तन
और इतिहास की कलीसिया

३

समाज में यह केवल कलीसिया के भूमिका का इतिहास नही है। यह उसकी-कहानी-परमेश्वर के काय की कहानी उसके ही संसार में, स्वयं के प्रति ही प्रायश्चित करनेवाली।

पूरे इतिहास में, कलीसिया को अक्सर सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन समझा है, उसके कार्य का एक अत्यावश्यक हिस्से (भाग) समान। शायद आपके चारों ओर की कलीसिया इसपर कभी आगे विश्वास नही करेगी। शायद आप उनसे सहमत हो। यदि ऐसा है, आपको चुनौति दी जाएगी जैसे आप देखेंगे की किस तरह से कई पिढ़ियों की कलीसिया ने उनके चारों ओर के संसार को डक्कर दि है। धर्मग्रन्थ विवरण देता है की यीशु के अच्छी (भली) बाते केवल सिखायी ही नही लेकिन वह अच्छी बातें करता भी गया। यीशु का इरादा (आशय) था की सुसमाचार सुनाना और सामाजिक चिन्ता का एक दुसरे से आन्तरिक रिती से सम्बन्ध रहे, और कलीसिया के इतिहास के कई काल (समय) ने उसके इरादों को परावर्तित किया है।

उसकी-कहानी की यह समझ हमें केवल सूचित ही वही करती, परन्तु आज की कलीसिया के लिए हमें अन्तः शक्ति समझने मे मदत करती है। यह उन लोगों की कहानियाँ है जो परमेश्वर और पडोसियों से प्रम रखते थे और उनके संसार मे (जग में) वे नमक और ज्योति थे। यह हमारी पैतूक-सम्पत्ति है। विश्वास में ये हमारे पूर्वधारक। यह *हमारी कलीसिया है!*[१]

प्रारम्भिक (आद्य) कलीसिया

प्रारम्भिक (आद्य) कलीसिया में यीशु के अनुयायी मसीह के जल्दी से पुनः आगमन की ओर देख रहे थे। विश्वास, जोश (उत्साह) और प्रेम से भरे हुए, उन्हों ने उत्सुकतापूर्वक उनके अधिकार एक दुसरे के साथ बाँटे। उनकी उदारता ने एक गेहरा संघट्टन बनाया। ना केवल अविश्वासियों ने इसका अवलोकन किया और लाभ उठाया, परन्तु सुसमाचार के फैलाव की स्थापना हुई - इससे और विनम्रता विश्वासियों के यज्ञीय (यज्ञ) दान से और सेवा से निधिबद्द हुई। दुसरी ओर तिसरी संदीगों मे कलीसिया का फैलाव उत्तर आफ्रिका, अरेबिया और भारत मे हुआ - संम्पूर्ण रोमी संसार तक पहुचे,[१] पाँचवी सदी के अन्त तक।

आराम्भिक कलीसिया का हजारों विश्वासियों ने अत्याचार और प्राणदण्ड भोगने का भी चरित्र-चित्रण किया गया था। फिर भी, कलीसिया का विकास होता गया।

---

[१] मैं भावुक हूँ की जो मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ वह पश्चिमी एतिहासिक अनुबोधक है। फिर भी, वह अनुबोधक आप इस संसार मे प्रोटेस्टन्ट कलीसिया की पार्श्वभूमि समझने के लिए आवश्यक है। मैं इससे भी अवगत हूँ की मेरा प्रोटेस्टन्ट कलीसियापर केन्द्र परमेश्वर के उसके संसार के कार्य पर रहने की सम्पूर्ण (पूरी) कहानी नही बताता।

पुरातन (प्राचिन) रोम को कलीसिया ने किस तरह से बदल दिया

युशु ने उसके सन्देश को संसार तक पहूँचाने के लिए मुठ्ठीभर शिष्यों को प्रभावित (अवेशित) किया। उन्हों ने किया - और परमेश्वर ने वह सन्देश का उपयोग रोमी साम्राज्य बदलने मे किया जो बहुत छोटे, उत्पीड़ित अखीकृत (बहिष्कृत), निन्दनिय १२० लोगों के[२] समूह के द्वारा ले जाया गया। देखा जाए, जो यह एक सबसे अधिक महान (विशाल बड़ा) सामाजिक परिवर्तन पश्चिमी संस्कृति मे बीते दो सहस्त्राब्दिक में[३] कहा गया!

यीशु ने शिष्यों की छोटी मण्ड़ली को यरुशलेम में रुकने की भी आज्ञा दी ताकि पवित्र आत्मा उन्हे पूर्ण करे, समार्थ .... सुसज्जित करे, प्रोत्साहित करे और उनकी हिम्मत बढ़ाए। उन्होंने किया-और कलीसिया का आरंभ हुआ। परमेश्वर स्वयं इन लोगों के द्वारा कार्य कर रहा था। यह एक महत्वपूर्ण कारण है की तभी (उस समय) और अभी (इस समय) कलीसिया संसार को प्रभावित करती है। फिर भी, मानवी तत्व की ओर देखना यह भी सहायक (लाभदायक) है - यह सिखने के लिए की इसाई लोगों ने विश्वास किया, विचार किया (सोचा) और कर विश्वाया की उनके चारो ओर के समाज को इतना प्रभावित किया। सामाजिक विज्ञानी ..... स्यर्क[४] ने सामाजिक परिवर्तन और प्रारंभिक कलीसिया के मध्य की (बीच में) कड़ी (सम्बन्ध) को परखा (जाँचा)। उन्हे यह पता लगा की यह आरम्भिक ..... के छोटे समूह ने रोमि संसार के लिए मानवता के नये दर्शन का पस्यिय दिया। आराम्भिक कलीसिया के सात विचार (धारणाएँ) और आदतों ने विशेषकर रोमी समाज को संघट्टित (टक्कर) किया और, आखिरकार इस संसार को भी। स्टार्क ने इस सात विचारों को और आदतों को खोज निकाला - मानवता के इस नये दर्शन को - काल (युग) के ऐतिहासिक आँकडे और दस्तावेज (कागजात) की ओर देखने हुए। यघपि, सभी बायबिल सम्बन्धी तत्व है:

१. मसीहि लोगों का एक परमेश्वर है जो उनसे प्रेम रखता है जो उससे प्रेम रखते है।

२. मसीही लोगों का परमेश्वर जो उससे प्रेम रखते है उनसे प्रेम रखने और सभी से प्रेम रखने का आदेश देता है।

३. ईसाई धर्म की संस्कृति गैर-ईसाई और श्रेणी से नग्नीकृत है।

४. मसीही लोगों का परमेश्वर दयालू परमेश्वर है जिसे दया की आवश्यकता है।

५. ईसाई धर्म में पति को अपने पत्नि से आनेसमान प्रेम रखना है।

६. ईसाई लोगों ने, गर्भपात और शिशुहत्या यह रोमी आदतों को अस्वीकृत किया।

७. ईसाई लोग दुसरों से प्रेम रखते है - व्यक्तिगत जोखिय (खतरा) उठाकर भी।

---

[२] प्रेरितों के काम १:११५

[३] स्टार्क, ईसाईदर्म का उदय, १६१-१६२.

[४] रोडनी स्टार्क अन्तरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त सामाजिक विज्ञानी है जो धामिक गति विधियों के ऐतिहासिक आँकडों के लिए सामाजिक विज्ञान के तरीकों को लागु करते हुए सामाजिक आशयों का अध्ययन करते है।

ईसाईधर्म ने मानवता के सम्मोहक नये दर्शन का प्रबन्ध किया जिसे बहुत लोगों ने विश्वास[५] किया। मानवता का यह नया दर्शन दर्शनीय (पालनीय) था कलीसिया के आयोजित कार्यक्रमों में नही, बल्कि उनके शिष्यों के जीवनों में।

ईसाईधर्म का प्रभाव उसकी संख्या से अधिक बड़ा होने का संकेत है। इ.स. ४० तक, शायद केवल १००० ईसाई लोग थे। ६० दर्शलक्ष साम्राज्य की अनुमानित जनसंख्य की ००१७. इ.स ३०० तक, सटार्क प्रक्षिप्त यह समूह संभाव्य ६.३ दशलक्ष तक विकसित हुअ - जनसंख्या ६ के केवल ९०.५ प्रतिशत।[६] छोटि प्रतिशत के बावजूद भी, वहा एक सार्थक प्रभाव था की सम्राट कॉन्सटनटाईन ने ईसाईधर्म को अधिकृत घोषित किया और ३१२ तक कलीसिया को अत्याचार और सामाजिक अवमान (अपमान) से मुक्ति दी वो और उसके उत्तराधिकारी यों ने कूट नीतियों को चोडा करना जारी रखा जो कलीसिया को अनुभोदन (समर्थन) करते है। ३८१ तक, इसाईधर्म को राज्य धर्म घोषित किया गया। पगान रोम अब तक औपचारिक रूप से ''ईसाई'' रोम हो गया था।

एक बदलती कलीसिया, बदलता समाज - मध्यम युग

आराम्भिक कलीसिया में, आध्यात्मिक परिवर्तन का नतीजा (परिणाम) प्रेम (उदारता, दयालुता) था। उत्तम (अच्छे) काम, मसीह में विश्वासी के जीवन में सामान्य और अभिप्रेत (ज्ञानकृत) फल थे। मध्यम युगों समान ज्ञान होनेवाले काल (युग में) मे, भले ही मसीही प्रेम के लिए प्रेरणा बदल रही थी। इस काल में सुसमाचार सुनाना और सामाजिक जिम्मेवारी केवल उस समय के संस्थानिक कलीसिया सन्दर्भ में ही ज्ञात (समझता) था, जिसने यह सिखाया की उपकार (कृपा) की ओर जानेवाल रास्ता कलीसिया के द्वारा था, जो पोप के द्वारा नेतृत्व किया हुआ था।

उद्धार के लिए खुबी को आर्जित करना तपश्चर्या और अच्छे कार्य एक मूल सिद्धान्त (शिक्षा) थी। मनुष्य के लिए कलीसिया और राज्य यह दोनो परमेश्वर के उद्देश्य का प्राप्त करने के लिए परमेश्वर के उपकरण (यन्त्र) के समान अवलोकित किए गये।

कलीसिया से सम्बन्धीत प्रेम ने बेरोजगार, अनाथ, विधवा, जखमी, बिमार मुसाफिर, घोर विपत्ति के शिकर और समाज के गरीबों को मदत की। गरिबों की चिन्ता करना (परवाह करना) सम्बन्ध का एक अनुकूल (सुसंग) विषय था, मध्यम युगोंके कलीसिया के सुप्रसिद्ध प्रतिमाओं में से सन्त थोमा, ... लोयोला, सन्त पेट्रिक और अस्सिसी[७] के सन्त फ्रान्सीस के समान।[७]

प्रायोगिक सेवा और विश्वास अन्य सम्बन्धों और देशों में (राष्ट्रों में) चौथे और आठवे सदी के मठ वासियों के द्वारा विस्तारित हुआ। द्विव्यक्ति आशिया से अरोबिया भारत, मध्य आशिया और चीन की ओर आगे बढ़े। रुढ़िवादी उत्तर की ओर बाल्कर राज्यों और रशिया की ओर चले गए। सेल्ट ने स्कॉटल इंगलंड और मध्य युरोप के लिए आर्लन्ड को छोडा। बेनेडिक्टाईन्स पश्चिमी कलीसिया में थे। जैसे उन्होनें सफर किया, उन्होने मठों की स्थापना की, जिनहे प्रतिदिन प्रार्थना और कार्य के लिए

---

[५] स्टार्क, २१४

[६] स्टार्क, ७

[७] रो, ''कलीसिया के इतिहास के संदर्श (परिदृश्य)'', शब्द और कर्म मे, २०।

स्थापित किये गए थे। संयोग से, मठवासियों का शारीरिक श्रम का अनुशासन आत्यन्तिक (उग्र) था ।सामान्यतः क्षम को केवल शुलामों के लायक ही माना जाता या ।[८]

रोमी साम्राज्य पाँचवी सदी में बर्बर (असश्य) की ओर गिर गया। सम्पूर्ण युरोप की पुस्तकालयों का विध्वंस किया गया और जलाया गया और युरोप हजारो प्रतिष्ठित (शास्त्रीय) ..... कलकृति खोने से धोके में (खतरेमे) था। पाँचवी सदी के आयरिश, मसीही धर्म और साक्षरता के लिए नयी इस्ललिपि के बाद (पस्वात) इस्तलियी युरोप से उद्धार किया (छुडा लिया) और उसकी हाथोंसे प्रतिलिपीयाँ बनाकर उसे सुरक्षित रखा। उन्हों ने मठों का निर्माण करना जारी रखा और लँटीन, ग्रीक, इब्री और काँप्टीक मे अधिक पुस्तके दुंढने के लिए जीवन-लक्ष्यों पर जाना भी जाती रखा। जब युरोप के पुस्तकाय सम्पूर्ण रिती से (पूरी तरह सें) बंद और नाश होगये वही आखलंण्ड के मठों में वे अमूल्य थे। युरोप बर्बरता के करिब विराजमान था। बाद मे, मठवासीयों ने शास्त्रीय मूलपाठों को महाद्विपों को (महादेशो को) लौटा दिया। नये शासकों उन्हें उनके बच्चों को शिक्षित करने को कहा, और मठवासियों ने पूरे (सम्पर्ण युरोप मे मठों की और शालाओं की स्थापना की। आखिरकार, उन्हो ने दोनो भी उनका विश्वास और प्राचीन काल के साहित्य को युरोप के महाद्वीप मे लौटा लाए। एक लेखक ने सही टीका-टिप्पणी की थी, बौद्धिक विचारों के पूर्न परिचय ने अध्यय युगोंमे[९] युरोपको इस्लाम धर्म की ओर मोडने से बचालिया होगा।

जैसे मध्यम युग समाप्त होने आया कलीसिया और समाज बदलने के लिए (परिवर्तन के लिए) तैयार थे। निम्न गुणों के बावजूद भी परमेश्वर उसकी कहानी मे गतिभान् (प्रभावशाली) हो रहा था।

सुधार के दौरान कलीसिया का संघट्टन (टक्कर) और अभ्यास

परमेश्वर ने कलीसिया और प्रोटेस्टंट सुधार का स्वीझरलँड, जर्मनी और हाँलण्ड मे समाज के परिवर्तन के लिए उपयोग में लाया। सुधार का आरम्भ १५१९ में हुआ जब मर्टिन लूथर ने पंच्यानवे विषयों को वेटिनवर्ग महल के दरवाचे पर कीलों से ठोक दिया। वह विशेष रूप से, कलीसिया की तिजोरी में निधि जमा करने के लिए अतिभोग[१०] की बिकी के विरोध मे था। उस समय कलीसिया स्पष्ट रुप से गोभीर (गहरे) भष्ट्राचार में था और लूथर ने उन्हे आरम्भिक कलीसिया के शुद्धता में लौट आने का अनुरोध किया। लूथर के रोमी कलीसिया के साथ ईश्वरपरक मतभेद, उनके रोमियो और गलतियों के अध्ययन करने के बाद आए। sola gratia, sola fide, sola scripture और soli Deo lilaria"[११] के सिद्धान्तों ने उस दिन के रोमी कलीसिया के सिद्धान्तों के (मत) और अभ्यास को चुनौती दी थी।

---

[८] पायन्सन समाज विकास और उद्देश्य (लक्ष्य) मसीही भुक्ति (शमन) और विकास में, ९।

[९] कैहील, आयरिश लोगों ने संस्कृति को कैसे बचाया, ४, १८१-१८४, १९३-१९६, २०७।

[१०] आसक्तिः पापों की क्षमा, सामान्यतः प्रायश्चित ले द्वारा।

[११] अंग्रजी में भावानुवादितः केवल कृपा के द्वारा और केवल विश्वास के द्वारा भुक्ति। केवल धर्मग्रन्थ ही सत्तावादी (आधिकारिक) है। केवल परमेश्वर की ही महिमा हो।

भले ही (हालाँकि) लूथर ने विश्वास किया की अच्छे (उत्तम) कार्य पापों का प्रायश्चित नही होता इसने मसीही जिम्मेवारी को गरीबोंकी परवाह करने अथवा संसार को प्रभावित करने अलेकित (प्रदीप्त) नही किया। लूथर ने सिखाया की दो राज्य है - परमेश्वर का राज्य और इस संसार का राज्य। मसीही व्यक्ति को दोनों मे शामिल होता है। उसने हरएक (प्रत्येक) कलीसिया में सार्वजनिक (साधारण) सन्दूल (तिजोरी) की स्थापना भी की थी। धर्मगुरू भी गरीबों की सेवा करने के विषय में सन्देश दिया करते थे कलीसिया के सदस्य दिया करते थे और उपयाजक गरिब[१२] लोगों की प्रभावी मदद के लिए सर्वसाधारण बुद्धि के संचालन वाक्यों का उपयोग करते हुए निधि की व्यवस्था करते थे।

इसी बीच, स्वीस सुधारक जाँन कैल्वीन ने बड़े समाज के अन्दर (भीतर) कलीसिया को एक छोटे समाज के समान अवलोकित किया - एक सम्पूर्ण नये संसार (जग, दुनिया) के आदेश[१३] का भ्रुण। कैल्विन ने अवसर गरीबों के प्रति मसीहीयों की जिम्मेवारी के विषय में प्रवचन दिया - और उसपर कार्य किया गया। जब १७५० के आरम्भ में ६०००० शरणार्थीयों का फ्रान्स से जिनेव्हा में सैलाब उमड़ा, कैल्विन ने खोजगी कलीलिया आधारित सेवा स्थापित की जो सम्पूर्ण (पूरे) युरोप में एक नमूना (आदर्श) बनी। यह सेवा विस्तृत श्रेणी आवश्यकताओं के लिए, बिमारों की, अनाथों की, बुजुर्गों की, विकलांगों की, मुसाफिरों की, पंगुलोगों की, और जो आखिर तक बिमार है उनकी परवाह करती है। गरीबों के लिए मदद एक नैतिक कार्य को बाँन्धे हुए था। गरीबी के प्रति दीर्घ श्रेणी के हल (समाधान) के लिए उपयाजकों को प्रशिक्षित किया गया- नौकरी के लिए पुर्नप्रशिक्षण; अस्थायी घर का प्रबन्ध, व्यापार के संगठन के लिए उपकरण (साधन)- योग्य और अयोग्य गरिबों को[१४] के पहचानना (भेद दिखाना)।[१४]

वास्तव में, परमेश्वर ने कई मसीही अगुवों का उस आन्दोलन मे उपयोग किया जिससे युरोप फैल गया। जैसे उन्होंने सम्पूर्ण युरोप में कलीसिया और समाज को सुधारने के लिए देखा, उन्होंने गरीबोंके लिए बाहरी सुव्यवस्था को भी विकसित किया।

संजीवन के द्वारा समाज पर कलीसिया का संघट्टन

सुसमाचारी संजीवनों ने सत्रह और उठराह वी सदीयों को चलाया। संजीवन के आन्दोलन नें ना केवल पापियों का मन-परिवर्तन किया बल्कि अच्छे (उत्तम) कार्यों के महत्व को भी सम्मिलित किया जिस से अॅटलान्टिक के समाज के दोनो पहलू गहरे प्रभावित हुए। आन्दोलनों ने कलीसिया को नया जीवन प्रदान किया, हजारों लोगों मे आध्यात्मिक परिवर्तन लाया सामाजिक सुधार को अधि नियमित किया और प्रोटेस्टंट सेवकाई आन्दोलन का आरम्भ किया।

जॉन वेस्ली के नेतृत्व मे वेस्लीयन संजीवन अन्य आन्दोलनों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण था। इस आन्दोलन ने इंग्लंड मे भारी (बड़ा मुख्य) परिवर्तन लाया। इससे पहले इंग्लंड पश्चिमी दुनिया

---

[१२] सभा-भवन, ''कल्याण सुधार के लिए आरम्भिक उदाहरण,'' कल्याण सुधार मे, १५६।

[१३] रो, २४।

[१४] हॉल, १५८

का सबसे अधिक भ्रष्टाचारी और अनैतिक समाज रह चुका था। महिलाएँ और बच्चों के साथ बेगार (मजदूर संघ में) में दुर्व्यवहार किया जाता था। अनैतिकता अनियंत्रित थी। लोभी साम्राज्य पर राज करते थे और ब्रिटिश गुलाम व्यापार को लगाया गया, एक विशाल (बहुत बड़ा) मानवी जीवन का व्यापारिक लेन-देन का जगत (कि दुनिया) के नाम से प्रसिद्ध था। जब वेस्लीयन संजीवन के द्वारा बायबिल सम्बन्धी विश्व दर्शन को लाया गया, तो संस्कृति ने अनोखे (विलक्षण) परिवर्तन[१५] को अनुभव किया।

जौन वेस्ली एक सुसमाचारक और प्रचारक थे, परन्तु जो सुसमाचार का वह प्रचार करते थे उससे मसीह के नाम मे सामाजिक उद्देश्यों को लेने के लिए लोगों को प्रेरित भी किया। कुछ इतिहास कारों के अनुसार, संजीवन आन्दोलन ने ब्रिटिश के इतिहास में निम्न वर्गों के नैतिक चरित्र का परिवर्तन ब्रिटिश के इतिहास में करने के लिए किसी अन्य आन्दोलन सें कुछ अधिक किया - और राजकीय क्रान्ती के दहलों से (भयानकताओं से) वे इंगलंड को बचा सकते थे जो फ्रान्स ने १७८९-९५[१६] के दौरान सहा।

मित्रों के छोटे समूह ने वेस्ली सहित १७२९ में जब वे अऑक्फई मे थे तो एक होली क्लब तैयार किया। एक मसीही राजनीतिज्ञ होने के नाते, उन्होने कई वर्षो तक मिलना (भेंट करना) जारी रखा विशेष रूप से समाज मे अन्याय का सामना करने के लिए। उन्होंने जो उत्तम रिती से कर सकता था ऐसे हर एक (प्रत्येक) सदस्य को कार्यभार सौंपा। उन्होंने आध्यात्मिक औंर सामाजिक परियोजना ओं को विलीयम विल्बरफोर्स के प्रयासों को सम्मिलित करके ब्रिटिश साम्राज्य[१७] में गुलामी को खत्म करने के लिए कार्यान्वित किया। समूह में से अन्य लोगों ने विस्तृत श्रेणी की अन्य चिन्ताओं को सम्बोधिक किया-बन्दीगृह और संसदीय सुधार, शिक्षा, इंग्लंड को उनके उपनिवेशों के प्रति बन्धन (विशेष रूप से भारत), साक्षरता, बाल-मजदूर, कारखाना-विधिनिर्माण, द्वन्द्व युद्, जूआबाजी, नशा, अनैतिकता, निर्दयी प्राणी खेल, पागलों की दुर्दशा, धुआदान को साफ करना, व्यापार संघटना, खदान के गरिब, महिलाऐ और बच्चों के लिए शिक्षा, गन्दी बस्ती में बच्चे, कारखानों की अवस्था (परिस्थिती) और गन्दी बस्ती मे शाला। विकास (अपवृद्धि) में, सन्डेस्कूल, वायएमसीए, वायडब्लूसीए, उद्दार की सेना, बाचबल समाज (सोसायटी) और कलीसिया का सेवकाई समाज की स्थापना साम्मिलित हुई।[१८] विश्वास व्यावहारिक (प्रायोगिक) और तगड़ा था।

जॉन वेस्ली के आदर्श वाक्य से उसके और उनके साथियों को काफी मदद हुई: ''कर सकते हो तो सब अच्छा करो, जो माध्यमों सें कर सकते हो करो, जिस तरह से कर सकते हो करो जो सब स्थानों में कर सकते हो करो, सब समय मे कर सकते हो करो, सब लोगों को कर सकते हो करो, जब तक कर सकते हो करो।''[१९]

---

[१५] जॉन. आर. स्लॉट, आवेष्टन (Involvement),२१।

[१६] रो, २७।

[१७] पिअर्सन, १४।

[१८] स्टॉट, २२?

[१९] वॉरेन, उद्देश्य से बाध्य किया हुआ जीवन, २५९।

इंग्लंड में, गुलामी के उन्मूलन को बढ़ावा देने के लिए परमेशवर ब्रिटिश राजनेता विलियम विलबरफोर्स का उपयोग किया। विलबरफोर्स ने उसके अवस्थिती को उसके श्रद्धा (विश्वास) के कारण लिया और जॉन वेस्ली को उसका आध्यात्मिक पिता करके माना। पहले साल की विल्बरफोर्स ने संसद मे उन्मूलन कानून का परिचय कराया, वे असल में अकेले थे। उन्होंने तीस से अधिक वर्षोतक गुलामी विरोधी कानून का परिचय देना जारी रखा। प्रति वर्ष अधिक सभाचापूर (सांसद) सदस्य कानून के लिए मत (वोट) देते थे। उसी काल के दौरान, वेस्लीयन संजीवन इंग्लंड के द्वारा फैल रहा था - और कानून आखिरकार मंजूर हो गया। हालॉकि विल्म्बरफोर्स ने सांसद की विशेष भूमिका निभाई, वह मसीह के शरीर (देह) का बढ़ना था और वह भी सदस्यों के जीवन के मार्ग था और यही सोचकर की ब्रिटिश के विश्वदर्शन और संस्कृति में परिवर्तन (बदलाव) प्रभावित हुआ। उस बदलावने विल्बरफोर्स के गुलामी विरोधी आवेश (भाव) को वास्तविकता बनने के लिए स्वीकार किया (अनुमति दी)।

अन्ततः सुसमाचारी सेवकाई आन्दोलन ने अटलांटिक महासागर को पार किया और अमेरिका में पहली और दुसरी महान (विशाल) उद्‌बोधन के समान फूट पडा (निकल आय)। दुसरे महान उद्‌बोधन के पश्चात करीब सभी प्रोटेस्टंट सम्प्रदाय सामाजिक सेवाओं मे उलझ गए और महिलाओं के अधिकार गुलामी, संयम (आत्मसंयम), बन्दीगृट सुधार, सार्वजनिक शिक्षा और संसार में शान्ति ऐसे विषयों को सम्बोधित कर रहे थे। सुसमाचार सुनाना और सामाजिक चिन्ता के करीबी संबंधों ने कलीसिया की सेवकाई करनेवाले पुरूष और महिला ओं की नयी लहर को पैदा किया, जिन्होंने सुसम ाचार और बायबिलसम्बधी अधारित सामाजिक सुधार का प्रचार किया और उसे रास्श्रता दिखाया, न केवल उनके स्वयं के खण्डों में (महा द्वीपों में) परन्तु आफ्रिका, आशिया और लॅटिन अमेरिका[२०] में भी।

सांस्कृतिक संघट्टन (टक्कर) और प्रोटेस्टंट सेवकाई आन्दोलन

उन्नीसवी सदी के यात्री सेवकाई करनेवाले बायबिल के साथ दवाईयों और बीजों की थैलियाँ ले जाया करते थे। उन्होने घाना में कॉफी और कोको लेकर लाए। उन्हों ने थायलंड में चेचक, शीतज्वर (मलेशिया) और कुष्टरोग को हटा दिया। उन्होने कान्गों मे अनिवार्य मजदूर विषयों को सम्बोधित किया। चीन में उन्होंने ..... लेन-देन के साथ सौदा किया और पाँवबाँधने के अभ्यास और छोटी लडकियों को मरने के लिए छोड देने के लिए। भारत में वे विधवाओं के जलने के विरोध में, शिशुहत्या मंदिरों मे वेश्यावृत्ति और जाति पद्धति के विरोध मे लढ़े। उन्होंने कुओं और शालाओं का निर्माण किया। असल में सभी सेवकाई आन्दोलन आज हम जिसे ''समाज विकास'' कहते है उसमे साम्मिलित थे। सुसमाचार को पहूँचाने का एक भाग होने के नाते, उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ, खेतीबारी और उपेक्षित और उत्पीड़ितो[२१] के लिए सामाजिक सुधार के विषयामें परवाह की (चिन्ता की)।

विलियम केरी नामक अंग्रेज पुरुष जानता था की परमेश्वर ने इंगलंड, जर्मनी, स्वीत्झरलेंड और हॉलंड को मसीह सुधारकों के अथक प्रयासों के द्वारा परिवतित किया। केरी ने तर्कसंगत किया की

---

[२०] रो, २८-२९।

[२१] पायरसन, १८।

परेश्वर उनके लिए क्या कर सकते है, वे कहीं भी काय को पूरा कर सकते है। भारत केरी का नया निवासस्थान बन गया जहाँ उन्होंने भारत के वापसी के प्रति एक आश्चर्यजनक विस्तृत आधार के पास पहूँचना आरम्भ किया। वे थे से वकाई करनेवाले, वनस्पतिशास्त्री उद्योगपति, अर्थशास्त्री मानवतावादी चिकित्सक, मुद्रण और समाचारपत्र के अगुआ, कृषक, चालीस भिन्न भारतिय भाषाओं मे बायबिल के अनुवादक और प्रकाशक, शिक्षक, खगोलज्ञ, पुस्तकालय के अगुआ, जंगल के संरक्षक, महिलाओं के अधिकार के धर्मयोद्धा, सार्वजनिक सेवक, नैतिक सुधारक और सांस्कृतिक परिवर्तन करने वाले। वे ''धर्मप्रचारक थे जिन्हों ने प्रत्येक उपलब्ध माध्यम को भारतिय जीवन के प्रत्येक गहरे चेहरे को ज्योतित करने के लिए सत्य के ज्योति का उपयोग किया।[२२]

२००० वर्षो के लिए हिन्दु और बौद्ध नेतृत्व (नेतागिरी) ने जीवन के भाग्यवादी (दैववादी) अवलोकन को मन मे बैठाया (शिक्षा दी)। जीवन कष्ट (दर्द, तकलीफ) के विषय में है (बारें में है) और आत्माओं को उनके पिछले (पूर्व) दुष्कर्मों के कारण पृथ्वीपर भेजा गया था। भले ही विलियम केरी ने भारत को सिखाया होगा की सृष्टिकर्ता ने जीवन को अच्छा (उत्तम) होने का अभिप्रेत (अभीष्ट) दिया हो। परिवार्तन संभव और इष्ट[२३] (वांछनीय) दोनों ही था!

अन्य उन्नीसवी सदी के सेवकाई करनेवाले, आध्यात्मिक परिवर्तन पर केंद्रीकरण करते हुए भौतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक समस्याओं को के लिए भी चिन्ता (परवाह) प्रदर्शित की जहाँ उन्हों ने सेवा की।

कितना उचित (उपयुक्त) है की बुद्धिमान (विवेकी) परमेश्वर - एक सृष्टिकर्ता जिसने एक अनन्त कष्टों के संसार की रूपरेखा नही बनायी - बल्कि एक सुसमाचार के प्रदर्शन के समान वह उसके लोगों को उसका प्रेम और उसकी चिन्ता को ले जाने के लिए और फैलाने के लिए उनका उपयोग करेगा।

समाप्ति में

कलीसिया उन सभी पर गर्व नही कर सकती जो मसीही धुर्म के नाम में किया गया है - धर्मयुद्ध, धर्माधिकरण, प्रोटेस्टंट और कॅथोलिक के बीच के युद्ध। कलीसिया के लिए बहुत बार पछतावे का कारण था। फिर-भी, उसका इतिहास ले जाने के लिए उसकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

शायद (कदाचित) आप आश्चर्य करेंगे की यह अध्याय उन्नीसवी सदी के मध्य में ही क्यों रुक गया-अथवा आज सांस्कृतिक परिवर्तन में आप कलीसिया की भूमिका के विषय में हमेशा क्यों नही सुनते। कुछ तो हुआ जैसे हम बादमें देखेंगे। कलीसिया विभाजित हो गया। रुढ़विादी शाखा ने कलीसिया के साथ उसके कुछ ऐतिहासिक योजना (संबंध) ख्यो दिया जिसने समाज को बदल और नवनिर्मित उदारवादी शाखा ने आध्यात्मिक परिवर्तन (बदलाव) के लिए उसके कुछ उत्साह को खो दिया।

---

[२२] मंगलवादी, विलियम केरी की पैतृक सम्पत्ति, १७-२५।

[२३] मंगलवादी, ''विलियम केरी और भारत का आधुनिकीकरण'' विलियम केरी में, एक श्रद्धांजलि, ४३-४९।

परमेश्वर की विस्तृत कार्यसूचि-और उन्होंने कलीसिया को उसे जारी रखने का आदेश दिया-टुटेपण को तन्दुरुस्त (स्वस्थ) करना, व्यक्ति और समाज को परिवर्तित करना और बदलाव के तरिकों को योग्य बनाना जो हो सकते है यदि यीशु महापौर होते। इतिहास के मसीही कलीसिया ने सम्पूर्ण (समूचे) समाज में और उनकी संस्कृति में परिवर्तन की एक महान (बड़ी) भूमिका निभायी। आज दुनिया के चारो और आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परिवर्तन मे उसकी भूमिका की पहले की (आरम्भिक) समझ की ओर लौटने के लिए मसीही कलीसिया में विकसित आन्दोलन हो रहा है। आनेवाले पाठों में आप इक्कीसवी सदीं के ''सुधार कों की'' और से उसकी कहानियों को पढ़ेंगे।

परमेश्वर की बड़ी कार्यसूचि ४

यदि यीशु महापौर होते, मेरा विश्वास है की उनके पास व्यापक कार्यसूचि होती और एक दीर्घ-परास की योजना होती। परमेश्वर पास आवश्य एक उच्च (विशाल) योजना है। यह विशास (उच्च) योजना उसकी कलीसयिा को सर्वत्र (सब जगर) और सब पीडियों मे प्रभावित और सम्मिलित करती है।

दुनिया मे (संसार) परमेश्वर की कार्यसूचि क्या है? उसका उद्देश्य (लक्ष्य) क्या है? यह उसपर निर्भर करता है जिसे हम पुछते है - अथवा जिसका। अवलोकन करते है। इस अध्याय (पाठ) में हम परमेश्वर की बडा कार्यसूची को बायबिल सम्बन्धी मूलों को देखते हुँ, धर्मग्रन्थ को परखेंगे।

इतिहास की कलीसिया विखास करने जान पडती थी की परमेश्वर का इस संसार (दुनिया) मे विस्तृत उद्देश्य (लक्ष्य) है। हालाँकी, आज, हम बहुत (कई) कलीसिया को मनुष्य के आध्यात्मिक भुक्ति के लिए (कष्ट) कठिन कार्य करते हुए हम देखते है-धर्मप्रचार करना और पृथ्वी के चारों ओर कलीसिया का ..... करना। उसी समय हम अन्य कलीसिया को उनकी शक्तिको उत्साह से मानवकष्टों को, गरीबी, भूख और अन्याय के विषयसे सम्बोधित करने मे निवेशी करते हुए हम देखते है। हम आसानी से परमेश्वर के सम्पूर्ण कार्यसूचि को आज उसकी कलीसिया का अवलोकन करते हुए नही देख सकते। धर्मग्रन्थ हमे बताता है की परमेश्वर की कार्यसूचि हमारी कल्पना से भी अधिक बड़ी (विशाल) है।

परमेश्वर की कार्यसूचि निर्मिती में प्रदर्शित हुई

भजनकार ने घोषित (प्रमाणित) किया: ''*आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है, और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है।*'' मानवी वर्णन से परे परमेश्वर प्रतापी है। वह तेजस्वी (प्रतापी) है! वह अच्छा है! वह चमत्कारिक (आश्चर्यजनक) है! सब जो वह करता है उसी अच्छाई प्रतिविद करती है - और उसका आशय (इरादा) यह है की, सब जो उसने निर्माण किया है उससे ..... अच्छाई उसकी महिमा प्रतिबिम्बित होगी।[१]

जब निर्मिती परमेश्वर की अच्छाई प्रतिबिम्बित करती है तो परमेश्वर का सम्मान (आदर) होता है। जब निर्मिती परमेश्वर की अच्छाई प्रतिबिम्बित नही करती तो परमेश्वर का अनादर होता है और इस झूठ को बढ़ावा देती है की अच्छा नही है। लोग परमेश्वर की ओर आकर्षित होते है जिसने उन्हे प्रेम से निर्माण किया है, परन्तु वे इस झुठ से दूर किये जाते की उसके इरादे (आशय) अच्छे नही है। यह एक अनिवार्य अर्न्तदृष्टि है। यह परमेश्वर का उसकी अच्छाई है उसकी महिमा और उसकी कार्यसूचि के लिए तीव्र (अत्याधिक) चिन्ता (सम्बन्ध) को स्पष्ट करता हैं।

---

[१] भजन सहिंता १९:१

मानव जाति अन्तिम कदम (कार्यवाही) थी - मुकुट एकउच्च बिन्दु -परमेश्वर के महान कार्य का। परमेश्वर केवल मनुष्य को रचा नही परन्तु ''मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया ..... नर और नारी को उसने उत्पन्न (निर्माण) किया''[२] फिर, उसने हमे उसके उप-प्रतिशासक करके नियुक्त किया - उस् की ओर से काम (कार्य) को पूरा करना, वश मे रखना और पृथ्वी[३] पर राज करना।

पवित्र बायबिल हमें बताती हैं की, दुर्भाग्यवश हमारे पूर्वजों ने परमेश्वर का इरादा (आशय) जैसा था वैसे राज नही किया। बजाय इसके आदम ने उसके स्वयं की रुचियों को सेवा करना चुन लिया था। आदम के (अवज्ञा) आज्ञाभंग के साथ जिसे पतन (विनाश) कहते है, परमेश्वर के साथ उसके संबंध सख्त (गंभीर, कठोर) थे - जैसे परमेश्वर और सभी भविष्य के मानव जाति के मध्य (बीच) में सम्बन्ध थे। विद्रोह, तनाव, संघर्ष, विनाश, विघटन (विच्छेदन) और मृत्यू का परिचय निर्मिती में किया गया था की परमेश्वरने इतनी सावधानी से और प्रेम से उसकी महीमा प्रतिबिम्बित करने के लिए बनायी थी।

वाटिका (बगीचा) मे जो पाप (घातक) हुआ था उससे न केवल आदम और हव्वा प्रभावित हुए परन्तु संम्पूर्ण निर्मिती भी हुई। कई मानवजाति अभी तक परमेश्वर के उद्देश्य के विरोध में (विद्रोह में) है। हमारे व्यक्तिगत जीवन परिवार, समाज और ..... भी उस विद्रोह के परिणामों के नीचे अत्याचार सह रहे है। प्रेरित पौलूस ने स्पष्ट किया की ''सृष्टि आशाभंग (नैराश्य) के आधीन थी।''[४] धर्मग्रन्थ हमें बताता है: ''और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह मन में ति खेदित हुआ।''[५] इसमें कोई आश्चर्य नहि आदम के आज्ञाभंग (अवश्य) को परमेश्वर की प्रतिक्रिया बहुत ही महान थी-परमेश्वर अपनी कार्यसूचि का आदम के स्वार्थ (स्वार्थपरता) के परिणामों सें बचा रहे थे।

परमेश्वर की कार्यसूचि प्रतिज्ञापत्र में प्रदर्शित हुई

परमेश्वर ने आदम के वंशजों के स्वार्थी कुशासन से उसकी कार्यसूचि को बचाए रखना जारी रखा जब उसने बाढ़ को भेजा। बाढ़ के बाद परमेश्वर ने एक आश्चर्यजनक प्रतिज्ञापंत्र बनाया। भले ही नूह से बात करते हुए परमेश्वर ने उसके प्रतिज्ञापत्र को स्पष्ट किया केवल नूह के वंशजों के साथ ही नही परन्तु अन्य सभी जीवितों और दुनिया के साथ भी। इस प्रतिज्ञापत्र के द्वारा परमेश्वर ने पूरी (सम्पूर्ण) निर्मिती (सृष्टि) पर उसकी चिन्ता (परवाह) प्रतिबिम्बित (परावर्तित) की थी।

परमेश्वर की कार्यसूचि और राष्ट्र (देश, जाति)

उसकी विस्तृत कार्यसूचि फिर से उसके आब्राम के साथ प्रतिज्ञापत्र मे परावर्तित हुई जब परमेश्वर ने सभी जातियों के लिए उसकी चिन्त (परवाह को) प्रदर्शित किया। परमेश्वर ने आब्राम से कहा

---

[२] उत्पत्ति १:२७ के साथ सुसंगत, मैं ''मानुष्य'' और ''मनुष्य जाति'' को जातीय (व्यापक) भाव में इस्तेमाल करता हूँ - नर और नारी - इस सम्पूर्ण कार्य तक।

[३] उत्तपत्ति १:२६-२८

[४] रोमियों ८:२०

[५] उत्पत्ति ६:६

''*भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा अशिष पारंगे।*''[६] उसने उसके पश्चात प्रतिज्ञापत्र को निश्चित किया, यह कहते हुए की, ''*पृथ्वी की सारी जातियां उसके द्वारा आशीष पाएंगी।*''[७] जातियों के लिए परमेश्वर की कार्यसूचि बायबिल का मुख्य (प्रधान) विषय है - उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक। बायबिल के सबसे अन्तिम अध्याय मे स्वर्गदूत प्रेरित युहन्ना से कहता है की जीवन के वृक्ष को पन्ने ''जातियों को स्वास्थ्य (चंगाई) प्रदान करने'' के लिए है।''[८] ''जाति'' यह शब्द धर्मग्रन्थ मे[९] २००० बार से भी अधिक बार सूचीबद्ध किया गया है। जातियों के लिए परमेश्वर की चिन्ता अमूर्त नही है! उसने समाज के सामाजिक और भार्थिक कल्याण के लिए विशिष्ट चिन्ता (परवाह) व्यक्त कि है जिससे जातियां संघटित होती है।

२ इतिहास ६ और ७ मे, हम परमेश्वर और सुलैमान राजा के बीच मनोहर (मोहक) संवाद को देखते है। जैसे सुलैमान ने मन्दिर के सार्वजनिक समर्पण के समय प्रार्थना की, वह लोगों के लिए परमेश्वर की दया (करुणा) के गिडगिडाया की वे उनकी अवज्ञा (पाप) से लौटकर परमेश्वर की आज्ञा में चले।[१०] परमेश्वर ने सुलैमान को आखासन दियचा की उसने, उसकी प्रार्थना सुनी जिसमे उनके पश्चाताप और आज्ञापालन के कारण लोगों के पापों की क्षमा (माफी) सम्मिलित थी। फिर उसने कार्यसूचि के साथ कुछ सुसंति की जो पहले उसने नूह और आब्राम को प्रकट (व्यक्त) की थी। उसने सूलैमान को वचन (आश्वासन) दिया की वह उस भूमि को (देश) को स्वस्थ (चंगा) करेगा!

> ''*तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन होकर प्रार्थना करे और मेरे दर्शन के खोजी होकर अपनी बुरी चाल से फिरे, तो मैं स्वर्ग में से सुनकर उनका पाप क्षमा करूंगा और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूंगा।*''[११]

परमेश्वर भूमि (देश) और देश के लोगों को यंगा करना चाहता था। परमेश्वरने सभी लोगों को फलने-फूलने (समृद्ध होने) के लिए बनाया। उसने हमें उसके स्वरूप में बनाया जब हम फलने फूलते है हम उसमें और उसकी महिमा में परावर्तित होते है।

पतन हुए स्वभाव के साथ हम स्वाभाविक ढंग से फलने फूलने नही। हम सही (योग्य) जीने के लिए सहजानुभूति से चयन नही करते।

परमेश्वर को हमे प्रदर्शित करने की आवश्यकता है की उसने हमें जीने के लिए कैसे सम्बान्धित है। परमेश्वर ने इस्त्राईल को उसकी आदर्श जाति होने के लिए निमंत्रित किया - जैसे उसने बुलाया

---

[६] उत्पत्ति १२:३

[७] उत्पत्ति १८:१८ब

[८] प्रकाशितवाक्य २२:२

[९] पुराने नियम में, ''देश'' (मिशपचाह हिब्रु भाषा में), मतलब एकजाति अथवा गोत्र (वंश, कुल) (जाति) नया नियम ग्रीक शब्द इथनोस का उयोग, जाति, लोग अथवा जातिय समूह सूचित करता है। यहां बायबिल सम्बन्धी ''जाति'' का संदर्भ लोगोंका समूह है।

[१०] २ इतिहास ६:२२-३८

[११] २ इतिहास ७:१४

वैसे जीने के लिए और उदाहरण से जातियों को चेले बनाना।[१२] परमेश्वर ने अभीष्टीत फिया था की इस्राएल अन्य जातियों को यह दिखाएगा की जब वे परमेश्वर के आदेश का पालन (अनुकरण) करते है तब जीवन बेहतर (श्रेष्ट) है।

सो तुम उनकी धारण करना और मानना; क्यों कि और देशों के लोगों के साम्ने तुम्हारी बुद्धि और समझ इसी से प्रगट होगी, अर्थात वे इन सब विधियों को सुनकर कहेंगे, ''कि निश्चय यह बड़ी जाति बुद्धिमान और समझदार है।''[१३]

परमेश्वर के प्रति शस्त्राएलियों का आज्ञापालन के परिणाम....., अन्य जातियाँ परमेश्वर के वैभव (चमक) और महिमा की और। खिंचते गए। कुछ तरिकों से, इस्त्राएलियों ने संस्कृति से संघट्टन किया। अथवा, अधिक सही रितीसे, जिस तरिके से परमेश्वर ने इस्त्राएलियों के साथ व्यवहार किया आजतक कई संस्कृतियों को प्रभावित किया। उदाहरण के लिए, दस आज्ञाएँ यहुदियों के द्वारा जातियों के लिए आशिष है। वे इस्त्राएलियों को दि गयी थी, परन्तु वे आज दुनिया की चारो ओर के न्यायी और नैतिक समाज के लिए नींव (आधार) का प्रबन्ध करता है।[१४]

नया नियम भी जातियों के लिए परमेश्वर की चिन्ता की कहानी (कथा) बताता है। यीशु का अपने शिष्य के लिए अन्तिम कार्याधिकार यह था की सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ जिससे की ''मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार उसी के नाम से सब जातियों में किया जाएगा।''[१५] यीशू ने कहा उन जातियों को जीवन के लिए पद्धति को समझने और अवलोकन चेले बनाना है:

''इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को... उन्हे सब बातें जों मैने तुम्हे आज्ञा दी है, मानना सिखाओ।''[१६]

सुसमाचार को बाँटना-सुसमाचार - यीशु को केवल उद्धारकर्ता ही नही, परन्तु यहोवा भी प्रमाणित करना सम्मिलित करता है। जब मसीह की प्रभुत्व स्वीकृत होता है हम ''सब आज्ञापालन करने'' के लिए स्वीकार करते है (के अधीन रहते है) जो यीशु ने हमें आज्ञा दी थी। मसीह के प्रभुत्व के बगैर हम बचाए जा सकते है, परन्तु हम अपने टुटेपण से चंगाई प्राप्त नही कर पायोंगे। जीवन के हरएक (प्रत्येक) पहलू पर मसीह का प्रभुत्व अनिवार्य है। बगैर उसके सुसमाचार अधूरा है और कलीसिया अपूर्ण (अपरिपक्व) है। एक अपरिपक्व कलीसिया स्वयं मे सम्पूर्णरूप से चेले नही बनी है और सभी जातियों को चेले बनाने के लिए कार्याधिकार को परिपूर्ण करने के लिए असमर्थ है।

---

[१२] जातियों के लिए इस्त्राएल एक उदाहरण था, नैतिक और सामाजिक कानूनों का अनुकरण करने वाला जैसे की दस आज्ञाओं मे परावर्तित किया गया है। मैं यह नही कह रहा हूँ की अन्य जातियों को .... व्यवस्था के कानून को माननेवाले कहते है, जैसे की पुराने नियम के ..... कानून।

[१३] व्यवस्थाविवरण ४:६

[१४] मिल्लर एट अल, जातियों के लिए परमेश्वर की असाधारण (विशिष्ट) योजना, ३०: और फाहील, यहुतियों के वरदान, २४०-२४१।

[१५] लूका २४:४७

[१६] मत्ती २८:१९,२० अ

अन्ततः पुराने और नये नियम में परमेश्वर की जातियों के प्रति चिन्ता (परवाह) करने की पद्धति का अनुकरण करते हुए, मसीह के लौटने पर (पुनःआगमन पर) हमने जातियों की प्रस्तति भी देखते है। यह आश्चर्यजनक सत्य है! भविष्य के राज्य में, जातियों दृढ रहते हुए और परमेश्वर की महिमा की आशिषों के आनन्द प्राप्त करेगी। प्रेरित युहन्ना ने लिखा की ''*और जाति जाति के लोग उसकी ज्योति मे चले फिरेंगे और पृथ्वी के राजा अपने अपने तेज का सामान उसमें लाएंगे*।''[१७]

परमेश्वर की कार्यसूचि स्पष्ट रूप सें लोगों के और जातियों की चंगाई (स्वस्थता) को धेर लेती है - भूतकाल मे, वर्तमानकाल में और भविष्य में भी।

परमेश्वर की कार्यसूचि और यीशु

आईए, देखते है कुलुस्सियो १:१५-२०, गिनते है की ''सब'' (सारी) यह शब्दकितनी बार इस आश्चर्यजनक वृत्तान्त में प्रकट होता है:

> *''वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलैठा है। क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताए, क्या अधिकार सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई है। और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती है। और वही देह अर्थात कलीसिया का सिर है, वही आती है और मरे हुओ में से जी उठनेवालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरें। क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उस में सारी परिपूर्णता वास करें और उसके क्रूस पर बहे हुए ..... के द्वरा मेल मिलाप करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर लें चाहे वे पृथ्वी पर की हो, चाडे स्वर्ग में की।*[१८]

नये अन्तरराष्ट्रीय अनुवाद में ''सारी'' छः बार और ''सब बातें'' एकबार प्रकट होता है।

सातबार यह परिच्छेद हमें स्मरण दिलाता है की परमेश्वर की कार्यसूचि ''सारी सृष्टि'' के समान बड़ी (विशाल) है। पौलुस एक विषय बना रहा था। यीशु का लोहू ''सारी बातो'' के लिए बडाया गया था। क्यों? पतन में सारी वस्तुएं' टूट गई थी। परमेश्वर उसकी सृष्टि से प्रेम रखता है और वह चाहता है की ''सारी बाते'' उस से स्वयं के अनुकूल हो!

चूकि वह परमेश्वर की सही (सच्ची) प्रतिमा है और परमेश्वर की पूर्णता का उसमे निवास है, यीशु की कार्यसूचि भी अपने पिता के कार्यसूचि के समान है। उसमें मानवजाति का पुनरूद्धार और ''सभी वस्तुओं'' का मेल-मिलाप (पवित्रीकरण) सम्मिलित है।

आश्चर्यजनक बाते घटीत होती है जब कलीसिया परमेश्वर की अधिक विशाल (बड़ी) कार्यसूचि को उत्तर (जवाब) देती हैं। तथापि, बहुत कमी कलीसिया उनके लोगों को ''सभी वस्तुओं को पुनःस्थापित करने के लिए सज्जित करती है।

---

[१७] प्रकासित वाक्य २१:२४

[१८] कुलुस्सियों १:१५-२०

यह बहुत बड़ा (विशाल) कार्य लगता (प्रतीत होता) है, परन्तु परमेश्वर सभी विश्वासियों को उन क्षेत्र में रखा है जहा उनका प्रभाव (असर) होता है- उनके विवाह में परिवारों में, घरों मे अटोस-पटोस में शालाओं में कार्य के स्थानों में कार्यालों मे, खेती मे, बाजारों में, दोस्ती (मित्रता) मे, सर्वसाधारण हितों के समूहों मे समाज में, शास्तों मे और परिवेशो में। कलीसिया ने अपने लोगों को उनके स्वयं के प्रभाव के क्षेत्रों में संघट्टन के लिए सज्जित और प्रोत्साहित करना चाहिए और जगत (संसार) में परमेश्वर के महान उद्देश्य के साथ सहयोग करना चाहिए सभी वस्तुओं ''की पुनःस्थापना। जब कलीसिया के चेले'' सभी बातों'' की समझ के साथ है वे अपने लोगों को उनके प्रभाव के क्षेत्रों को मसीह के नेतृत्व मे लाने के लिए सज्जित करते है। कल्पना करें जब हजारों स्थानीय कलीसिया और लाखों मसीही (ईसाई) लोग परमेश्वर के साथ सभी वस्तुओं को पुनःस्थापित करने मे और परमेश्वर की महान (विशाल) कार्यसूचि को कार्यान्वित करने सहयोग करते है!

क्या वहां प्राथमिकता है?

मसीह के अनुयायी होने के नाते क्या मानवजाति के आध्यात्मिक उद्धार के लिए कार्य करना हमारी प्राथमिकता है? इस प्रश्न के लिए कम से कम तीन मुाफिक (अनुरूप) जवाब है:

१. किसी भी प्रकार के पुनःस्थापना से अधिक महत्वपूर्ण आध्यत्मिक उद्धार है। दुनिया में ऐसा कुछ भी नही ..... इससे तुलना कि जाएं। मसीह के द्वारा उद्धार के बगैर परमेश्वर के साथ हमारा पूरा विच्छेद (वियोजन) होना चाहिए। जोखिम उठाकर लोग दीर्घकाल (अनन्तकाल) को कैसे बिताते है- और उनके वर्तमानकाल के जीवनों में भी। मसीह के साथ, ''परमेश्वर का बरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।''[१९] बगैर उसके, ''पाप की मजदूरी तो मृत्यु है।''[२०] मसीह के साथ सम्पूर्ण और भरपूर (बहुतायत) का जीवन आता है।[२१] उसपर विश्वास करने पर हम ''नाशन होंगे परन्तु अनन्त जीवन पायोंगे।''[२२] उसके बगैर (सिवाय) हम ''दोषी ठहर चुके है।''[२३] विषयताएं बहुत सक्श्रक्त है।

रोचक रूप से, आध्यात्मिक उद्धार की प्राथमिकता परमेश्वर के अधिक विशाल (महान) उद्देश्यों की ओर हमें संकेत करती है:

> *क्यों कि हम उसके बनाए हुए है; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सुजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये तैयार किया।*[२४]

२. यीशु ने हरएक (प्रत्येक) सन्दर्भ के अनुसार सेवा की - उसके पिता की इच्छा के प्रति अतिसंवेदन शील। कभी यीशु ने प्रथम (पहले) आध्यात्मिक आवश्यकता के प्रति सेवा की, जैसे उसने एक

---

[१९] रोमियों ६:२३ न
[२०] रोमियों ६:२३ अ
[२१] यूहन्ना १०:१०
[२२] यूहन्ना ३:१६ ब
[२३] यूहन्ना ३:१८
[२४] इफिसियों २:८-९०

झोले के मारे हुए को चंगा किया।[२५] उसे हमेशा लोगों के आध्यात्मिक आवश्यकताओं के बारे में चिन्ता थी, फिर भी पहले नित्यरूप से उनकी सेवा नही की। कभी कभी उसने, आध्यात्मिक आवश्यकताओं को बगैर सम्बोधित किये लोगों की सेवा की। उदाहरण के लिये, जब उसने दस कोढ़ी को चंगा किया, लेकिन हम ने यह नही देखा की उसने उन नौ कोढ़ी के आध्यात्मिक आवश्यकताओं का विचार किया जिन्होंने उसे धन्यवाद नही दिया परन्तु केवल उसी का विचार किया जो लौटकर आया और पांपों पर मुंह के बल गिरा।[२६]

३. आध्यत्मिक, आवश्यकताओं की सेवा करने के लिए सेवा अक्सर एक अधिक प्रभावकारी साधन है। लोग जो बोले गए शब्द के विरोधी है अक्सर परमेश्वर के प्रेम का जिवित अभिव्यक्ति उन्हे देखने मिलती है। यीशु इस तत्व को जानता थे और उस आवश्यकता की उसने पहले सेवा गी, उसका पिता जानता था की यह लोगों के दिल खुल जायेंगे।

क्या सेवा के लिए प्राथमिकता है? अपरिवर्तनीय शर्तो में, हां - आध्यात्मिक सेवा प्राथमिकता लेती है। यधापि (और यह 'यघापि' आलोचनात्मक महत्वपूर्ण है) हम कैसे सेवा करते है सन्दर्श पर निर्भर करता है जहां परमेश्वर हमे भेजते है और पवित्रआत्मा के प्रति हमारी अतिसंवेदन शीलता (भावूकता)।

परमेश्वर का पूर्ण रूप से (समस्त) घेर लेनेवाला प्रेम

हम परमेश्वर के विस्तृत इरादों को शम्पूर्ण धर्मग्रन्थ में देख सकते है जैसे हम परिचित परिच्छेदों को परमेश्वर के विस्तृत कार्यसूचि के ज्योति में पढ़ते है। मुझे एक उदाहरण देने दिजिए। मसीही लोगों के लिए यह एक अतिप्रिय परिच्छेद भी नयी अन्तर्दृष्टि को संभवतः प्रस्तुत करता है:

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।[२७]

इस परिच्छेद में 'कौसमौस' यह ग्रीक शब्द 'जगत' के लिये उपयोग में लाया गया। कभी कभी धर्मग्रन्थ में कौसमौस का मतलब ''पृथ्वी'' अथवा ''स्थापित संसार''।[२८] अन्य समय उसे ''रोग'' करके प्रतिपादित किया जा सकता है। यहून्ना ३:१६ का हमारा सामान्य अर्थनिर्णय (प्रतिपादन) यह है कि, ''परमेश्वर जगत के लोगों से इतना प्रेम रखता है कि उसके यीशु को भेजा ताकि जगत के लोग उसपर विश्वास रखे और अनन्त जीवन पाएं। इस प्रकार, परमेश्वर कौसमौस' से इतना प्रेम रखता है कि-जगत के लोग - की उसने एक उद्धारकर्ता का प्रबन्ध किया और जो लोग उसके पास (करिब) आते है वे परमेश्वर के पुत्र बन जाते है।

---

[२५] मत्ती ९:१-८

[२६] लूका १७:११-१७

[२७] युहन्ना ३:१६

[२८] पृथ्वी/स्थापित संसार: मत्ती १३:३५; युहन्ना २१:२५; प्रेरितों के काम १७:२४; रोमियों १:२०, इब्रानियों ४:३; ब्रानियों ९:२६; मत्ती ५:१४; युहन्ना १:९, १०,२९; युहन्ना ४:४२ में कौसमौस सदृश्य है; और रोमियों के १ कुरिन्थियों, १युहन्ना के परिच्छेदों में। यह नोट करना रोचक है कि यूहन्ना यह लिख सकता था कि परमेश्वर ने ऐनथ्रौपौस (लोगो) से इतना प्रेम रखा, परन्तु उसने नही लिखा।

मुझे विश्वास है कि यह परिच्छेद कदाचित् हमें यह बता रहा है कि परमेश्वर ने 'कौसमौस' से प्रेम रखा-सब सृष्टि से - इतना कि उसने उसके पुत्र यीशु को भेजा ताकि सभी वस्तुओं का उसके क्रुस पर बहे लोहू के द्वारा मेल-मिलाप हो।[२९]

लोग उसकी सृष्टि का सार्थक (अर्थपूर्ण) हिस्सा है। उसके प्रेम के कारण उसने ''कौसमौस'' को नियत (निर्धारित) किया (उसके परमप्रिय पुत्र (बच्चे) ''कौसमौस'' (उसकी परमप्रिय सृष्टि) के पुनःस्थापन में उसकी भूमिका। क्यों कि हमसे प्रेम रखा गया और हम पुनःस्थापित किये गए है, सृष्टि को उसके टुटेपण से छुडाने में हमारी भूमिका है। प्रेरित पौलूस ने इससें सह्योग दिया। उसने लिखा कि सम्पूर्ण ''सृष्टि बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है।''[३०] सृष्टि मसीह में हमें परिपक्व होने की उत्सुकतापूर्वक बाट जोह रही है; ताकि हम वृद्धिपूर्वक उसके इरादों के अनुसार उसकी सृष्टि को चला (सम्भाल) सके।

परमेश्वर जानता है कि हमें हमारा जीवन कैसे जीना है। वह चाहता है उसके इरादे, उसकी इच्छा और उसके नियमों का पृथ्वीपर सभी स्तरोंपर आज्ञापालन हो - अभी - जैसे वे स्वर्ग है। क्यों? वह हमसे और सम्पूर्ण सृष्टि से प्रेम रखता है। वह जानता है कि हम और बाकी सृष्टि उस यात्रा तक समृद्ध होगी कि उसकी इच्छा उसके इरादे और उसके उद्धेश्य पूरे हो सके। हम, उसके परमप्रिय लोग, उप-प्रतिशासक करके अपनी भूमिकाओं को उसकी सृष्टि मे फिरसे व्यवहार (अभ्यास) मे ला सकते है। हम एकबार फिर से परमेश्वर की अच्छाई (भलाई) और महिमा को परावर्तित करने प्रबन्ध कर सकते है।

परमेश्वर की कार्यसूचि मसीह के दुसरे आगमन तक पूर्णरूप से पूरी नही होगी। ''अवश्य है कि वह स्वर्ग में उस समय तक रहे जब तक कि वह सब बातों का सुधार न करले।''[३१] तब तक कलीसिया ने परमेश्वर की सम्पूर्ण (पूरी) कार्यसूचि को समझ लेना चाहिए, अंगीकार करना चाहिए और प्रस्तुत करना चाहिए।

सर्वांगीण सेवकाई

शभी बातों को सुधारने के लिए परमेश्वर की कार्यसूचि को सम्बोधीत किया गया है जिसे ''सर्वांगीण सेवकाई'' कहा जाता है। मुझे इसकी परिभाषा देने दिजिए और सचित्र करने दिजिए:

- सर्वांगीण सेवकाई हमारे पूरे जीवन के लिए पूरे (सम्पूर्ण) सूसमाचार पर आधारित है। यह सम्पूर्ण व्यक्ति की और परमेश्वर के सम्पूर्ण सृष्टि की सेवा करती है जो परमेश्वर के सम्पूर्ण अधिकार और कार्यसूचि पर आधारति है।[३२] वह सम्पूर्णता के लिए परमेश्वर की इच्छा को प्रतिबिम्बित करता है, टटेपण के विरोध में। इन कारणों के लिए, शब्द को उच्चारने के लिए मैंने ''डब्लु'' का चयन किया- ''सर्वांगिण'' - ''Wholistic'' के बजाय।

---

[२९] कुलुस्सियो १:२०

[३०] रोमियों ८:१९

[३१] प्रेरितों के काम ३:२१ अ

[३२] य

- सर्वांगीम सेवकाई परमेश्वर की ओर और बायबिल सम्बन्धी सत्य के प्रयोग को जीवन को, कलीसिया, समाज और जातियों के परिवर्तन को देखती है।
- सर्वांगीण सेवकाई परमेश्वर की सम्पूर्ण व्यक्तियों के लिए चिन्ता (परवाह) प्रतिबिंम्बित करती है और लोगों के आध्यात्मिक, भौदिक, सामाजिक आदि समझदारी की आवश्यकताओं को सम्बोधित करती है।
- सर्वांगीण सेवकाई, आज्ञापालन और प्रेम की एक जीवनशैली क है, जो यीशु की महान आज्ञा, परमेश्वर से और पडोसी से प्रेम रखे इसपर आधारित है।
- यह सभी स्थानीय कलीसिया और सभी व्यक्तिगत विश्वासियों की जिम्मेवारी है।
- वह बड़े बाहरी वित्तिय साधनों पर निर्भर नही है, परन्तु परमेश्वर पर निर्भर है।

पेरू से यह वृत्तान्त सर्वांगीण सेवकाई की एक कहानी है:

परमेश्वर ने, पेरू के सडक पर रहने वाले बच्चों के प्रति फ्रान्सस को दिल दिया था। बच्चों को अकसर ''पिरान्हास'' नाम एक भयंकर मनुष्य को खाजाने वाली मछली के नाम पर दिया गया था। वे (बच्चे) लोगों पर आक्रमण (हमला) करके और लूटकर जीवित रहते थे। हिंसा और नाशीली दवा उनके होजमर्रा के जिंदगी का एक हिस्सा था। परमेश्वर से दिये गये बोझ प्रान्सेस ने उनके साथ काम करने के लिए एक केन्द्र की शुरूआत की। फ्रान्सेस यह जानती थी कि वे कितने भी आशाहीन है तो भी वे परमेश्वर की प्रतिमा मे बनाए गए है और उनके पास परमेश्वर की दी गई सम्भावना है। ''पिरान्हास'' बुलाने के बजाय केन्द्र उन्हें ''फटे कपडे में लिपरा हुआ खजाना'' ..... बुलाते है। केन्द्र की शुरुआत करने से पहले फ्रान्सेस वे अपने धर्मगुरू से उसके दर्शन को बाँटा। वह नेकनीयत मसीही (व्यक्ति) और कलीसिया के उद्देश्यों की एक सूक्ष्म दृष्टिवाला व्यक्ति था। उसने उसे बाताय, ''तुम सामाजिक बातों के बारे में परवाह करती है। यह वो नही जिसे कलीसिया के कुछ करने के लिए बुलाया गया है। यदि हम भटके हुओं को सुसमाचार (धर्मप्रचार) नही सूना रहे है तो हम कुछ भी नही कर रहे है।'' उदास (दुःखी) होकर उसने कलीसिया छोडी और जिसके लिए वह निश्चयी थी वह करने उसने आरम्भ किया जिसके लिए परमेश्वर ने उसे बुलाया था। (अबीतक धर्मगुरू ने उनसे माफी माँगी और अभी उसके प्रयासों मे और दर्शन में उसका सहयोग करते है।) फ्रान्सेस ने १९९९ में कुछ साधनों के साथ केन्द्र का आरम्भ किया। एक दिन उसने सर्वांगिण संदर्श (दृश्य) से सुसमाचार को घोषित करने के विषय में मण्डली (कलीसिया) मे बताया और किसी एक ने हमारे सम्मेळनों से उसको सामग्री (भौतिक वस्तूएं) भेंट (पेश) की। वह कहती है, ''भौतिक वस्तुओं ने परमेश्वर की योजना की पुष्टि की। हमें जीवन के सभी क्षेत्र को संघट्टन करने को अवाश्यकता है।'' और केन्द्र टिक यही करता है। वहां एक शाला है जो वयस्कों को सडक पर रहनेवाले बच्चों के साथ काम करने के लिए प्रशिक्षण देती है। वयस्क (प्रौढ़) लोग नियमित रूप से उन बच्चों से मिलते (भेंट करते) है और उन्हें सडक का जीवन छोड देने के लिए प्रोत्साहित करते है और उन्हे आध्यात्मिक सलाह (परामर्श) देते है। जब सम्बव होता है तब बच्चे अपने परिवारों मे लौटते है - परन्तु पर इन बच्चों के लिए घर बनाया गया है। वह बच्चों को घर भी देगा और उन्हे शिक्षा, आध्यात्मिक और भावनात्मक सलाह

और बायबिल सम्बन्धी मूल्यों का प्रबन्ध करेगा। उस केन्द्र मे पहले से ही एक चिकित्सा केन्द्र है जो बच्चों के लिए और आम लोगों के लिए स्वास्थ्य का प्रबन्ध करता है - एक समाज सेवा और आमदनी (आय) के स्त्रोत समान। धर्मसेवा का ..... पर बच्चे कुक्कुटपालन बेकरी और नितिपरक शिक्षा का कार्य भी चलाने मे मदत करते है और सेवकाी के लिए निधि का प्रबन्ध भी करते है। परमेश्वर ने केन्द्र के सर्वांगिण सेवकाई को आशिषित किया है ''फटे कपडों मे लिपटा हुआ खजाना'' को भी।[३३]

परमेश्वर का राज्य

परमेश्वर की कार्यसूचि को वर्णन करने के लिए दुसरा महत्वपूर्ण मार्ग है :

परमेश्वर की प्राथमिक कार्यसूचि परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने के लिए है।

यीशु उसके चेलों को प्रार्थना करना सिखायाः ''तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती हैं, वैसे पृथ्वी पर भी हो।''[३४] स्वर्ग में परमेश्वर की इच्छा, सिद्धान्त (कानून) और अध्यादशों का सम्पूर्ण रूप से पालन होता है उनके द्वारा जो उसके लायक है। पृथ्वीपर उसकी इच्छा का पूर्ण रूप से आज्ञापालन नही होता, परन्तु उसका राज्य पृथ्वी पर उसकी इच्छा पूरी होने पर आगे बढ़ता है। परमेश्वर का राज्य यह यीशु की प्राथमिक शिक्षा में से एक है। हमारी समझ से वह कई अधिक विशाल (बड़ी) है, परन्तु परमेश्वर के राज्य के बारे में यहा कुछ एसी बातें है जो हम जानते है :

- वह पृथ्वी के प्रति परमेश्वर के आरंभिक इरादों को प्रतिबिम्बित करता है और सब जो उस लायक है।
- इतिहास में परमेश्वर के विमोचक कार्यों के लिए वह प्राथमिक बायबिल सम्बन्धी रूपक[३५] है।
- पाप ने उन इरादों को भंग किया परन्तु परमेश्वर की योजना उसे पूर्ण रूप से पुनःस्थापन करना है।
- वह वर्तमान हकिकत है। वह वास्तविक (भौतिक) स्वास्थ्य के लिए और पुनःस्थापना (सुधार) के लिए वर्तमान आशा को पेश करता है (प्रस्ताव रखता हैं), हालाँ कि उसकी पूर्णता अभी बाकी है।
- परमेश्वर उनके लोगों के मसीह के भविष्य के शासन काल का वर्तमान अभिव्यक्ति बनने के लिए बुलाते है। हम उसके परिवार में अपनाए (गोद लिए) गए है और ..... परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर चुके है।
- परमेश्वर का राज्य अगे बढ़ा हुआ (विकसित हुआ) है क्यों कि परमेश्वर की इच्छा कार्यान्वित की गई है - उसके इरादों समान जैसे व्यक्ति रहता है (जीवन बिताता है) और वही करने के लिए हम जातियों को सम्मिलित कर अन्य लोगों को जैसा चेला बनाते है।
- एक स्थानीय कलीसिया पृथ्वीपर इस कार्यसूचि के लिए एक प्रमुख सदृश्य प्रतिनिधी है।
- जब राजा हम में राज्य करता है, उसकी चंगाई दुसरों तक ले जाने का हमें सुविधा है।

---

[३३] रूथ कोन्चा द्वारा प्रस्तुती, हार्वेस्ट सहयोगी, पेरु।

[३४] मत्ती ६:१०

[३५] रूपकः दो अलावा अलग चिजों का विवक्षित (आलिप्त) समानता।

परमेश्वर की प्रतिमा प्रकाशित हुई

कलीसिय का सेवक स्वभाव

५

परमेश्वर की प्रतिमा विकृत हो गई .... उसकी कार्यसूचि फीकी पड़ गई

बायबिल कहती है छठवे दिन परमेश्वर ने मनुष्य को नर और नारी को उसकी (अपनी) प्रतिमा में बनाया।[१] उसकी प्रतिमा में- इसमें कोई आश्चर्य नही है की वह हमारा मेल मिलाप उससे करना चाहता है!

मनुष्य अलग (भिन्न) है। परमेश्वर स्वयं एक नमूना और आदर्श है। भले हो सृष्टि के अन्य हिस्से (भाग) उसकी महिमा को प्रतिबिम्बित करते है, वह केवल मानवजाति में था की परमेश्वर उसका ऐसा दोलतमन्द (धनी) प्रतिबिम्ब रखा है!

मैं अक्सर कहता हूँ की परमेश्वर की प्रतिमा-धारक उसकी सृष्टि के ''मुकुट'' थे। मुकुट एक शिखर है, कोई उंचा और भव्य (उच्च) का उच्च बिन्दु। उत्पत्ति प्रकट करता है कि, मानवजात परमश्वर की सृष्टि का उच्च बिन्दु है। मुकुट भी सोंच्चिता और अधिकार का प्रतीक है। यदि कोई जाति (दैश) राजा और रानी को मुकुट पहनाता है, तो वह व्यक्ति उस भूमि (देश) का उच्च नेता चुन लिया जाता है। वास्तव में परमेश्वर ने मानवजाति को सृष्टि पर नेतृत्व (अधिकार) दिया है - पृथ्वी को ''वश में रखना'', ''सजीव जीवों पर राज्य करना'' ..... सृष्टि की विस्तृत श्रेणि का प्रबन्धक (भण्डार)[२]।

परमेश्वर की प्रतिमा में निर्मित लोगों को इतने उंचे स्तर तक परमेश्वर की प्रतिमा के गुण दिए गए थे, उसके बाद उसने बाकी सृष्टि को इनके अंतर्गत यह भी दिया:

- सर्जकता - कुछ नया बनाने की क्षमता[३]
- भाषा - शब्दों के द्वारा विचारों (धारणाओं) को और भाववाचक शब्दों को पहूँचाने की क्षमता
- सम्बन्ध - लोगों के साथ, प्रकृति (स्वभाव) के साथ और कार्य के साथ साभिप्राय (ज्ञानकृत, अभिप्रेत) और अर्थपूर्ण पारस्परिक क्रिया (प्रभाव) उत्पन्न करने की क्षमता।
- नैतिक चुनाव (चयन) - स्पनात्मक और विनाशक (विध्वंसक) पर्याय के बीच में (मध्य में) भेद उत्पन्न करने की क्षमता और सुन्दरता (खूबसूरती) को पहचानने को क्षमता।
- सेवकता - अन्य लोगों का स्नेही (प्रेममय), सहानुभूति शील स्वार्थ में कार्य करने की क्षमता।

---

[१] उत्पत्ति १:२७

[२] उत्तत्ति १:२८-३०। मनुष्य केवल भौतिक सृष्टि का प्रभन्धक (भण्डारी) हीनही परन्तु परमेश्वर ने मानवजाति को समाज के सभी क्षेत्रों में - विज्ञान, कला, खेल, तत्वज्ञान, शासन, कानून इत्यादि मे भी नेतृत्व दिया है।'

[३] केवल परमेश्वर ने ही गुन्य में से कुछ उत्पन्न (निर्माण) किया है। परमेश्वर से पहले हाँ बनाए गए वास्तविकता से ही हम कुछ ''नया'' खोजते और निर्माण (बनाते) है।

मैने परमेश्वर की प्रतिमा के प्रेम की अलग गुणों की सूचि नही बनायी। बायबिल हमें बताती है कि, ''परमेश्वर प्रेम है।''[४] परमेश्वर का प्रेम इन हरएक (प्रत्येक) गुणधर्मो को फैलाता है। देखा जाए तो परमेश्वर के बारे में सबकुछ प्रेम ही है। विशेष रूप से प्रेम, सेवा के एक प्रकार का वर्णन करता है जिससे परमेश्वर की प्रतिमा प्रतिबिम्बित (परावर्तित) होती है। प्रेरित भूहन्ना पूछता है, परमेश्वर का प्रेम किसी व्यक्ति में कैसे हो सकता है जो कहता है कि वह प्रेम रखता है परन्तु आवश्यकता के समय किसी भाई की सेवा नही करता।[५] सहानुभूति शील और त्यागमय सेवकता, मनुष्य में परमेश्वर की प्रतिमाँ की अधिक महत्वपूर्ण चिन्ह है।

परमेश्वर हमारे दुःख के साथ पहचान करना पसन्द (चुनते) करते है और हमारे टुटेपण को स्वस्थ (चंगा) करते है। ..... आवश्यकताओं में उसकी सचेतन पहचान और निर्णय से उसका जिम्मेवारी पर प्रवेश करना सहानुभूति शील सेवा की परिभाषा है। परमेश्वर के साथ त्यागमय सेवा एक सहानुभूति शील चुनाव (चयन) है - और उसने इस सेवकता के विशिष्ट चिन्ह को हम मे रख छोडा है।

इस सेवकपन के प्रकार के बगैर, अन्य सभी गुण (लक्षण) भ्रष्टित और विकृत हो सकते है:

- सर्जकता आणुबम्ब का उत्पादन कर सकता है।
- भाषा-विषयक क्षमता अशलील साहित्य का उत्पादन कर सकती है।
- सम्बन्ध, तानाशाही की ओर बढ़ा सकते है।
- नैतिक चुनाव (चयन) नीति-विषयक शुद्धता और गर्भपात को उचित सिद्ध करने में उपयोग मे ला सकते है।

मनुष्य में परमेश्वर की प्रतिमा का विकृति तुरन्त निर्माण के बाद आरम्भ हुई। व्यंगात्मक रूप से, मनुष्य के, परमेश्वर के समान और अधिक बनने के बापमय (पापी) प्रयास वस्तुतः मनुष्य में परमेश्वर की प्रतिमा को विकृत कर दिया! परमेश्वर ने अभिप्रेत किया की मनुष्य उसकी प्रतिमा के गुणधर्मों को अन्य लोगों की और सृष्टि की सेवा करने में उपयोग मे लाएगा। बजाय इसके मनुष्य ने स्वार्थी रूप से काम किया। उसने मनुष्य ने बनाने वाले के उद्धेश्य पूरा नही किया बल्कि जो उसने चाहा वही किया। स्वार्थलाभ के लिए उसने परमेश्वर की प्रतिमा के गुणों का इस्तेमाल किया। मनुष्य ने परमेश्वर की प्रतिमा विकृत की और यह विकृति सम्पूर्ण मानवी इतिहास में जारी रही।

यीशु का सेवकपन में परमेश्वर की प्रतिमा प्रकटित हुई

यीशु के पृथ्वीपर (जगत, संसार) में आने के बाद, लोग किसी की ओर देख सकते थे और यह भी देख सकते थे की परमेश्वर किस के समान है। यीशु परमेश्वर की परिपूर्ण और सम्पूर्ण प्रतिमा थी। परन्तु मनुष्य के रूप में। वह परमेश्वर की सही प्रस्तुती है।[६] हम केवल यीशु का ईश्वरत्व ही नही

---

[४] १ युहन्ना ४:१६

[५] १ युहन्ना ३:१७

[६] इब्रानियों १:१-३ ब

परन्तु परमेश्वर से अभिप्रेत कि गयी मानवता भी देख सकते है। परमेश्वर की प्रतिमा में बनना क्या है इस में यीशु परिपूर्ण (सम्पूर्ण रूप से) रूप से आदर्श (नमूना) है। जब हम यीशु की देखते है, हम परमेश्वर की प्रतिमा को देखते है, - सृष्टि का मुकुट।

जब हम यीशु को देखते है, हम परमेश्वर की प्रतिमा का सबसे अधिक हमत्वपूर्ण गुणविशेष को भी देखते है, मुकुट में सबसे अधिक होनहार (चमकीला) रत्न। यीशु में जो जमकदार विशेषता हम देखते है वह भौतिक सहनशक्ति और बढ़ई की लाकद नही है। वह यीशु की बुद्धिमानी (समझदारी) नही है - वही समझदारी (बुद्धिमानी) जो फरिसीयों से भी बढ़कर है। नाही वो उसकी सम्पूर्ण (परिपूर्ण) आध्यात्मिकता है नाही सम्बन्धात्मक प्रवीणता है जो उसे गर्व को नम्र और शान्ति से प्रिय बनाया। वह से किसी का भी संगठन (सयोजन) नही है। यीशु मुकुट में रत्न है, सहानुभूतिशील सेवकपन।

यीशु ने उसके सेवकपन को समर्थन किया जब उसने याकूब और युहन्ना की माता को उत्तर दिया। उसने पूछा था की उसके पुत्र यीशु के राज्य में उसके सिंहासनों के बाजू में बैठ सकते है। यीशु उससे कहा, ''जैसे कि मनुष्य का पुत्र, वह इसलिये नही आया कि उस की सेवा ..... जाए, परन्तु इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे।''[७] पौलूस ने भी मसीह के सेवकपन को समर्थन किया :

> *(यीशु) जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन अपने आपको ऐसा शुन्य कर दिया और दास का स्वरूप धारण किया और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आपको दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रुस की मृत्यु भी सह ली।''*[८]

जैसा यह परिच्छेद जारी (चालू) है हम यीशु के सेवकपन को परमेश्वर की प्रतिक्रिया को देखते है :

> *इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों मे श्रेष्ट है... और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।*[९]

क्योंकि यीशु स्वेच्छा से और त्यागपूर्वक सेवक (दास) बने, परमेश्वर ने उसकी महिमा की। उसने यीशु को श्रेष्ट नाम दिया जो सर्व नामों मे श्रेष्ट है। हर एक जीभ अंगीकार करेगी की यह सेवक परमेश्वर है। किसी भी अन्य व्यक्ति से अधिक उसे अति महान किया गया। परमेश्वर ने यीशु का इस रीति से सम्मान (आदर) किया क्यों कि यीशु ने सम्पूर्ण रूप से परावर्तित किया जो परमेश्वर ने ..... किया था जब उसने मनुष्य का निर्माण किया था। यीशु ने सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर की प्रतिमा के श्रेष्ट (उच्च) उदाहरण को व्यक्त (स्पष्ट) किया था ऐच्छिक, सहानुभूतिशील और त्यागमय सेवकपन। परमेश्वर सेवक है, और यीशु ने उस सेवकपन का नमूना (आदशी) है।

---

[७] मत्ती २०:२८

[८] फिलिपियों २:६-८

[९] फिलिप्पियो २:९-११

पौलुस उसके पाठकों को यीशु के सेवकपन के इस वर्णन (चित्रण) का परिचय दिया: ''जैसा म सीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।''[१०] मनुष्य परमेश्वर की प्रतिमा में बनाया गया, और इसलिये बनाया गया कि वह स्वेच्छा, सहानुभूतिपूर्वक और त्यागमय रूप से सेवा करें। जब हम यीशु जैसी सेवा करते है, हम अधिक पूर्णरूप से परमेश्वर की प्रतिमा को धारण करते है।

मानवजाति सृष्टि का मुकुट है, और सेवकपन मुकुट मे एक ''रत्न'' है। सेवक होने के नाते जब यीशु का सम्मान (आदर) किया गया, तो परमेश्वर की महिमा हुई। उसी गीति से, परमेश्वर की महिमा हो ती है जब उसके बच्चे (पुत्र) जब वे सेवा करते है तब उसकी प्रतिमा को परावर्तित करते है। यीशु ने अपने चेलों से कहाँ: ''उसी प्रकार तुम्हारा उजियाल मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देवखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बडाई करे।।''[११]

बायबिल सेवकपन के उच्च (प्रेष्ट) बुलाहर का वर्णन करती है:

- परमेश्वर ने कहा कि गरीब और आत्याचार पिटीत लोगों की सेवा करने से वह प्रसन्न है।[१२]
- यीशु मे उसके चेलों से कहा कि सेवा यह एक अलग चिन्ह जो उसके राज्य में रहते है - वे भूखें को खाना खिलाते है, नंगे को कपडे (वस्त्र) पहिनाते है, और जो बिमार है और बन्दीगृह में है उनकी सूधी लेते है।[१३]
- शुद्ध (निर्मल) और दोषमुक्त (पूर्ण) धर्म मे विधवाओं की और अनाथों की सेवा करना सम्मिलित है-जिन्हे सुरक्षा की आवश्यकता है।[१४]
- यीशु ने परमेश्वर की उच्च प्राथमिकता अपने पडोसियों से प्रेम रखना और उनकी सेवा करने को ज्यादा महत्व दिया है।[१५]

परमेश्वर का इरादा है कि, उसके लोग उसके बेटे (पुत्र) की प्रतिमा के अनुकूल हो।[१६] यह प्रक्रिया है, जैसे हम ''प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते है।[१७] हम मसीह की प्रतिमा के अनुकूल होते है जैसे पवित्र आत्मा हम में वास करता है और अनुकूल करता है- और जैसे हम अपने जीवन को मसीह के समान अधिक उच्च चोटी, सेवकपन से आदर्श बनाते है।

कलीसिया के सेवकपन में परमेश्वर की प्रतिमा प्रकटित हुई

मसीह के द्वारा उसकी प्रतिमा प्रकटित होने के पश्चात, परमेश्वर ने अपनी कलीसिया में अपनी प्रतिमा प्रकट की। कलीसिया का एक कार्य यदी भी है की अन्य (दुसरों को) जन्म देना और चेले

---

[१०] फिलिप्पियो २:५
[११] मत्ती ५:१६
[१२] मशायाह ५८:६-८
[१३] मत्ती २५:३५
[१४] याकूब १:२७
[१५] मरकुस १२:३१
[१६] रोमियों ८:२९
[१७] २ कुरिन्थियों ३:१८ ब

बनाकर परमेश्वर की प्रतिमा को धारण करणा विशेष रूप से, उसकी सेवक होने की प्रतिमा को धारण करना। जैसे हम देखेंगे, भी परमेश्वर का यह उद्धश्य है की उसके समाज के विश्वासियों उसकी प्रदर्शन और व्यवस्थापन करने मे उपयोग करें। और स्थानीय कलीसिया, नये जन्म के साध्य करने, सज्जित करने और उनके लोगों को सेवक-राजदूत करके भेजना, ऐसा करती है।

स्वयं के भलाई के लिए परमेश्वर सहानुभूतिशील और त्यागमय सेवा की आज्ञा नही देते। वह इसलिये आज्ञा देते है क्यों कि उसके महान गुण प्रेम का प्रदर्शन उसका परिणाम होता है। यीशु वे हमसे कहाँ की परमेश्वर से और अपने पडोसी से अपने समान प्रेम रख। परमेश्वर के लिए हम अपना प्रेम अपने पडोसियों से प्रेम रखकर प्रदर्शित करते है जैसे हम से भी प्रेम रख सकें। उसी प्रकार परमेश्वरक का प्रेम भी दुनिया (जगत) को मसीह के सहानुभूतिशील सेवा के द्वारा प्रदर्शित किया गया। त्यागमय सेवा एक मार्ग है की परमेश्वर का सम्पूर्ण चरित्र (स्वभाव) आज सि संसार में अभी स्पष्ट किया गया है। जब परमेश्वर का प्रेम मानव प्रतिनिधीयों के द्वारा साष्ट होता है वह अपने आप में केवल शब्दों में ही स्पष्ट नही होता, परन्तु त्यागमय सेवा में स्पष्ट होता है।

परमेश्वरीय प्रेम सहानुभूति और त्यागमय सेवा का परिणाम है। स्नेहमय सेवा टुडेपण का स्वस्थ (चंगा) करती है। सुधारती है। भुक्त करती है। यह परमेश्वर की कार्यसूचि है। जब वह पूरी होती है, उसकी महिमा होती है।

सेवकपन के बायबिल सम्बन्धी दृश्यता को बुलावा (बुलाहर)

कई मसीही लोग - विशेष रूप से जिन्हों ने आर्थिक और राजकिया दुरुपयोग के दीर्घ इतिहास को देखा है - उन्हे सेवकपन की संकल्पना से ताडा (अपमानित किये) गया है। उनके लिए, सेवकपन का अर्थ अनैच्छिक सेवा अथवा गुलामी। परिणाम यह हुआ कि, सेवकपन को अपमानजनक माना गया।

अनैच्छिक गुलामी कई रूपों को मानती (अपनाती) है। वह गुलामी (दासत्व) को सुस्पष्ट कर सकती है। गुलामी को आवश्यक आर्थिक वास्तविकताओं से अपमानजनक कर सकती है। यह गुलामी हो सकती है, अनिच्छुकों पर जबरदस्ती करना जो मानसिक सामाजिक अथवा राजकीय रूप से अधिक शक्तिशाली (प्रभावशाली) है। इनमे से कोई भी सेवकपन नही जिसके विषय मे बायबिल बताती है। परमेश्वर की कालीसिया को, सेवकपन का बायबिल सम्बन्धी अर्थ सुधार ने (योग्य बनाने) के लिए मदद की आवश्यकता है।

यदि हम बायबिल सम्बन्धी भाव से सेवक नही हो सकें है, हमें बदलना जरूरी है। मसीही जीवन को एक दीर्घ मार्ग के सफर के समान चित्रित करें। जब हम पाप करते है, हम रास्ते के नीचे गलत दिशा में सफर करते है। हम सुनने है, यीशु कहते है, ''जाओं और इसके बाद पाप ना करो।'' हम पीछे मुडते है और दुसरी दिशा की ओर मुख करते है। मुडने के बाद क्या हम रास्ते (मार्ग) में उसी स्थान पर रहते है? नही, हम नयी दिशा मे चलते है, उस धार्मिकता की ओर जो परमेश्वर का उद्धेश्य है।

प्रेरित पौलुसने, विश्वासियों को नये मनुष्यत्व को धारण करके परमेश्वर के समान बनने को प्रोत्साहित किया। झूठ बोलनेवाले सच बोलनेवाले बन चाते है, चोर देनेवाले (दाता) बन जाते है,

हानिकारक (अहितकर) बोलने वाले ऊंचा उठाने वाले बन चाते है, और, कुटु लोग झमा (माफ) करने वाले बन जाते बन चाते है।[१८] जहा हमने हमारे स्वयं-इच्छा की सेवा कि, हम दुसरी दिशा में मुडते है और चलते है- परमेश्वर की कार्यसूचि की ओर, दुसरों की इच्छा ओं की सेवा करते हुए।

विश्वासियों के द्वारा बायबिल सम्बन्धी सेवकपन, मसीह के अन्तर्निवास के बगैर संभव है, परन्तु परमेशवर की आत्मा के सामर्थ के द्वारा वह संभव है। पौलुस उसके पाठकों को स्मरण दिलाता है की परमेश्वर और लोग परमेश्वर को उद्धेश्यों को सफल करने के लिए एकसाथ (एकत्र) भागीदार हैः ''डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओं। क्यों कि परमेश्वर है, जिस ने अपनी सुइच्छा निमित्त मन में इच्छा और काम, दोनो बातों के करने का प्रभाव डाला है।''[१९]

परमेश्वर उसकी प्रतिभा के द्वारा उसके बच्चों में स्वयं को दिखाना चाहता है। जिस तरह हम उसका प्रेम व्यक्त करते हम प्राथमिक उपकरण (साधन) है जिसके द्वारा परमेश्वर की जीवन परिवर्तन करने वाली शक्ति व्यक्त की जाती है। जीवन के महान (बडे) चमत्कार को हम प्रतिबिम्बित और संचारित करते है जो पाप से असभ्य बने थे, और अभी परमेश्वर की प्रतिभा में सुधारे गए है। किसने स्वप्न में देखा है कि विश्व का परमेश्वर - हमारा ''महापौर'' - उसके ''नागरिकों'' को (लोगों को) स्वयं, उसको प्रेम उसका सेवकपन, उसकी प्रतिमा को प्रकट करने के लिए उपयोग मे लाना चाहता है?

---

[१८] इफिसियों ४:३०-३२

[१९] फिलिप्पियों २:१२ ब -१३

कलीसिया का उद्धश्य
भेद (गूढ़) (रहस्य) प्रकट हुआ

६

इफिस की कलीसिया को प्रेरित पौलस ने उसकी पत्री में परमेश्वर के इरादों (आशय) के गुढ का परिचय कराता है। पापों से इस असभ्य संसार (जगत) को सुधारने की उसकी योजना। परमेश्वर ने पौलूस पर भेद (गूढ़) प्रकट किया। पौलूस को अन्यों को (दूसरों को) उसे बताना था। वह अबएक ईश्वरीय (भेद) गूढ़ नही था! पौलुस ने लिखा: ''कि उसने अपनी इच्छा का भेद उस सुमति के अनुसार हमें बताया जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था।''[१]

''भेद'' सारांश में इस प्रकार है: सब जो आदम के विद्रोह में टूटा था उसे एकता और शान्ति मे दुबारा लाया जाएगा। सृष्टि निर्माण के पहले परमेश्वर का इरादा यह था कि मसीह आयेगा और स्वयं सभी भातों का सुधार करेगा। यह होकर रहेगा जैसे सृष्टि आशायों को इच्छा और नियम को जिसने इसे बनाया है उसके अधीनता में रहेगी - मसीह के द्वारा।

> *परन्तु हम पौलूस के शब्दों मे इन्हे सुनते है। भेट का उद्धश्य, पौलुस कहता है, जो कुछ स्वर्ग में है और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे।''*[२]

सबकुछ मसीह में एकत्र करे? प्रकटन की कल्पना करे यह पहली शताब्दी में था। भेद को प्रस्तुत करने से पहले, पौलुस ने उसके वाचकों को एक स्पष्ट संकेत दिया की यह भेद उन को और हमे सम्मिलित करने जा रहा था:

> *उसी में जिस में हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहिले से ठहराए जाकर मीरास बने।*[३]

इस भेद में हमारा हिस्सा है। जैसे पौलुस भेद को प्रकट करने तैयार हुआ उस ने प्रार्थना किया किं उसके वाचकों की आँखे खुली होनी जाहिए, शानदार (वैभवशाली) मीरास और पुनरुत्थान की सामर्थ की उपलब्धी को उन्हे गहराई से जानने के लिए सक्षम होना चाहिए जो उसके शानदार (मुख्य) उद्धश्य को कार्यान्वित करते है।[४]

भेद का प्रकटन

पौलुस ने लिखा हुआ यह भेद, ''जो कुछ स्वर्ग में है और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे।''[५] ..... इकिसुस की मण्डली (कलीसिया) को विवरण (तफसील) को प्रकट

---

[१] इफिसियों १:९
[२] इफिसियों १:१० ब
[३] इफिसियों १:११
[४] इफिसियों १:१८-२०
[५] इफिसियों १:१० ब

करना आरम्भ किया। आईए हम निम्नलिखित परिच्छेद के प्रत्येक (हरएक) वाख्यांश का, भेद के कई पहलूओं को खोजने के लिए (आविष्कृत करने के लिए) पुनरवलोकन करे। वे महत्वपूर्ण है! वे आज भी उसी तरह सत्य है जबसे पौलुस के लिखान को पहले दर्ज किया था:

और सबकुछ उसके पावों तले कर दिया: और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को देदिया। यह उसकी देह है, और उसकी परिपूर्णता है, जो सब में सबकुछ पूर्ण करता है।[६]

१) ''और परमेश्वर ने सब कुछ उसके पावों तले कर दिया।'' पौलुस ने परमेश्वर की कार्यसूचि को मसीह के द्वारा ''सबकुछ'' गेल-मिलाप के लिए प्रमाणित किया (पुष्टि की)। ''सभ कुछ'' परमेश्वर ने मसीह के पावों तले कर दिया।

२) परमेश्वर ने उसे ''कलीसिया के लिए सभी के उपर शीर्ष (सिर) नियुक्त किया है।'' मसीह सभी का सिर है - ''कलीसिया के लिए।'' हम यह समझते है क्यों परमेश्वर ने सबकुछ यीशु के पावों तले कर दिया और क्यों उसे सभी के उपर सिर नियुक्त किया। परन्तु उस ने ''कलीसिया के लिए'' यह क्यों कर किया ? उसका कौनसा आश्चर्यजनक उद्धश्य है उसकी कलीसिया के लिए? पौलुस नें बाद मे इसे इफिसियों ३ ने स्पष्ट किया था।

३) पौलुस ने लिखा ''कलीसिया, जो उसका शरीर (देह) है।'' कलीसिया परमेश्वर की देह है। शरीर उसके सिर के आशयों को (इरादों को) कार्यान्वित करती है। स्पष्ट रूप से, मसीह की कार्यसूचि (सिर) भी उसके शरीर की कार्यसूचि (कलीसिया) है। यह महत्वपूर्ण है। मसीह के समान ही कलीसिया को भी वही कार्यसूचि है जैसे उसके पिता के कार्यसूचि के समान है!

४) बाद में पौलुस ने स्पष्ट किया कि कलीसिया मसीह का शरीर ''उसकी परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।'' बायबिल कहती है कि कलीसिया मसीह की परिपूर्णता है। ..... आज कई कलीसिया दुनिया (संसार जगत) के टूटेपण के अच्छे उदाहरण है - की मसीह के परिपूर्णता के। कलीसिया मसीह की परिपूर्णता है परन्तु वह आजतक उसके संभावना तक पहूँची नही है। जैसे ही वह होगा कलीसिया (मसीह समान) ''सबकुछ पूर्ण हो जाएगी।''

५) बाद में पौलूस ने इस भेद का इफिसियों में वर्णन किया: ''अर्थात यह, कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा अन्यजाति लोग मीरास में साझी, और एक ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी है।''[७] पोलुस स्पष्ट करता है परमेश्वर के शरीर (देह) में अन्यजातीय लोग अब मसीह के शरीर (देह) के सदस्य है। लोग जो पहले दुसरे के विरोधी थे अभी एक परिवार में संगठित हो गए है। मसीह विभक्त लोगों में शान्ति लाते है, परस्पर-विरोधी मानवता कलीसिया, उसके शरीर के द्वारा।

६) पौलूस ने बाद में वर्णित किया कि सब पर यह बात प्रकाशित करके उस भेद का प्रबन्ध करने के लिए उसे अनुग्रह दिया गया था।''[८] उसने प्रकट किया कि कैसे इस भेद का प्रबन्ध किया जाए।

---

[६] इफिसियों १:२२-२३

[७] इफिसियों ३:६

[८] इफिसियों ३:९ अ

''प्रबन्ध'' यह शब्द, ग्रीक शब्द ''कोइनोनिया'' से ''भाग'' (सहयोग) के लिए है। मसीह, भेद है जिसका लोहू परमेश्वर के साथ टूटे संसार (जगत) का मेल मिलाप कर सकेगा। इस प्रकार ''सबकुछ का परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप का प्रबन्ध कलीसिया के सहयोग (भाग) क द्वारा होता है! पौलुस ने कलीसिया को भेद के प्रबन्ध करने मे उसके महान भूमिका को बताया है।

७) पौलुस और आगे कहता है: ''ताकि अब कलीसिया के द्वारा परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान प्रकट किया जाए.''[९] परमेश्वर की योजना सबकुछ सुधार ने की है - और उसका ज्ञान नाना प्रकार का है। वह एक विमिय नही है। वह बद्ध विमिय है। वह प्रसरणशील है। उसकी कार्यसूचि केवल आध्यात्मिक ही नही परन्तु सभी का सुधार उसमें अन्तर्विष्ट है जो पतन में टुट गया था। जैसे कलीसिया मसीह के उद्धश्य का पालन है, वह भेद का प्रबन्ध करती है और परमेश्वर के नाना प्रकार की कार्यसूचि को प्रकट करती है।

८) परिच्छेदकापुनः आरम्भः ''ताकि अब कलीसिया के द्वारा परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में हैं प्रगट किया जाए।''[१०] परमेश्वर की महान और बहु - फलकित योजना - जो पौलूस ने कहीं थी वह परमेश्वर के प्राचीन युगों मे छिपी हुई थी - जो आज कही जाएगी न केवल पृथ्वी के लोगों को परन्तु आध्यात्मिक जगत के प्रधानों और अधिकारियों को भी। यह अन्धेरे जगत की शक्तियाँ है दुष्टता की आध्यात्मिक शाक्ति। वे पवित्र दूत को हो सकते हैं, परमेश्वर के राज्य के आध्यात्मिक शक्तियाँ। कलीसिया के द्वारा शैतान और उसकी सेना को परमेश्वर प्रमाणित (सिद्ध) करेंगे - और सम्पूर्ण आध्यात्मिक राज्य को - कि वह, परमेश्वर सबकुछ मसीह के द्वारा सुधार करेगा। स्वर्गीय राज्य के प्रधान और अधिकारी पृथ्वी की रंगशाला (नाट्यशाला) देखभाल करेगा। वे परमेश्वर के नाना प्रकार के ज्ञान को देखेंगे - उसकी आश्चर्यजनक योजना शान्ति लाने, विभाजन को तोडने, टुटेपण को स्वस्थ (चंगा) करने, और सबकुछ सुधारने की। इन सभी का प्रबन्ध कलीसिया के द्वारा होगा।

अतः (इसलिए)

उसके मुक्तिप्रद उद्धश्य को इसकी बडी कार्यसूचि को परमेश्वर कलीसिया के द्वारा सम्पादित करना चाहता है- अकेले व्यक्तिगत विश्वासियों के द्वारा नही, परन्तु स्थानीय और सार्वत्रिक (व्यापक) कलीसिया के द्वारा। उसका उद्धेश्य समाज और जातियों में पूर्ण होगी जब कलीसिया उसके कार्य (उद्धश्य) को कार्यान्वित करते है।

अतः समाज के परिवर्तन के लिए देश के राष्ट्रपती उनका मंत्रमिण्डल और उनके कारोबार के नेताओ से, कलीसिया कई अधिक महत्वपूर्ण है। परमेश्वर ने उसकी बडी कार्यसूचि को कार्यान्वित करने के लिए अध्यक्ष और सबसे अधिक महत्वपूर्ण संस्था को नियुक्त किया जो राजकीय अथवा आर्थिक क्षेत्रों मे नही पायी जाती। उसके बजाय वह कलीसिया है। कलीसिया के सिर (मस्तक) की हम सेवा करते है। हम महापौर के लिए कार्य करते है और उसकी कार्यसूचि क सम्पूर्ण पुनःस्थापना (सुधारना) है!

---

[९] इफिसियों ३:१० अ

[१०] इफिसियों ३:१०-११

भेद को स्थानीय रूप से व्यक्त करना

प्रत्येक स्थानीय कलीसिया के प्रत्येक पिढ़ी का चयन होता है - उनके समाज के लिए परमेश्वर की कार्यसूचि का प्रशासक बनना अथवा नही बनना। देश की सम्मिलित कलीसिया का एकसमान चयन होता है। इस्राएल की पिढ़ी नेतृत्व का जो मूसा ने मिस्र से बाहर निकलने मे किया था उसमें एक चयन था। परमेश्व ने उन्हे बताया कि उसकी कार्यसूचि उन्ही के लिए थी उस अभिवचन मे दि गई भूमि की ओर बढने के लिए। वे डर गए (भयभीत) हो गये। और वे उन्ही के शिबिर में रुके रहे! उनके विश्वास के अभाव के कारण उसकि इमानदारी को और उद्धश्य को नही देख सके। वह पिढ़ी उस अभिवचन मे दी गई भूमि में नही आ सके। परमेश्वर ने एक पीढ़ी से उसकी आशिष को हटा दिया और अगली पीढ़ी।

परमेश्वर ने महान उद्धेश्य के लिए स्थानीय कलीसिया का चयन किया और अद्वितीय ताकतो (शक्ति) के साथ उसे सज्जित किया :

- स्थानीय कलीसिया समाज की छोटी दुनिया (लहु ब्रम्हाण्ड) है। जब वह परमेश्वर के आशयों की (इरादों को) अधीनता को स्वीकार करते है वह उनके ही समाज में परमेश्वर की कार्यसूचि का नमूना बन जाती है।

- जैसी वह परमेश्वर के आशायों की अधीनता को स्वीकार करते है, वह बढ़ते हुए उसकी प्रतिमा (स्वरूप) और स्वभाव (चरित्र) को प्रतिबिम्बित करती है। वह उस स्थिती में है परमेशवर के उप-प्रतिशासक के रूप में सृष्टि के हिस्से मे जहां परमेश्वर ने उसे रखा है वहा सेवा करें।

- परमेश्वर ने कलीसिया के लिए अगुवे तैयार किए और दिए। बाद में यही अगुवे कलीसिया के लोगों को परमेश्वर के वैभवशालि उद्धेश्य के लिए सज्जित करते है। यह कलीसिया के अगुवों को यह एक अदि महान काम (कर्तव्य) है - परमेश्वर के लोगों को उसके कार्य को कार्यान्वित करने और उसके राज को सेवा के द्वारा बढ़ाना।[११]

- स्थानीय कलीसिया सामूहिक रूप से सेवा करती है। और वह उनके व्यक्तिगत सदस्यों को उनके स्वयं के प्रभाव के क्षेत्रों में सेवा करने भेजती है और उन्हे सज्जित करती है।

- परमेश्वर की सम्पूर्ण कार्यसूचि को प्रस्तुत करने स्थानीय कलीसिया के पास आदेशपत्र (आज्ञा) है। अन्य मसीही संस्था के अति संकीर्ण आदेशपत्र (आज्ञा) है।

हार्वेस्ट में , हमारे पास सैकडों कहानियाँ है जो सत्य प्रमाणित करती है की परमेश्वर की कार्यसूचि की सेवा करना व्यक्तियों पर, कलीसिया पर समाजपर और जातियों में भी एक सार्थक संगट्टन होता है। इन पृष्टों में, मैंने कुछ उन कहानियों को अन्तर्विष्ट किया है। आप और अधिक इन्हे हमारे वेबसाईट www.harvestfoundation.org मे पढ़ सकते है।

---

[११] इफिसियों ४:११-१२

कलीसिया और आज का संसार

उत्क्रमण (उलटाव) को विप रीत कर रहे है

७

हमने देखा कि इतिहास की कलीसिया ने महान (बड़े) सामाजिक परिवर्तन का परिचय कराया है। यहाँ, कोसोवो से, हाल ही का एक (अभी का, वर्तमान का) उदाहरण है, जो मुझे एक मिशनरी मित्र द्वारा बताया गया:

> महा सचिव ने (कोसोवा का प्रमुख शहर) हमारी टीम (दल) के अगुवों को उसके कार्यालय में जो वे कर रहे थे उसके लिए उनका धन्यवाद देने के लिएआमंत्रित (निमंत्रित) किया। उसने कहा:
>
> > तुम्हे मेरा सम्पूर्ण (अप्रतिभन्धीत) समर्थन है। आपके समान (आप जैसा) यहाँ कोई नही है। हमारे मुसलमान भाई भी जो विदेश से आते है और लाखों डॉलर यहाँ खर्च करते है, परन्तु वे लोगों को मदद नही कर रहे है। वे देश के एक छोर से दुसरे छोर तक मसजिद बना (निर्माण करे) रहे है; परन्तु वे हमे खाना (भोजन) नही दे रहे है; वे हमें पहनने कपड़े नही दे रहे है; वे हमारे लिए घर नही बना रहे है जिस तरह से आप कर रहे है। केवल आप ही है जिन्हे सही में (वास्तव में) हमारी परवाह (चिन्ता) है।
>
> सभा समाप्त होने से पहले, इस महासचिव और उसके कई लोगों ने बाइबिल और अन्य मसीही साहित्य की माँग की। महासचिव ने हमारी टीम के अगुवों को बताया: ''आप बाहर जाए और मेरे लोगों की मदद करें। आप जो करना चाहते है वही करें। आपको मेरा सम्पूर्ण समर्थन है। आगे भी आपको मेरा समर्थन माँगने की जरूरत नही होगी - इस प्रकार का (इतना) भरोसा है मुझे आप पर।''[१]

निश्चित रूप से, सभी समाज भिन्न होंगे यदि यीशु महापौर होते - और इस प्रकार की कई (बहुत) कहानियाँ होती जैसे कोसोवा से है। क्या यह सकारात्मक प्रकार का परिवर्तनीय है जो कलीसिया के पास इस पृथ्वी के चारों ओर है? बीतें डेढ़ सौ सालों में (वर्षों) कई कलीसिया और नये विश्वासियों की पृथ्वी के चारों ओर विस्फोटक वृद्धि दिखाई दि है। जहाँ कहीं देशों मे मसीहीयों की बड़ी और बढ़ती हुई सैकडे वारी है, ऐसा लगोगा कि (महसूस होगा) मसीह का शासन नाटकीय रूप से उसके समाज के ढाँचे में (भवन) परावर्तित होना चाहिए। आखिर में, केवल १०.५ प्रतिशत लोकसंख्या ने रोमी साम्राज्य को मूलत: प्रभावित किया।

दुर्भाग्यवंश, आज हम अक्सर इसके विपरीत सुनते है। बहुत से समाज में, जिस तरह कलीसिया, संख्या-विषयक रूप से विकसित हो रही है, साथ-साथ समाज क्षीण होता जा रहा है (बिगड रहा है, सड़ रहा है)। कलीसिया उसकी संस्कृति पर मजबूत और सुस्पष्ट संघट्टन नही जमा पा रही है।

---

[१] रिचर्ड बेकहम द्वारा प्रस्तुत किया गया, ग्रेटर युरोप मिशन

मैं अभी अभी एक मसीही भाई के साथ आफ्रिका में था जो कलीसिया के लिए मेरे मनोभाव को बाँटता है। १९९० के दौरान (दरम्यान) दक्षिण अफ्रिका देश में उसने कलीसिया-सेवन की सेवकाई के सहमिलन का, ग्यारह लाख से अधिक लोगों की आबादी (जनसंख्य) का नेतृत्व किया। १९९० के दौरान इस सहमिलन ने १०,००० नई कलीसिया की प्रस्तुती की। उसने सोचा कि कलीसिया की संख्यात्मक वृद्धि समाज के लिए सुस्पष्ट परिवर्तन ला सकती है। इसके विपरीत देश ने (राष्ट्रने) करीब करीब हरएक सामाजिक स्तर को गंभीर रूप से बिगाड़ दिया (विकृत कर दिया)। राजनीतिक रूप से, वह लोकतंत्र (त्रजातंत्र) से तानाशाही की और बढ़ गई। भ्रष्टाचार अनियंत्रित हो गया था। आर्थिक, स्वास्थ और शिक्षा में तेजी (तीखे) से पतन हो रहा था। फिर भी, वहाँ दस हजार नई कलीसिया थी। सत्तर प्रतिशत नागरिक स्वयं को मसीही समझते थे। (तैंतीस प्रतिशत धर्मप्रचारक चॅरिसमॅटीक एवं पेन्टीकोस्टल विश्वासी थे, केवल बीस प्रतिशत कलीसिया जानेवाले थे।) वहाँ कलीसिया की वृद्धि और सामाजिक परिवर्तन में एक एसी असंगति थी की मेरे मित्र ने निश्चय किया की वह उसके स्थान में (स्थिती) सम्पूर्णता (अखंडता) के साथ नही रह सकता।

यह अफ्रिकी राष्ट्र (देश) अनोखा नही है। गॉटेमाला के चालीस प्रतिशत लोग धर्मप्रचारक विश्व-ासी होने का दावा करते है। फिर भी, देश भ्रष्टाचार, गरीबी और जातीय विभाजन का कष्ट उठाता है। २००४ की अमरिकी देश की एक रिपोर्ट ने निष्कर्ष निकाला की, गॉटेमा लाकी शासन २००,००० मृत्यू और अन्तर्धानो का देश के ३६ वे गृहयुद्ध के दौरान समाधान (निराकरण) करने में नाकामयाब रही, जिसका अन्त (समाजि) १९९६ में हुआ - और जो लोग इस मृत्यू में फँसे थे वे अंदडित रहै।[२]

वांडा में, अस्सी प्रतिशत लोगों ने मसीही धर्म मे परिवर्तन होने का दावा किया; फिर भी, वांडा ने १९९४ में भयानक (भीषण) जातिसहार को सहा।

अमरिकी राष्ट्रों मे पच्यासी प्रतिशत लोग स्वयं को मसीही सम्बोधित करते है और एक तृतीयांश ''पुर्नजन्म''[३] होने का दावा करते है। फिर भी अमेरिका अत्याथिक नैतिक पतन में है।

कौन से घटक हमें कलीसिया समाज पर इस तरह का परिवर्तन का संघट्टन जो हममें होना है और होने के लिए रोकते (बाधा डालते) है?

मैं यहाँ कुछ घटकों का प्रस्ताव रखता हूँः

- कलीसिया के लोग अक्सर वचन को सुननेवाले है परन्तु उसपर चलने वाले नही। धर्मसुधार और संजीवन मे अगुवों ने संदेश दियाँ और विश्वास की ओर कार्य की अनिवार्यता को एकसाथ सिखाया। विश्वास के बगैर कार्य अथवा कार्य बगैर विशावस के समान वहाँ कोई ऐसी चीत्र नही थी। आज भी बहुत-सी कलीसिया लोगों को सेवा करना नही सिखाती।

- यीशु को प्रभु करके स्विकारने के लिए आज्ञापात्रन की ावश्यकता होती है, न की केवल वचन (शब्द)। स्वयं भरोसा (विश्वास) हो अपर्याप्त है। दुष्ट आत्माएँ भी विश्वास करती है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है और सारी सृष्टि का प्रभु है परन्तु वे उसकी आज्ञा का पालन नही

---

[२] गॉटेमाला मे हजारों मृत्यू अनसुलझे (अनुत्तरित) रहे,'' एरिझोना रिपब्लीक, संक्षिप्त में।

[३] बर्ना रिसर्च ऑन लाईन ''(Beliefs)'' इंटरनेट।

करती। वास्तविक विश्वास, परमेश्वर की आत्मा का अलौकिक भेंट (उपहार) है। बाइबिल का विश्वास, प्रेममय आज्ञापालन का परिणाम है।

- महान अधिकार को सीमित रूप से समझाया गया है। हालाँकि, आज बहुतसी कलीसिया उनकी सेवा को इस महान अधिकार पर आधारित करती है, वे उसे सीमित रूप से समझाती है-जैसे सुसमाचार प्रचार और कलीसिया रोपन की बुलाहट के लिए। जैसे हम सि परिच्छेद की ओर देखते है, मानो हमें अनन्त परिवर्तन का दृष्टांत दिखाई देता है जो बहुत विस्तृत और बहुत गहरा है। जातियों को चेले बनाना है, बपतिस्मा देना है, और उन्हे आज्ञा मानना सिखाना है जो यीशु ने आज्ञा दी है:

  इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हे सब बातें जो मैंने तुम्हे आज्ञा दी है, मानना सिखाओ।[४]

विभाजित मन और विभाजित कलीसिया

आधुनिक कलीसिया के ''विभाजित मन'' अध्यात्मिक और सामाजिक सेवा को बीच में बाइबिल विरोधी वियोजन की और ले जाता है। उन्नीसवी सवी मेंभी प्रोटेस्टैन्ट कलीसिया को दो शाखाओं में विभाजित करता है, धर्मप्रचार और सामाजिक जिम्मेदारी पर सुनिश्चित रूप से विपरीत अवस्थाओं के साथ:

- ''रुढ़ीवादी'' कलीसिया धर्मप्रचार और कलीसिया रोपन घर केंद्रित है। यहविश्वास है कि बाइबिल परमेश्वर का वचन है और आध्यात्मिक परिदृश्य से संसार को समझाया गया है। अनातः उसमें अधिक सुसमाचारी, पेनटीकास्टल, चरीसमॅटीक, मलतत्विक और अन्य ईश्वरपरक्रिय रुढ़ीवादी कलीसिया और संघटनाएँ सम्मिलित थी।
- ''उदारतावादी'' शाखा समाज के अंदर कलीसिया की जिम्मेदारी पर ध्यान के ..... । विज्ञान और भौतिक समझ के द्वारा उसने संसार को समझाया है, बजाय इसके की धर्मग्रंथ के शाब्दिक व्याख्या के । उसने सामाजिक न्याय के विषयों को संघट्टन के लिए चुन लिया परन्तु आध्यात्मिक सुसमाचार को नीचे खेल दिया। अन्ततः उसमें मुख्य लाईन ..... संप्रदाय और अन्य ईश्वर परक्रिय रूढ़ीवादी कलीसिया और संघटनाएँ सम्मिलित थी।

कलीसिया किस तरह से इस विभाजन के बिन्दु को समझ पाई? पश्चिमी[५] संसार बदल गया है। अमेरिका गृहयुद्ध से गुजर चुका है, और अमेरिका की कलीसिया गंभीर रीतिसे गुलामी, भादक

---

[४] मत्ती २८:१९-२० अ (महत्वपूर्ण)

[५] पश्चिमी: जब पश्चिमी गोलार्ध एक भौगोलिक शब्द है अमेरिका (उत्तर मध्य दक्षिणी) से संबंधित, एक पश्चिमी सहमती है, संस्कृति से सन्दर्भ सहित ग्रीक, रोमी, और यहुदी मसीही से मूलतः निर्देशीत है। इसी समझ में, पश्चिम, जीवन की स्थितीयों का सन्दर्भ देता है जो उत्तर अमेरिका और युरोप की संस्कृतियों के विश्वदृष्टि का चरित्र-चित्रण करता है जिसमे बहुतायत संबंधी सन्दर्भ सम्मिलित होते है। एलूझा अल्वज-डे-ओलिवेरा (ब्राझील, २००५) द्वारा व्याख्य (परिभाषा) को माना गया।

पदार्थ (नशीली दवा) और ''अंतिम समय'' के विश्वास के विषयों पर विभाजित हो गई थी। युरोप में नैसर्गिक विज्ञान ने संवेग (बल) और आदर (सम्मान) को प्राप्त किया है और तत्वज्ञान जिसे प्रकृतिवाद[६] कहा गया है वह भी विकसित हुआ। ''ज्ञानी'' मनुष्य अब भौतिक सृष्टि के कशार्यों को, विज्ञान और मानवी कारणों के द्वारा समझ पाया। वहाँ सब बातों के लिए एक वैज्ञानिक स्पष्टीकरण है- सृष्टि के आरंभ के सिवाय। जल्द ही, चार्ल्स डार्विन नामक वनस्पतिशास्त्री ने एक हल (समाधान) निकाला। उसने प्रस्ताव रखा कि जीवन संयोग से आरंभ हुआ और धीरे से विकासित हुआ और बिना किसी मार्गदर्शन की अवस्था में जो आज हम देखते है। यह विकासात्मक सिद्धान्त - और प्रकृतिवाद का बड़ा तत्वज्ञान सम्पूर्ण संसार में फैल गया। वास्श्रतविकता के प्रकृतिलवादी व्याख्या में मनुष्य ने अकेले भौतिक सृष्टि के सत्य को खोज निकाला कारण और विज्ञान के द्वारा, परन्तु आध्यात्मिक संसार अवास्तव और विसंग[७] था

सामाजिक सुसमाचार और रूढ़ीवादी कलीसिया

जैसे प्रकृतिवाद उन्नीसवी सदी के पश्चिम का प्रभावी तत्वज्ञान बना है कलीसिया ने स्वयं को ही एक नये और उलझनेवाली अवस्था में पाया - उसके विचारों को विज्ञान और कारणों ने चुनौति दी। जर्मन के तत्वज्ञानियों की सम्पूर्ण प्रकृतिवाद को उनके धर्मविज्ञानों मे, मसीही धर्म को एक प्राकृतिकवादी समझ के साथ समझने पर प्रतिक्रिया की। एक धर्मवैज्ञानिक आन्दोलन जिसे ''उच्च ालोचना'' कहते है, वे १८५० मे युरोप के गुरुकुलों से बाहर आई। वह व्यापक रूप से अमेरिका में (मुख्य) मसीही सम्प्रदाय और गुरुकुलों द्वारा अंगीकृत की गई है और धीरे धीरे सम्पूर्ण संसार के रुढ़ीवादी कलीसिया के प्रवचन मंच (pulpit) पर अपना बना लिया। अन्ततः उच्च आलोचना ने, ''सामाजिक सुसमाचार'' के नाम से कुछ ऐसा प्रस्तुत (तैयार) किया।

भविष्य पर, जोर पर से ध्यान परिवर्तित (बदल) हो रहा था, परमेश्वर (प्रभु) के अध्यात्मिक राज्य से वर्तमान के संसारिक, भौतिक राज्य में - एक संशोधित समाज अब भी सामाजिक कार्य जानकारी देनेवाले शासन (Govt.) के कार्यक्रम, मानवी प्रयत्न (प्रयास) और अच्छे (भले) कार्यों से यहाँ प्राप्त होगा। इसपर विश्वास करके, कलीसिया के रुढ़ीवादी पक्षने सामाजिक विषयों पर अधिक तीव्र रूप से ध्यान केंद्रित करना आरंभ किया। संक्षिप्त में, सामाजिक सुसमाचार ने कहा है कि भले कार्यों के परिणामों के द्वारा ही पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य आयेगा। अब हरएक व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से मसीह में रुपान्तरित होना अनिवार्य नही रहेगा।

''विशाल उत्क्रमण'' (अलटाव) और सुसमाचारी कलीसिया

कलीसिया के रुढ़ीवादी शाखा के लिए यह अपधर्म (विधर्म) था, जो निश्चित रूप से विश्वास किया कि हर एक व्यक्ति का फिर से नया जन्म होना है। उसकी प्रतिक्रिया में, सुसमाचारी सुसम

---

[६] प्रकृतिवादः एक पद्धति जो संसार को एक अंतिम भौतिक और सीमित देखती है, जो अवैयक्तिक नैसर्गिक कानून समय और मौक (अवसर) के विवेकशुन्य प्रक्रिया द्वारा नियंत्रित है। जिसे धर्मनिरपेक्षवाद, धर्मनिरपेक्ष मानववाद अथवा मानवतावाद कहते है।

[७] शिष्य (चेला) राष्ट्र (जाति) सन्धि, ''विभाजित मन और विभाजित जीवन,'' सर्वांगिण सेवकाई के पाठ्यक्रम में, इंटरनेट, (www.disciplenations.org)

ाचार की घोषणा और प्रतिरक्षा के साथ विचारमग्न (चिन्तित) हो गये। उन्होने परमेश्वर सम्बन्धित आध्यात्मिक पहलू (बाजू) की ओर ध्यान देना आरंभ किया। सामाजिक सम्बन्धों के लिए उनके पास कम (अल्प) समय था। बहुत से मसीही लोग इतिहास में, एक ''अतिविशाल (भारी) निवेश....'' की प्रकल्पों में सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए परिकल्पना[८] (योजना) की गई। इसलिए रुढ़ीवादी कलीसियालद्वारा सामाजिक सम्बन्धों की अस्वीकृति ''एक विशाल (बड़ा) उत्क्रमण''[९] बन गई।

हालाँकि उत्क्रमण की सबसे बड़ा कारण पारंपरिक बाइबिल सम्बन्धी सिद्धान्तों पर सुसमाचारी का केन्द्र बिन्दु था, और अन्य घटक भी थे। व्यापक मोहभंग के पहला महायुद्ध हुआ। सभी प्रतितियों से मानवी दुष्टता प्रबल हुई। सामाजिक कार्यक्रम असफल (नाकामयाब) हुए। सुधार की कोशिशे व्यर्थ (बेकार) हुई। एसा प्रतीत हुआ कि मानव और समाज का सुधार नही होगा।

जल्द ही सुसमाचारि कलीसिया का ध्यान सुसमाचार और कलीसिया -रोपन पर आकृष्ट हुआ, अक्सर परमेश्वर सम्बन्धीत अन्य क्षेत्रों की उपेक्ष (अवहेलना) करने के लिए। सुसमाचारियों ने सेमिनरी और बायबिल कॉलेजेस की स्थापना की, जहाँ विद्यार्थियों (छात्रों) को सुसमाचार प्रचार और आध्यात्मिक मन परिवर्तन में प्रशिक्षिन किया गया। शालाओं और कलीसिया मे कई लोग ''रिहाई'' से प्रभावित हुए, यह बाइबिल सम्बन्धी इतिहास का भाष्य (व्याख्या) है जो जॉन नेल्सन डार्बी ने विकसित किया और सी. आय. स्कोफिल्डस के बाइबिल के अनुवाद से प्रसिद्ध हुआ, जो सबसे पहले १९०९ मे प्रकाशित हुआ। ''स्कोफिल्ड बाइबिल'' कई सुसमाचार प्रचार की शालाओ और सेमिनरी मे बीस्वी सदी के पहले घंटे के दौरान उपयोग मे लाया गया। उसके विस्तृत विवरण और व्याख्या (वर्णन) - डार्बी से प्रभावित - अधिकारिक समान पेश किया। जैसे पुरुष और स्त्रियाँ जो रिहाई मे प्रशिक्षित की गई थी उन्होंने शाला को छोड, सम्पूर्ण संसार भर में कलीसिया का रोपन किया, वे रिहाई के दो विश्वासों से गुजरें जिन्हे अन्ततः समाज पर रुढ़ीवादी कलीसिया के प्रभाव से चोट पहूँची:

- जबतक यीशु नही लौटते संसार अनिवार्य रुप से, क्षतिग्रस्त हो जाएगा (बिगड जाएगा)।
- मसीह के लौटने के बाद, परमेश्वर का राज्य केवल भविष्य के लिए है।

संसार अनिवार्यरूप से क्षतिग्रस्त होगा

उस समय के सुसमाचार प्रचारकों ने कहा, स्वस्थ समाज में कलीसिया को सम्मिलित करने एक छोटा कारण था। वैसे भी, यीशु के लौटने तक समाज को पतन के लिए नियत किया गया। सुसमाचार प्रचारकों के पास संसार के भविष्य का निराशावादी दर्शन था, परन्तु उन्होंने मसीह के भविष्य के शासन को देखा। नरक के लिए संसार को निर्दिष्ट किया था। स्वर्ग के लिए आत्माओं को बचाना बहुत बड़ी आवश्यकता थी।

संसार का अनिवार्य पतन प्रचारक डी.एल.मूडी के प्रदर्शित ''रक्षा नौका मनोवृत्ति'' ने योगदान दिया। उनके एक वाक्तव्य को मैने भावानुवाद कियाः ''संसार एक डूबते हुए जहाज के समान है।

---

[८] पायरसन, २२।

[९] स्टॉट, २५। यह शब्द कलीसिया का इतिहासकार तिमोथी स्मिथ ने उपयोग में लाया।

परमेश्वर ने मुझे रक्षा नौका मे रखा और मुझे सुरक्षित जीवन दिया और कहा, ''मूडी, बाहर जाओ और जितनों को बचा सकते है, बचाओ। जहाज (के बारें मे) (विषय में) की फिक्र न करो। वह वैसे ही डूब रही है।'' यद्यपि मूडी स्वयं सुसमाचार के सामाजिक उलझनों मे उलझे हुए थे, संसार की मूर्तिकला एक डूबते हुए जहाज के समान, एक उनकी पैतृक सम्पत्तियों में सें एक है। यह विश्वास सेवकाई करनेवालों के पिढ़ियों द्वारा बाँटा गया था, जिन्हों ने उसे संसार के चारों और निश्चित किया (बाहर भेजा)।

मूड़ी निश्चित रूप से सही थे कि संसार मे दुष्टता है। मसीही लोगों की प्रत्येक पिढि ने अन्दर जाने के लिए संघर्ष किया - परन्तु संसार से बाहर आने के लिए नही। प्रत्येक पिढी के पास भाग जीने के, बचकर रहने के, टालना स्वयं सुरक्षा, है और स्वयं को समाज की दुष्टताओं से दूर करने के रास्ते सोच निकले है। अघापि, विश्वासी जो स्वयं को और लोगों को, जिन से वे प्रेम करते है (पृथक) संसार की दुष्टताओं से अलग करते है, वे परमेश्वर की इच्छा जो है कि उसके लोगों को इस अंधकारयक्श्वक्त संसार में ज्योति समान उपयोग करने की, उस इच्छा की उपेक्षा करते है - परमेश्वर की आशाभरी, परिवर्तनीय कहानी उनके जीवन में और समाज मे लाते हुए। हरएक पिढ़ी में जब से यीशु, मसीही लोगों ने विश्वास किया कि उनकी ही पीढी थी जिस में वह (यीशु) लौट आयेंगे। हां, हमें इस तरह से जीवन बिताना है जैसे यीशु कल ही लौट कर आ रहे है, अगले हप्ते अथवा अगले साल। कोई भी मनुष्य ..... और वह घड़ी को न ही जानता-केवल पिता ही जानता है। यीशु अगले दस, सौ, अथवा एक हजार वर्षों-तक नही आ सकते। जब वह आए, वह अपेक्षा करेगा कि उसकी कलीसिया ''व्यस्त''[१०] रहे -उसके काम करते हुए-जब तक वह नही लौटते।

परमेष्वर का राज्य केवल भविष्य के लिए है

ठिक उसी समय ''रिहाई'' से प्रभावित सुसमाचार प्रचार की कलीसिया ने सिखाया कि परमेश्वर का राज्य भविष्य के लिए आत्मिक वास्तविकता है, मसीह के लौट आने के बाद।

यीशु ने कहा, ''मेरा राज्य यहां का नही।''[११] परन्तु उसने यह भी कहां, ''परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच मे है।''[१२] यह वर्तमान और भविष्य दोनो है। यीशु ने उसके चेलों को प्रार्थना करना सिखाया, ''तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग मे पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।''[१३] प्रार्थना यह नही थी कि यीशु के लौट आने के बाद परमेश्वर की इच्छा पूरी हो परन्तु यहां अभी पूरी हो जैसे उसकी इच्छा स्वर्ग में पूरी होती है। उस मात्रा (श्रेणी) को कि परमेश्वर की इच्छा अभी पृथ्वीपर पूरी हो, उसका राज्य इस पृथ्वीपर आए - अभी।

भविष्य मे विश्वास - वर्तमान में सबकुछ सुधार करने का बडी चिन्ता को आगे बढ़ाने के लिए केवल राज्य ने ही रोका। मसीही लोग जिन्हों ने सोचा था कि परमेश्वर का राज्य केवल भविष्य के लिए ही है, निश्चित रूप से उस कार्य को नही करेंगे जिसे वर्तमान मे प्रकट (व्यक्त) होकर देखें।

---

[१०] लूका १९:१३ (KJV)

[११] अ

[१२] अ

[१३] अ

सारंश में, बीसवी सदी के पहले भाग में, हजारो नये प्रशिक्षित सुसमाचार प्रचारक धर्मगुरू (पास्टर्स) और सेवकाई करनेवाले मार्ग को तैयार करने की सेवा की कोशिशों को लेकर पृथ्वी के उस पार तक फैल गये। जैसे उन्होंने पश्चिम के बाहर सेवा की, उन्होंने सुसमाचार प्रचार किया, कलीसिया का रोपन किया, राष्ट्र के (जाति) के धर्मगुरू (पास्टर्स) को प्रशिक्षित किया, अन्य लोगों को वही करने के लिए चेले बनाया-और सुसमाचार प्रचार पर जोर देने मे अनजाने में मदद की और लॅटीन अमेरिका, आशिया और अफ्रिका मे कलीसिया का रोपण किया। आज भी पृथ्वी के चारो और, कलीसिया जानेवाले लोग जिन्होने कलीसिया में उन्नीसवी सदी के विभाजन के बारें मे कभी नही सुना, उनका विश्वास है और उनका सेवा केन्द्र विभाजन और तत्वज्ञानों से सुगठित था जो उन्हे घेरे हुए था।

पेन्टीकोस्टल और चॅरिसमॅटीक आन्दोलन से प्रोत्साहित आत्मिक संजीवन

कलीसिया की रुढ़ीवादी शाखा विश्वास की एक नई अभिव्यक्ति से जल्द ही विस्तारित हुई, वह भी आत्मिक सेवा मे अत्यन्त समर्पित थी - पेन्टीकोस्टलीजम। दशकों के पश्चात (बाद) चॉरिस्म ॅटिक आन्दोलन ने इश्वरपरक्रिय रुढ़ीवादी दायरों में अभी तक विस्फोटक वृद्धि लाई थी।

जैसे ही बीसवी सदी प्रारंभ हुई पेन्टीकोस्टलिझम ने प्रवेश किया १९०१ और १९०६ में अमेरिका में संजीवनों के द्वारा भरगई। सुसमाचार प्रचारकों के समान (जैसे ही) पेन्टीकोस्टल लोगों का भी आत्मिक सेवकाई[१४] पर मजबूत (तगड़ा) जोर था। पेन्टीकोस्टलिजम का व्यक्तिगत मुक्ति (छुटकारे) पर पूरा ध्यान केन्द्रीत था, पवित्र आत्मा और आत्मिक वरदानो का बाप्तिस्मा। हालाँकि सुसमाचार प्रचारक और पेन्टीकोस्टल लोगों के आत्मिक वरदानों पर बहुत परस्पर-विरोधी सिद्धान्त थे, वे दोनों ने उन्नीसवी सदी इश्वरपरक्रिय उदारतावाद का विरोध किया। जहां सुसमाचार प्रचारकों ने उदारतावाद को संशोधित ईश्लवर परक और बाइबिल सम्बन्धी क्षमायाचक को उत्तर (जवाब) दिया, और पेन्टीकोस्टल लोगों ने परमेश्वर की समामर्थ के व्यक्तिगत अनुभवों के साथ उत्तर (जवाब) दिया।[१५] पेन्टिकोस्टल लोगों ने भौतिक (ऐहिक) समस्याओं को सम्बोधित किया, एक पर्यवेक्षक (पालक) का उल्लेख किया, परन्तु आत्मिक (आध्यात्मिक) जवाबों (उत्तरों) के साथः ''आत्माओं को क्यों न बचाया जाए और बिमारों के लिए क्यों न प्रार्थना कि जाए? इन कार्योंको यीशु की सेवकाई से विभाजित नही किया जा सकता, क्यों कि वह प्रचार करने, चंगा करने और दुष्ट आत्माओं को निकालने आया है। घटाने के लिए किस ने हमे अनुमति दी है?''[१६]

पेन्टिकोस्टलिझम जानबूझकर सुसमाचार के सामाजिक आशयों पर ध्यान केंद्रित नही करती। अध्यापि, आरंभिक पेन्टीकोस्टलिझम समाज को सम्बोधित करती हैः

---

[१४] यह ऐतिहासिक। ईश्वरपरकिय दृष्टि सुसमाचार प्रचारकों को पेन्टीकोस्टल लोगों से भेद दिखाती है परन्तु नाम बदले है। कुछ मध्य और दक्षिण अमेरिका संदर्भ मे, पेन्टीकोस्टल लोग सुसमाचार प्रचारक है; और प्राथमिक धार्मिक वर्गीकरणों को सुसमाचार प्रचारक और केथोलिकस कहते है। वह स्पष्टीकरण एल्युजा अल्वज -डी ओलीवेरा द्वारा दिया गया है (ब्राझील, २००५)।

[१५] स्पीट्लर, ''बीसवी सदी के बच्चे,'' शान्त कान्ति, ७९।

[१६] फरहा, ''अमेरिका का पेन्टीकोस्टल'' आज का मसीही धर्म, २५।

हालाँकि पेन्टिकोस्टल लोग प्रत्यक्ष रीति से राजनीति मे भाग नही लेते, उनके कार्य राजनीतिक और सामाजिक विरोध को प्रकट करते है। - आरंभिक पेन्टिकोस्टल लोग अक्सर शांतिवादी और साथ साथ मध्यनिषेधवादी भी थे। साथ साथ धार्मिक आचरण में वे प्रजातिवाद और महिलाओं के निन्दा के विरोध में खडे रहे।[१७]

यह आन्दोलन एक बहुजातीय, बहु०प्रजातिय आन्दोल के जैसा आरम्भ हुआ। उसके मूल के अनुयायी आर्थिक रूप से निचली श्रेणी के और निचली-मध्यम श्रेणी के थे जो विश्वास करते थे कि मसीह का सन्निकटता का लौट आना समाज के बुराईयों का निशकरण करेगा। इसी बीच, उन्होंने उनके विश्वास के द्वारा आर्थिक समस्याओं सामाजिक देशानिष्काशन, जातिवाद का ..... किया अलौकिक मदद और संघर्षो मे एक दुसरों के साथ दिया। उन्होंने पहली सदी के मसीही धर्म के कुछ मूल्यों को, अपनी व्यक्तिगत पवित्रता को आगे बढ़ाते हुए और ''संसारीक'' कार्यो से अलग रहकर पुनः स्थापित करने के लिए कार्य (काम) लिया।[१८] बीसवी सदी के शुरुआत में (आरंभ में) पेन्टीकोस्टलिजम के पास केवल मुट्ठीभर अनुयायी थे, परन्तु अन्तिम समय के विषय में आन्दोलन की चिन्ता संसार के चारो ओर सेवकों के भारी (तीव्र) कार्य की ओर आगे बढ़े। यीशु के जल्द ही लौट आने के अत्यावश्यक चिन्ता से प्रेरित होकर, पेन्टीकोस्टल सेवकों ने सुसमाचार प्रचार और कलीसिया रोपण को उनका प्राथमिक केन्द्रे रखा- और वे फलवान (लाभदायक) हुए। बीसवी सदीं के मध्य मे, पेन्टीकोस्टलिझम विश्वव्यापी विस्फोट के किनारे पे था, और आत्मिक सेवकाई की श्रेष्टता आनेवाले सदींयों मे जारी रहा।

जरिसमा आन्दोलन १९६०मे, अमेरिका में दृश्य में आया। चांरिस्मा के वरदान पेन्टीकोस्टल कलीसिया मे केवल सिद्धान्त और आचरण ही नही रहे। १९७० और १९८० मे मुख्य सम्प्रदायों मे, स्वतंत्र मण्डलीयों मे और रोमन केथोलिक लोगों मे दिलचस्पी उमड़ पड़ी। चमत्कार चिन्ह और आश्चर्य और आध्यात्मिक सामर्थ के जोर पर चेरिस्मा के आन्दोलन का राष्ट्रों को संचारित करने के लिए एक उत्साही आध्यात्मिक संदेश था। बीसवी सदी के शेष बाकी, आध्यात्मिक नवीनी करण चॉस्मि आन्दोलन का प्राथमिक ध्येय था - आध्यात्मिक नवीनीकरण व्यक्तिगत और कलीसिया के स्तर दोनो पर। नई स्थानिय कलीसिया और नई उप कलीसिया संघटनाएँ स्थापित की गई और नई कोशिशे आरंभ हुई। प्रशिक्षित कर्मचारीयों ने विश्वव्यापी संदेश को आगे बढ़ाया - प्राथमिक रूप से सुसमाचार आराधना, संजीवन, चंगाई और चमत्कारी सेवा, शिक्षा, साहित्य, संगीत और माध्यमो द्वारा आगे बढ़ाया।

पेन्टीकोस्टल और चरिस्मा आन्दोलन ने आध्यात्मिक रूप से भूखे समाज के लिए आध्यात्मि क नवीनीकरण को लेकर आए। परन्तु संसार में बड़े (महान) भौतिक (ऐहिक) और सामाजिक भूखेलोग भी थे। रूढ़ीवादी कलीसिया में बहुतों ने भौतिक सामाजिक आवश्यकताओं की सेवा की परन्तु साधारणतया सहायक केन्द्र के समान। ''विशाल उत्क्रमण के बावजूद भी, सभी ने भौतिक और सामाजिक सेवा करना नही छेड़ा। घर में और विदेशों मे उन्होने अस्पताल, चिकित्सालय, शाला,

---

[१७] स्टीफन्स्, ''पेन्टीकोस्टलिझम के जडों को निर्वारित करना, इंटरनेट,८

[१८] स्टीफन्स, ४

अनाथाश्रम और राहत कार्य स्थापित किये और चलाएँ। उनका कार्य संवेदनाशील (सहानुभूति शील) था।अघापि, कभी कभी कहां गया था - सेवा करते समय भी - कि भौतिक आवश्यकता के प्रति उनकी बाह्यपहूँच एक सुसमाचारात्मक औजार (उपकरण) था, सुसमाचार के महान उद्देश्य के प्रति साधन, बजाय इसके की भौतिक अथवा सामाजिक टटेपण को चंगा (स्वस्थ) करने की परमेश्वर की चिन्ता का अभिव्यक्ति।

भौतिक और सामाजिक सेवकाई - क्यों? कैसें?

मसीही धर्म के लोगों के लिए यह विषय अभी तक कौन भारी-भरकम कर रहा है, मै .... एक बडी सावधानी का सुझाव देता हूँ, दो कारणों के लिए:

- पहला हमे सहानुभूति के कार्य को सफाई देने की आवश्यकता नही है। वैसे देखा जाए तो हमें हमारे पडोसियों से प्रेम रखने की आज्ञा दी गई है।
- दुसरा, सहानुभूति के कार्यों को सकारात्मक आध्यात्मिक प्रतिक्रिया की आवश्यकता नही है। यीशु ने सभी दस कोडीयों को चंगा किया, फिर भी केवल एक ने ही उसको जवाब दिया।

हमे नें हमारे सेवा के कार्यों को परखना जारी रखना जाहिए, स्वयं से इस प्रकार के प्रश्नों को पूछते हुए:

- हम एसा बरताव कैसे कर सकते है चालबाजी के समान अनुभव नही करना जिन्हे हमे मदद को अभिप्रेत करना है-और सम्भवता: सुसमाचार प्रचार?
- हम लोगों के कैसे दिखा सकते है कि हम उन से व्यक्ति समान प्रेम रखते है, न की केवल ''आत्माओं'' के समान?
- हम क्या महसूस कर सकते यदि, मसीही होने हुए, हमें मुसलमानो और हिन्दुओं के अस्पताल से मदद मिल रही है, हम यह समझते कि हम हमारे परिवर्तन में वैद्यकिय मदद से अधिक दिलचस्पी ले रहे है?

दो-तिहाई संसार में कलीसिया की सेवकाई

दो असमान (भिन्न) पश्चिमी नमूने - सामाजिक सुसमाचार प्रचार और सुसमाचारी आत्मा-बचाव-उन्नीसवी और बीसवी सदी के आरंभिक मे दो-तिहाई संसार में प्रतिकृति बनाई गई, जैसे उदारतावादी और सुसमाचार प्रचारक सेवकोंने उनके भिन्न दर्मविज्ञान को और आचरणों को (प्रयोगों को) उनके सेवा के राष्ट्रो में (जातियों) कार्यन्वित किया। सुसमाचार प्रचारक सेवकों का अन्तिम ध्येय हमेशा आध्यात्मिक परिवर्तन रहा- हालाँकि उनकी सेवकाई मे कभी कभी दवाई, शिक्षा अभवा अनाथाश्रमों को भी सम्मिलित किया गया। राष्ट्रीय कलीसिया के अगुवों ने सुसमाचार प्रचार और सामाजिक क्रिय (कार्य) को भी सम्मिश्रित किया। उदाहरण के लिए, जबान में ..... तोयोहिको कागावा, एक सुप्रसिद्ध सुसमाचार प्रचारक और समाज सुधारक थे और १९३० में जपान में ही वे मसीही समाज कार्य के वे प्रक्ता बने।[१९]

[१९] रो, ३३?

जैसे ही पश्चिमी भाग मे कलीसिया का विश्तार हुआ, उसने सामान्यतः राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता की प्रबल (जबरदस्त) भावनाएँ परावर्तित हुई- ..... वह पैतृकवाद (बैतृक शासन) और अधीनता के विषयों से नकारात्मक रूप से संघट्टित थी। मुझे आपको बताने दे कि पिछले पच्चीस सालों मे पैतृकवाद और अधीनता के विषय मे हमने क्या खोज निकाला है, हमने दो-तिहाई संसार में न केवल स्थानिय कलीसिया के अगुवों के साथ काम किया बल्कि शिष्टमण्डल और विकास शाखाओं के साथ भी काम (कार्य) किया।

स्थानीय कलीसिया के द्वारा दो-तिहाई संसार में सेवकाई करने वाले और मदत करनेवाले प्रतीनिधीयों की ओर से अनैच्छिक पैतृकवाद ने सवांगिण सेवकाई को प्रायः (बारबार) निराश किया। यह सुनने मे अप्रिय (कठोर) लगेगा, परन्तु यह मेरा अवलोकन है। बहुत से सेवकाई करनेवाले भौतिक वादात्मक विपुल (धनवान) पश्चिम से आते है, जैसे बहुत सी विकास शाखाओं के समान। ऐतिहासिक रूप से, उनकी कोशिशों ने मान लिया कि, स्थानिय लोग स्वयं की मदद ..... पैसों के, माल के (सामान, चीजों से) और बाह्य शिल्पविज्ञान के करने में असमर्थ थे। बाह्य साधनों का उपयोग योजनाओं के-विकास के लिए-और उसे जारी रखने के लिए किया गया। अक्सर, स्थानिय लोगों ने कभी उन साधनों को खोजने की और उनका उपयोग करने की कोशिशे नही की जो परमेश्वर ने उन्हे दिये थे। बहुत सी अच्छी अभिप्रेत कोशिशों ने वास्तव मे अधनिता स्थापित की और गरीबी की मनोवृत्ति को प्रबलित किया।

परन्तु सभी देशों के (राष्ट्रों के, जाति के) लोगों को यह जानने की आवश्यचकता है कि परमेश्वर ने उन्हे उसी समझ (बुद्धि) मे, योग्यताओं में, सर्जकता मे और उसकी प्रतिभा के प्रतिबिम्ब मे रखा, जैसे उसने भौतिक रूप से विकसित राष्ट्रों को (जातियों) दिया है। उन्हे उनके लिए उसके (परमेश्वर के) दृष्टांत को पकडने की आवश्यकता है और परमेश्वर के द्वारा दि गई अन्तः शक्ति और साधनों को खोजने के लिए वे प्रोत्साहित हो जाए। वांडा और कोसोवा के लोगें मे वही अन्तःशक्ति है जैसे उन लोगों के पास है जो उन देशों मे लोग शांति और समृद्धि का उपभोग लेते है। वे परमेश्वर की प्रतिमा मे बनाए गये है। उनके पास उसकी अन्तःशक्ति है। परमेश्वर लोगों के द्वारा उनके सभी साधनों साथ कार्य करता है, उनके राष्ट्र को (जातियों) स्थापित करने के लिए।[२०]

जैसे हम लोगों को स्थानीय साधनों को दुंढने के लिए प्रोत्साहन देते है, हमे अक्सर (प्रायः) यह ध्यान मे रखना चाहिए कि बाइबिल कहती है कि जिनके पास बहुत है उन्होंने जिनके पास कम है उन्हे मदद करना चाहिए।[२१] यह सच (सत्य) है। परन्तु यदि भौतिक चिजों का अथवा साधनों का प्रबन्ध, स्थानीया कलीसिया के लोगो द्वारा परमेश्वर के लिए करने से पहले रो गया और उन साधनों को उपयोग मे लाया गया जो उसने (परमेश्वर) उन्हे पहले ही दे दिया है, तो बाह्य (बाहरी) मदद, देश को चंगा (स्वस्थ) करने की परमेश्वर की इच्छा मे विलम्ब और निष्कल कर सकता है। तथापि,

---

[२०] ''साधने'' केवल पैसा ही नही है, जैसे सामान्य रूप से सोचते है-परन्तु सभी प्रबन्ध के प्रकार को जिसमे मानवीशक्ति और सर्जकता सम्मिलित है। पैसा सही रीतिसे एक साधन है और उसका अच्छे से भी प्रबन्धीत किया जाना चाहिए।

[२१] २ कुरिन्थियो ८:१४ कहता है, ''परन्तु बराबरी के विचार से इस समय तुम्हारी बढ़ती उनकी घटी में काम आए, ताकि उनकी बढ़ती भी तुम्हारी घटी में काम आए, कि बराबरी हो जाए।''

यह सहकारी जोखिम (साहसिक कार्य) है। इस टिप्पणी (आलोचना, टीका) की ओर देखिए, एक दक्षिण अमेरिकी पास्टर्स के प्रशिक्षक की ओर से है:

> अक्सर, बातों को जमाए रखने की पश्चिमी प्रवृत्ति और जल्दी से जमाए रखना, इस विकसित संसार में राष्ट्र के द्वारा मान ली गई है। यह घटित होता है क्यों कि राष्ट्र उनकी स्थानीय अन्त:शक्ति नही देखती। वे झूठ को सच के समान पकडे रहते है जैसे विकास के लिए उनके स्वयं के साधन हो। मन की (विचारों) गरीबी, परिस्थिति (हालत) की गरीबी बुरी हो सकती है।[२२]

इश्वरपर किया विभाजन राष्ट्रवाद और पैतृकवाद से सामना करने के बावजूद भी, सुसमाचारी और चरिस्मा/पेन्टीकोस्टल की कलीसिया बीसवी सदी के अन्त तक पश्चिम के बाहर विकसित और उन्नतिशील होती जा रही थी। जब की ''मसीही'' पश्चिम में हरएक दिन ५६०० विश्वासियों को खो चुके, और उप-सहारा अफ्रिका की कलीसिया १६४०० विश्वासियों का हरएक दिन लाभ प्राप्त कर रहे थे। दक्षिण कोरिया मे रोज छ: नई कलीसिया का रोपन हो रहा था।[२३] हां पश्चिम के बाहर कलीसयिा फूट पड़ रही थी। किस प्रकार की वह कलीसिया हो सकती है? किस प्रकार का प्रभाव वह संसार के चारों ओर बना सकती है?

कलीसिया को बड़ा नुकसान (क्षति, हानि)

उन्नीसवी और बीसवी सदीयों की कलीसिया को दु:खद हानि (क्षति) को अनुभव करना पड़ा। संसार मे कई विकसित हो रही कलीसिया और लौग मसीही होने का दावा करने के बावजूद भी कलीसिया ने उसकी संस्कृति को संघट्टित करने की योग्यता को खो दिया था।

उसने भौतिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों के मध्य में भेद को बाइबिल रहित विकसित किया- और ''वचन'' (शब्द) और ''कार्य'' (कर्म) के बीच बाइबिल रहित अन्तर को विकसित किया। उदारतावादी कलीलिया ने उसके अलौकिक ज्ञान को, धर्मग्रन्थ संबंधी अधिकार (प्रभुत्व) और व्यक्तिगत उद्धार को खो दिया। रूढ़ीवादी कलीसिया ने, सभी की सेवा करने की परमेश्वर की चिन्ता के आवेश को खो दिया।

कलीसिया लूट गई है। कलीसिया, इस विभाजन के लिए कारण नहीं है। प्रकृतिवाद वे कारण नही है। ऐतिहासिक घटनाओं ने इसे नही किया। बहुत से घटकों ने योगदान दिया, परन्तु शैतान ही विभाजन का कारण था। शैतान कलीसिया से बैर रखता है। वह उसे नष्ट (बरबाद) करना चाहता है। शैतान ने कलीसिया के दोनो हिस्सो को ''ठगाया'' है (चालाकी की है)। कलीसिया को उस क्षेत्र (प्रदेश) को वापिस लेने की आवश्यकता है जो उस से छीन ली गई है। हमारे विश्वास में हमे खरे रहो की आवश्यकता है - परन्तु हमारे निर्णयों (फैसलों) पर हमे पछतावा करना है और एकसाथ सेवा करने के रास्ते ढुंढना चाहिए। हमें प्रासंगिक होने के रास्ते ढुंढना चाहिए उनके लिए, जो आध्यात्मिक रूप से खो चुके है और उन समाज के लिए जो आध्यात्मिक, भौतिक और सामाजिक

---

[२२] रुथ कोन्वा, हस्तलिपि (हस्तलिखित) सर्वेक्षण (पेरू २००३)?

[२३] रो, ३५

रूप से टूट चुके है। एक सम्पूर्ण कलीसिया को उसके सम्पूर्ण कार्य को सुधार करने की आवश्यकता है। एक मित्र ने मुझे स्मरण दिलाया कि कलीसिया का हरएक भाग (हिस्सा) के पास, देने के लिए कुछ है: ''उदारवादी कलीसिया हमें आवश्यकता को दिखाती/बताती है, सुसमाचारी कलीसिया हमे योजना दिखाती/बताती है और चॅरिश्मा/पेन्टीकोस्टल कलीसिया हमें स्मरण दिलाती है कि परमेश्वर का वास्तव्य उससे है!''[२४]

''उत्क्रमण (उलटाव) की प्रतिवर्ती-'' कलीसिया का सामाजिक चिन्ताओं की ओर लौट आना

सामाजिक चिन्ताओं को अस्वीकार करने की सुसमाचारी कलीसिया की इस प्रथा (रिवाज) को ''विशाल (बड़ा) उत्क्रमण'' कहा गया था- मसीही कलीसिया का ऐतिहासिक सामाजिक गवाह का उत्क्रमण। अन्तः रुढ़ीवादी कलीसिया ने सामाजिक चिन्ताओं की ओर लौट आना आरंभ किया - सुसमाचार प्रचार की ओर उनका ध्यान केन्द्रीत रखते हुए। आश्चर्यजनक रूप से, इसे'' उत्क्रमण की प्रतिवर्ती'' कहा गया है।[२५]

१९६०, संसार का विरोध का दशक, रूढ़ीवादी कलीसिया को सतर्क किया (सचेत किया), सामाजिक वास्तविकताओं के प्रति जिनका उन्होने-अस्विकार किया था। विश्व सुसमाचार प्रचार पर आंतर्राष्ट्रिय काँग्रेस, एक आरंभिक मोड था जो स्वित्झरलैंड के लाँसन्ने मे १९७४ मे आयोजित की गई थी। एक सौ पचास देशों से आए भाग लेनेवाले एकत्र मिले और लॉसन्ने प्रतिज्ञापत्र का समर्थन किया, जो सुसमाचार प्रचार और मसीही सामाजिक जिम्मेदारी इन दोनो को मुख्य सिद्धान्त करके दर्ज करता है।[२६] अगला कार्य १९८२ के सभा में किया गया जिस से सुसमाचार प्रचार और सामाजिक जिम्मेदारी पैदा हुई (प्रस्तुत हुई): एक सुसमाचारी प्रतिज्ञा (वचनबद्दता)। वह सामाजिक कार्य को सुसमाचार प्रचार का परिणाम और सुसमाचार प्रचार को सेतू समान परिभाषित करता है। वे सुसमाचार के द्वारा संगठित किये गये साथी है: ''क्यों कि सुसमाचार जड़ (मूल) है, जिसके सुसमाचार प्रचार और सामाजिक जिम्मेदारी यह दोनो उसके परिणाम (फल) है।''[२७]

अगले (आगामी) साल मे, व्हीटन '८३ नामक एक मन्त्रणा थी। विश्व के चारो ओर के भाई और बहनें - सुसमाचार प्रचारक - बाइबिल सम्बन्धी तत्वों को खोज निकालने और मानवी आवश्यकता को जवाब देने के नये रास्ते बनाने के लिए मिले। मन्त्रणा यह जानना चाहती थी कि किस तरह से सर्वांगिण सेवा, सुसमाचार प्रचार और कलीसिया रोपन को संघटित करना है। मुझे उसमें सहभागी होने का और मंन्त्रण की पुस्तक मानवी आवश्यकता के प्रति कलीसिया का जवाब'' में एक पाठ लिखने का सुअवसर (मौका) मिला।[२८]

---

[२४] मेरा क्राँसमन, हस्तलिपि सर्वेक्षण (ॲरिझोनाः२००३)।

[२५] स्टॉट, २८। यह शब्द डेविड. ओ. मोबर्ग द्वारा उपयोग में लाया गया।

[२६] हार्वेस्ट जो संघटन मैं चलाता हूँ इस प्रतिज्ञा पत्र को हमारे विश्वास के वाक्तव्य जैसा इसका उपयोग करते है।

[२७] स्टॉट, ३० किले (Keele), नेशनल इव्हँजेलिकल ॲंग्लीकन काँन्ग्रेस (पूर्व सीमा यु के, फाल्कन, १९६७)?

[२८] साइन, मानवी आवश्यकता के प्रति कलीसिया का जवाब (केलिफोर्नियाः मिशन्स ॲडव्हान्सड़ रिसर्च ॲन्ड कम्युनिकेशन सेन्टर, १९८३), v,vi.

कहानी १९८३ मे खत्म नही हुई! अनेक आवाजों ने (पुकारों ने) सारी कलीसिया को सम्पूर्ण सुसमाचार की ओर लौट आने की बुलाहट को जारी रखा। दशको बाद अभी भी बहुत कुछ करना बाकी है- परन्तु बहुत से दृष्टांत तक पहुँच रहे है और बोल रहे है। बहुतों ने उत्क्रमण को विपरीत करना आरंभ किया। मैने दृष्टांत को विकसित मात्रा मे समाविष्ट होते हुए और कार्यान्वित होते देखा।... पूर्व आफ्रिका के पेन्टीकोस्टल कलीसिया में... आशिया के सेल (cell) कलीसिया में... उत्तरी आफ्रिका के सुसमाचारी कलीसिया की संस्था में... अमेरिका के बहुमुखी (विविध) व्यक्तिगत कलीसिया में... कई बड़े लाटिन अमेरिकी सम्प्रदायों मे... पूर्व युरोपयि कलीसिया के कमरों में (कोठरी में)... पॅसिफिक के चरिस्मा की सेवकाई मे... मुख्य कलीसिया जो आध्यात्मिक और सामाजिक बाहरी पहूँच से संघट्टित करती है... पूरे संसार के, यीशु के अनुयायी के जीवन शैली में।

हमें दुसरी वास्तविकता को जानने की (पहचान) आवश्यकता है। परमेश्वर अक्सर कलीसिया के अगुवों को सर्वांगिण सेवकाई के तत्वों को धर्मग्रन्थ और प्रार्थना के द्वारा खोज निकाल ने के लिए मार्गदर्शन करते है। यह एक गाँव के कलीसिया के जन्म की आश्चर्यजनक कहानी है जिसके साथ हार्वेस्ट ने १९८० काम (कार्य) किया:

एक युरोपीय सेवकाई करनेवाले ने मेक्सिको के पर्वतीय प्रदेश मे अकेले पदयात्रा की - उस क्षेत्र में जो मारीज्युआना फसल, अराजकता और मृत जागीर के नाम से जाना जाता है। उसने लोगो के साथ यीशु के बारें में बात की, और एक मनुष्य (आदमी) परमेश्वर की ओर आया (परिवर्तन हुआ)। दुसरे हप्ते, उस आदमी का बप्तिस्मा करने के इरादे से वह सेवकाई करनेवाला लौट आया। नया परिवार्तन हुआ वह व्यक्ति मारा गया था। उसने निश्यय किया था कि वह बन्दूक नही पकडेगा-और वह व्यक्ति वही था जो गाँव के परिवारों के मध्य में जो पृतिशोधी जागीर की लड़ाई मे शामिल था। उसका बाप्तिस्मा करने के बजाय, सेवकाई करनेवाले को उसका अन्तिम संस्कार करना पड़ा। हालाँकि वह मारा गाय, उसके पहले उसने एक अन्य मनुष्य (आदमी) को परमेश्वर की ओर ले आया। अन्तः यह (आदमी) व्यक्ति उस गाँव का पास्टर (धर्मगुरु) बना। सेवकाई करनेवाला फिर से रोज (हरतिन) पदयात्रा करके उसे शिष्य (चेला) बनाया- और जल्दी ही अन्य लोगों को भी बनाया। उन लोगों ने सेवकाई करनेवाले से पूछा कि कलीसिया किस तरह से आरंभ कि जाती है। उसने उन्हे कई दिनोंतक पर्वत (पहाड़) पर जाने के लिए कहां और उपवास, प्रार्थना और नये नियम को ढूंढने को कहा। उनके समाज के लिए उनके विश्वास के आशायों को भी वे जानना चाहते थे। सेवकाई करने वाले ने उन्हे आश्वासन दिया कि प्रभु उन्हे बताएगा। उसने (प्रभु) बताया। उन्हों ने वह पढ़ा जो याकूब ने अपने पत्रि मे कहा कि विधवाओं की सूछि लेना महत्वपूर्ण है। परमेश्वर ने उन्हे स्मरण दिलाया ''तुम्हारे गाँव में तुम्हारे पास सात विधवा है। पहेली बात मैं चाहता हूँ कि तुम हर एक विधवा के लिए घर बनाओ।'' यह स्त्रिया जागीर की लड़ाई और बदले के चक्र के कारण विधवा बनी। (उनके लिए घरों को बनाना एक प्रतिकूल संस्कृति थी। प्रबल माचो संस्कृति मे[२९] पुरुषों ने ही उनके स्वयं के लिए घर बनाए हो - वे अगुवे होते हुएभी - उन्होने स्त्रीयों के लिए घरों को नही बनाया था!) समाज को

[२९] माचो: बरताव के लिए एक स्पॅनिश शब्द देखा गया जैसे मरदाना तगड़ा, पौरूष, प्रबल, शक्तिशाली, आक्रमणशील, नर। माचों बरताव दया अथवा कमजोरी दिखाना टालता है।

बहुत सी बातों की आवश्यकता थी। उनके पास बहता पानी, चिकित्सालय, कलीसिया की इमारत, शौचालय, अच्छे रास्ते अथवा विद्युत पूर्ति नही थी। परन्तु प्रभु ने उन्हे पहले विधवाओं के लिए घर बनाकर उसके राज्य को प्रकट करे और उन्होंने किया। समाज के लिए यह एक धक्का था। वास्तव मे, सभी परन्तु गाँव मे एक परिवार ने मसीह पर विश्वास रखा। प्रभु ने इस कार्य को जिन्हे के चारों ओर संजीवन को अग्रणी बनाने मे उयोग किया। कलीसिया विकसित हुई, पुरुष प्रायः पर्वत की ओर उपवास और प्रार्थना करने जाते थे और गाँव मे और आसपास के क्षेत्र मे बहुत परिवर्तन आया।[३०]

आज कलीसिया मे एक नई लहर चल रही है जैसे उन्होने परमेश्वर के पूरे (सम्पूर्ण) इरादों के दूत बनना सिख लिया है। इस लहर का आत्मा का चिन्ह है। यह चिन्ह टूटे संसार मे परमेश्वर की कार्यसूचि को प्रस्तुत करने के इंतजार को उत्पन्न करता है। कुछ व्यक्ति और कलीसिया है जिनके जहाज उस लहर को पकड रहे है। यह मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर उन्हे उस लहर को एक विशालकाय हवा मे बदलने में उपयोग में लायेंगे।

अपूर्ण (अधूरी) उपासना (भक्ति) से विमुख (फिरने के लिए) होने के लिए एक पुकार

सेवकाई मे ईश्वरपरक असन्तुलन स्पष्ट था जैसे पुराने नियम के समय दूर पिछे तक था। यशायाह के ५८ अध्याय के पहले ही वचन में, प्रभु ने यशायाह को बतायाः ''गला खोलकर पुकार।'' प्रभु चाहता था। कि उसकी महान कार्यसूचि के प्रति लोगों की गलतफहमी को पूरी शक्ति से सही करे (सुधारे)। उसने यशायाह को नही बताया कि लोगों को बता - परन्तु ''पुकार ने'' को कहा। जो संदेश प्रभु (यहोवा) यशायाह के द्वारा उसके लोगों को देना चाहता था वह सामान्य संदेश नही थी। वे उसे सुनने वाले नही थे जबतक उसे पुकारकर नही कहां जाता। ''कुछ न रख छोड।'' उसने कहा। मै कल्पना कर सकता हूँ उसकी, यशायाह को आज्ञा देते हुएः ''नरसिंगे का सा ऊंचा शब्द कर! मेरे लोग यह नही सुनेंगी जबतक तु उसे अत्यधिक (अत्यन्त) शक्ति से नही करता!''

प्रभु ने फिर कहा, ''वे मेरे शब्द की ओर दिन-ब-दिन ध्यान दे रहे है।'' ऐसा लगता है कि उन्हे यहजानने के लिए इच्छुक है कि मै उनसे क्या कराना चाहता हूँ-जैसे की वे सही बात कर रहे है परन्तु केवल उसे थोडा ''निर्धारित'' करने के आवश्यकता है। नही, उन्होंने उनकी पीठ मेरी आज्ञाओं की ओर मोड ली है। ''यशायाह को अधिक सुनना थाः ''उन्होंने मुझसे न्याय मांगा, सही निर्णय मांगा। वे कहते है कि मेरे वहाँ (उनके पास) आने के लिए वे उत्सुक (इच्छुक) है। पहले वे उपवास करते और बाद मे शिकायत-करतेः ''हम उपवास कर रहे है, हम अपने आपको (स्वयं को) नम्र कर रहे है, शायद ध्यान नही दिया हो!''

यहोवा ने जारी रखाः ''तुम्हारी नम्रता के कारण ही मैंने ध्यान नही दिया - अथवा आप जो सोचते है वह मेरी आवाज के प्रति तुम्हारी नम्रता (विद्रोह) और खुलापन - पाप है। वह है। वह विदीह है क्यों कि तुम धार्मिक कार्यों मे से जा रहे है जो नम्र दिखाई देते है... जो प्रार्थनापूर्वक दिखाई (पड़ते) देते है... जो मेरे कानून (कायदे) और इरादों में अनुसन्धान (जाँच-पडताल) के समान दिखाई देते (पड़ते) है। बाहरी प्रकटन से वे भले (अच्छे) दिखाई पड़ते है। परन्तु वह विद्रोह और

[३०] बॉब मॉफिट और जॅक टेस्क द्वारा प्रस्तुत किया गया, हार्वेस्ट, १९८४।

पाप है। क्यों? वह विद्रोह और पाप है क्यों कि तुम केवल सुनने वाले हो। तुम मेरे शब्दों के (वचनों के) अनुसार करने वाले नही हो।''

इस्राएलियों ने सोचा, वे परमेश्वर (यहोवा) जैसे चाहता है वैसी उपासना (आराधना, भक्ति) कर रहे है। उन्हों ने सोचा कि धार्मिक कार्यों से वे यहोवा की आशिष प्राप्त करेंगे , उपवास करके। उनके पास उसका ध्यान था परन्तु उसकी मंजूरी नही। उनके प्रश्न ने उनकी प्रेरणा (प्रयोजन) को प्रकटित किया। उन्होंने शिकायत (फरियाद) की जब उन्होंने यहोवा की आशिष का चिन्ह नही देखा। यहोवा ने उत्तर दिया: ''जैसा उपवास तुम आजकल रखते हो, उससे तुम्हारी प्रार्थना ऊपर नही सुनाई देगी।''[३१] लोगों के प्रति ''नम्रता'' के धार्मिक कार्यों से यहोवा प्रसन्न नही था जो दुसरों के साथ दया और न्याय से पेश नही आते (बरताव नही करते)। उपवास की विधी अवलोकित की गई थी, परन्तु निःस्वार्थ पणा की अभिव्यक्ति - प्रेमी सेवा-नामौजूद (अनुपास्तित) थी। कई पिढ़ीयों के पश्चात (बाद), यहोवा उसके सहन करने वाले सेवक को इस्राएलियों के मध्य में भेजेगा। सभी नही जो उसे परमेश्वर कहते है, यीशु समझाएगा, कौन राज्य मे प्रवेश करेगा। बजाय इसके वे उसे कहते हुए सुनेंगे : ''हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ।''[३२] उसने उन्हें क्यों कहा? उन्हों ने उसके आदेश को सुना, मै तुम्हे नही जानता परन्तु उन आदेशों का अनुकरण नही किया।

यहोवा अस्वीकार्य (अप्रिय, अस्वीकृत) आराधना को क्या मानता (समझता) है यह यशायाह ५८ मे एक स्पष्ट प्रस्तावन (परिचय) के बाद, यहोवा जिस प्रकार की उपासना वह चाहता है उसने उसे समझाना जारी रखा। यह वचनों के तीन जोडीयों मे अथवा द्विपदी मे दिखाई देता है (प्रकट होता है)। प्रत्येक (हरएक) द्विपदी में, यहोवा स्वीकार्य उपासना के कार्यों को समझाता है - उपयुक्त (उचित) उपासना के आशिषों से अनुकरण किया गया:

- पहली द्विपदी, मे यहोवा ने कहा कि खरी (सच्ची) उपासना शक्ति हीनों (लाचार मजबूर) के भौतिक और सामाजिक टुटेपण की सेवा को सम्मिलित करता है। फिर वह प्रतिज्ञा करता है, वह इस्राएल के स्वयं के टुटेपण को स्वस्थ (चंगा) करेगा, जैसे लोग उसकी आज्ञा को मानते।

- दुसरी द्विपदी मे, यहोवा ने कहा कि खरी (सच्ची) उपासना (आराधना) मे सम्मिलित है लोगों के बीच मेल-मिलाप, और शक्तिहीनों (लाचार, मजबूर) की चिन्ता (देख-भाल) की आवश्यकता को समर्थन किया। फिर धर्मग्रन्थ के एक अति सुन्दर शब्द-चित्र में, उसने चंगाई को अभिवचन दिया।

- तिसरी द्विपदी में, परमेश्वर ने आध्यात्मिक विश्रामदिन के कार्यों के रिवाज (अभ्यास) का समर्थन किया। तथापि, आध्यतिमक कार्य प्रेम की अनुपस्थिती में अस्वीकार्य है। विशेष रूप से जो विश्रामदिन का सम्मान (आदर) करते है उन्हें अपने स्वयं के रास्ते से नही चलना है और दुसरों के विरोध मे ''व्यर्थ शब्द'' नही बोलना है। यहोवा ने फिरसे आनंद (हर्ष)

[३१] यशायाह ५८:४ ब

[३२] मत्ती ७:२३ ब

पुनरुद्धार और उत्तराधिकार का अभिवचन दिया यदि वे उसकी सुनते और आज्ञा का पालन करते।

यशायाह ५८ हमे खरी (सच्ची) आध्यात्मिक उपासना का सन्तुलित सर्वेक्षण (विचार) देता है। वह कर्तव्य (कर्म) और कानून की बाहरी (बाह्य) अभिव्यक्ति नही है, परन्तु वह मन (हृदय) का भीतरी व्यवहार (अभिवृत्ति) है जिसका परिणाम यहोवा और अन्य लोगों की सेवा करने मे होता है। यशायाह ५८ हमें ''पुकारता'' है कि वह धार्मिक अवस्था का प्रदर्शन करनेका विद्रोह है यहोवा की आज्ञा का पालन करने के बगैर। प्रेरित पौलुस ने तीमुथियुस को जिन के पास ''भक्ति का भेष'' है और जो ''सदा सीखती तो रहती है पर सत्य की पहिचान तक कभी नही पहुंचती''[३३] इन पर जौकन्ना (सतर्क) रहने को सचेत किया। शैतान को हमे हमारी धार्मिकता पर ध्यान केंद्रित करना प्रिय लगता है। यदि वह ऐसा कर सकता है, तो वह यहोवा के इरादोंको नष्ट कर रहा है। लोग सोचते है कि वे यहोवा की उपासना (भक्ति) कर रहे है, परन्तु सेवा के बगैर धार्मि कार्य अस्वीकार्य है। वह पाप है। यदि लोग धार्मिक कार्य के द्वारा उपासना (भक्ति) करने का प्रयत्न करते है-सेवा के लिए यहोवा की अपेक्षा से अनजान (बेखबर)- वे अनजाने मे पाप करते।

मेरा विश्वास है कि इस प्रकार के अज्ञानकृत पाप आज की कलीसिया में विद्यमान (अस्तित्व) में है। अज्ञानकृत पाप को पश्चाताप और बदलाव (परिवर्तन) की आवश्यकता है। मैं इस प्रकार के जवाब का मुझाव देता हूँ:

- पहला जैसे पवित्र आत्मा कलीसिया के अगुवों को और सदस्यों को पश्चाताप की ओर बढ़ाता (खींचता) है, वे स्वीकारते है कि यहोवा को योग्य उपासना (भक्ति) देने मे विश्वासी नही थे - चाहे वह अज्ञान (अनभिज्ञता), उदासीनता, अथवा आज्ञाभंग से हो।
- दुसरा, उन्हो ने पवित्र आत्मा को, विदेशी क्षेत्र (प्रदेश) में उसके राजदूत के समान कलीसिया की भूमिका के लिए यहोवा के इरादों के एक ताजे (नये) प्रकटन को माँगा।
- तिसरा, वे आज्ञापालन करते है जो उन्हे यहोवा की कार्यसूचि के बारें मे (विषय मे) जो (जानते) समझते है। व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से, उन्हों ने उनके समाज के भौतिक सामाजिक और नैतिक टुटेपन को सच्चाी से (ईमानदारी से) जवाब दिया।

सारांश में

यीशु अपेक्षा करते है कि जबतक वह आए तबतक कलीलिया को ''काम'' मे लाए (निवास करें)।'' काम मे लाने का मतलब ''कार्य करना।'' मतलब है साक्रिय रूप से प्रस्तुत करना, यीशु क्या करते यदि वे महापौर होते:

- कलीसिया ''काम'' करती है, व्यक्तियों को सज्जित करते हुए समाज मे आगे बढ़ाके - उनकी जीवन शैली और संभाषण से विश्वास उत्पन्न करना (समझाना, राजी करना) कि यहोवा का मार्ग समाज की भलाई के लिए है।

[३३] २ तीमुथियुस ३:५-७

- कलीसिया सामूहिक हस्ती (अस्तित्व) के समान भी स्वयं को संघबद्ध करती है - समाज मे टुटेपन को चंगा (स्वस्थ) करनेवाले के समान आगे बढ़के।

हरएक स्थानीय कलीसिया, हरएक पास्टर (धर्मगुरू), और हरेक सदस्य को यहोवा के अधिक महान कार्यसूचि की सेवा करने को ावश्यकता है, आगे बढ़के और अनेक प्रकार के कार्यों को करना यदि यीशु महापौर होते। कलीसिया को हर एक संस्कृति मे, कैसे उसके सन्दर्भ सामाजिक और भौतिक सेवकी को प्रभावित करते है यह सोचना आवशय्क है। लाटिन अमेरिका की रोमन कॅथेलिक जडे (मूल) मजबूत है और धर्मविज्ञान सन्तुलन को अनावरण (रहस्योद्घाटन), जो उसके सुसमाचार प्रचार और सामाजिक चिन्ता संबंध को रूप देती है। आफ्रिकी मसीही लोगों को उनके संस्कृति की जड़ावादी जड़ों (मूल) को ध्यान में रखना होगा, जैसे वे सम्पूर्ण व्यक्ति की सेवा करते है। आशिया को, भारी भुखमरी; सुसमाचार न सुने हुए लोग और सरकार के विरोध पर विचार करना है (सम्पर्क करना है)।[३४] इसलिए अमेरिकी लोग व्यक्तिवाद (व्यक्तित्व) को संजोए रखते है ताकि कलीसिया सभी की भलाई (अच्छाई) की चिन्ता को लगातार उत्तेजित करे।

परन्तु मसीह सबका परमेश्वर है! बाइबिल सम्बन्धी भाव मे परिवर्तन नही होगा, नही होगा, जब तक कलीसिया मसीह का प्रभुत्व है व्यक्तिगत और समाज के जीवन मे, दोनों घोषित और प्रदर्शित कर रही है तब तक परिवर्तन को पूरा करते रहे। संसार के पास, यहोवा की करुणा को समझपाना कठिन है जब तक वह सुनता नही और यहोवा के प्रेम को अनुभव करता नही। कलीसिया के लोग मसीह के प्रेम के आत्मिक, सामाजिक, और भौतिक रूप से उनके समाज के लिए ऐसे सम्मोहक गवाह होना चाहिए कि जो सब उन्हे देखें वे कहेंगे: ''कितना प्रेमी और महान यहोवा (परमेश्वर) है इन लोगों का!''

[३४] रो, ३६-३८

कलीसिया की विशेषताएँ
जो परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करती है

८

कलीसिया का एक वैभवशाली उद्देश्य है - सभी व्सतुओं की पुनःस्थापना के लिए परमेश्वर की कार्यसूचि को समर्थन करना और विकसित करना। यह साधारण (अल्प) कार्य नही! कलीसिया जो परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करती है उन्हे परमेश्वर की शक्ति और चरित्र होना अनिवार्य है। वे लाभदायक होना आवश्यक है। उन्हें चिजों की परवाह करना आवश्यक है जो यीशु के हृदय (दिल, मन) पर और कार्यसूचि पर एक महापौर होने के नाते होती है। पूर्व के पाठ में हमने देखा कि प्रेरित पौलूस ने किस तरह इफिसियों को कलीसिया की मुख्य भूमिका के विषय में बताया। अभी जब हम फिर से इफिसियों को उसके पत्री में उससे मिल रहे है, हम चार विशेषताओं को अरक्षित छोड रहे है कि हमे - कलीसिया - आवश्यक है यदि प्रभावकारी रुप से हमारा उपयोग महापौर की सेवा मे होने जा रहा है:

- नम्रता
- प्रेम
- सेवा के कार्य
- एकता

यह ''उपयोगिता की विशेषताएँ'' है। इनके संग परमेश्वर की कार्यसूचि मे कलीसिया उपयोगी और प्रभावकारी है। इसके बगैर सार्वभौम (व्यापक) और स्थानीय कलीसिया चिन्ह (निशान) को चूक जाएगा।

नम्रता की विशेषता (इफिसियों २:१-९)

इफिसियों के दुसरे अध्याय में, पौलूस हमें हमारी उत्पत्ति का स्मरण दिलाता है। हम - और टटा हुआ बाकी संसार - परमेश्वर के क्रोध के अवज्ञाकारी पात्र थे। परमेश्वर की महान दयालूता के कारण हमे बचाए गए है। हमारे बचाव को हमारे योग्यता अथवा कार्यों के साथ कुछ लेना देना नही है। हम ारे लिए परमेश्वर की जो भी भूमिका है, वह कुछ ऐसी है कि उसे हमें बड़ी नम्रता (दीनता) के साथ ग्रहण करना है और आगे बढ़ाना है। परमेश्वर ने कलीसिया को जो भूमिका दी है उसे उचित (योग्य) बनाने के लिए हमने ऐसा कुछ भी नही किया, कर रहे है अथवा करेंगे - और हम अभी भी लडखड़ाने मे समर्थ (योग्य) है दुसरों के साथ स्वार्थी बरताव (व्यवहार) करते, और हमारे परमेश्वर पर फिसी तरह से परावर्तीत होते है। उसके कार्य के समय (मध्य में) कलीसिया ने नम्रता को पहनना (आवरण डालना) चाहिए। हमने हमारी भूमिका को प्राप्त नही किया है - वह परमेश्वर की देना (कादान) है। पौलूस लिखा है हम (शखी बधारने) (डिंग मारने) घमण्ड करने के लिए पूर्णतया अयोग्य है:

क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नही, बरन परमेश्वर का दान है- और न कर्मो के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करें।[१]

कलीसिया में हमारी प्राथमिक बुलाहट के नाते, नम्रता हमें नेतृत्व की प्रतिष्ठा को देखने के लिए दूर रखेगी। दक्षिण अमेरिका के एक पढ़ानेवाला सहकर्मी स्पष्ट करता है:

> जब मैं गुरुकुल के मेरे विद्यार्थीयों को (छात्रों को) उनके बुलाहट के विषय में पूछता हूँ तो कुछ छात्र उनके नेतृत्व के प्रतिष्ठा का उल्लेख करते है। और मैं फिर से वही सवाल करता हूँ, अलग शब्दों का उपयोग करके उनको आगे बढ़ाने के लिए जहां उनका मन (हृदय) है। वे अक्सर कहते है ''आह!'' मेरा हृदय (मन) टूटे हुए परिवारों के लिए है। ''मेरा बच्चों के लिए है।'' ''मेरा हृदय (मन) नशीली दवाओं के जो अधीन है उनके लिए है।''[२]

लोगों के लिए यह (मन) हृदय परमेश्वर की ओर से दान है। जिन्हे बुलाया गया है उन्हे घमण्ड करने का कोई कारण नही है परन्तु उस हृदय से (मनसे) सेवा करें जो परमेश्वर उन्हें देता है! नम्रता ..... कलीसिया के लोगों की मदद भी करती है और सेवा करती है।

प्रेम की विशेषता (इफिसियों ३:१७-१९)

इफिसियों १ में पौलुसु ने लिखा कि कलीसिया एक ''उसकी परिपूर्णता है जो सब मे सबकुछ पूर्ण करता है।''[३] तुम सोच सकते ''कलीसिया जो मैं जानता नही - वे संघर्ष (फूट) से भरी हुई है। यह कहा तक सच है?'' पौलूस यह इफिसियो ३ मे स्पष्टीकरण करता है जब वह पूर्णता को लिखता है:

और मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि तुम और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड पकडकर और नेव डालकर सब पवित्र लोगों के साथ भली भांति समझने की शक्ति पाओ कि उसकी चौडाई, और लम्बाई, और ऊंचाई, और गहराई कितनी है। और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है, कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ।[४]

पौलूस जानता था कि प्रेम ही परमेश्वर की पूर्णता है। यह प्रेम बहुत उंचा गहरा, चौडा और लम्बा है। वह हमारी योग्यता को उसे समझने के लिए श्रेष्ठ होता है (आगे बढता है)। क्यों कि वह परमेश्वर का प्रेम है वह विशाल (बहुत बड़ा) प्रेम है। उसकी टूटी हुई सृष्टि को सुधारने के लिए वह उसके (परमेश्वर) कार्यसूचि का कोने का पत्थर है। सही रूप से, परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया।[५] यह प्रेम एक सम्मिलित करनेवाला (घेर लेनेवाला) प्रेम है। पौलुस ने प्रार्थना की कि हमने कलीसिया ने, परमेश्वर के महान प्रेम मे मसीह के प्रेम को और पूर्णता को व्यक्त करने के लिए जड पकडना चाहिए और स्थापित होना चाहिए।

---

[१] इफिसियो २:८-९

[२] रूथ कोन्या, हस्तलिपि पुनरवलोकन (पेरू:२००३)

[३] इफिसियों १:२३

[४] इफिसियो ३:१७-१९

[५] युहन्ना ३:१६ (KJV)

कलीसिया हमेशा (अख्सर) इस महान (वैभवशालि) प्रेम को परावर्तित नही करतात, परन्तु अपनी ज्ञाकारिता के द्वारा उसे संभव है। विश्वास के द्वारा कलीसिया बचाई गई हैं परन्तु आज्ञाकारिता के द्वारा पवित्र की गई। यीशु ने कहा: यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम मे बन्धे रहोगे; जैसा की मैने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूँ।[६] हम मसीह की आज्ञा का पालन करना है, जैसे उसने अपने पिता के आज्ञा का पालन किया। जैसे हम इसे करते है तो हम परमेश्वर और मसीह पूर्णता और प्रेम को परावर्तित करते है। ये वही प्रेम है जो सृष्टि बनाते समय परावर्तित हुआ था। ये वही प्रेम है जो हम पर खुले हाथो किया गया था जब मसीह ने हमे छुडाया था। जब कलीसिया इस प्रेम को परावर्तित करती है, परमेश्वर की सामर्थ प्रवर्तित होती है, कलीसिया के लक्ष्य के लिए उपलब्ध होती है। कलीसिया परमेश्वर के प्रेम और पूर्णता को परावर्तित करती है, जब उसके सदस्य परमेश्वर के प्रेम से दुसरों को जानबूझकर स्पर्श करते है।

अच्छे (उत्तम) कार्यो की विशेषता (इफिसियों २:१०, ४:११-१२)

एलान (घोषणा) और प्रदर्शन (प्रमाण) ये दोनो भी उसकी पूर्णता मे सुसमाचार को पहूँचाने (संचारित करने) के लिए आवश्यक है। ''घोषणा''-प्रवचन अथवा शिक्षा (अध्यापन) - अनिवार्य है। मद्यापि जब तक वहां ''प्रदर्शन'' भी नही है संदेश (संदेसा) में अटकाव (विघ्न रूकावट) है। ''प्रदर्शन'' यह परमेश्वर के प्रेम के सुसमाचार का एक व्यावहारिक अभिव्यक्ति है। वह परमेश्वर की वास्तविकता को प्रदर्शित करता है और संदेश को मान्य करता है (अनुसमर्थन करता है)। हम कलीसिया को, विशेष अच्छे कार्य करने के लिए मसीह में जीवित बनाया गया है जो परमेश्वर ने हमारे लिए सृष्टि के आरम्भ से तैयार किया था। संयोग से कलीसिया को अच्छे कार्य करना है जिसे परमेश्वर ने उसके लिए निश्चित (विहित) किये थे -न की वो अच्छे कार्य जो कलीसिया स्वयं उसका चयन करती है और बाद मे परमेश्वर से उसे आशिषित और मंजूर करने को कहती है! प्रेरित पौलूस ने लिखा:

> *क्योंकि हम उसके बनाए हुए है; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिए तैयार किया।*[७]

भले (अच्छे) कार्य सुसमाचार के अनिवार्य घटक (अंग) है। वे व्यावहारिक ऐसे मार्ग है जिसमे परमेश्वर के द्वारा उसकी कार्यसूचि को सम्पादित करने और सभी के मेल मिलाप करने के लिए कलीसिया को उपयोग मे लाया जाएगा:

- उनका अविष्कार होता है जैसे कलीसिया उसका सिर (प्रमुख) मसीह के साथ सम्पर्क में रहती है।
- उनकी पहचान होती है जैसे कलीसिया परमेश्वर की कार्यसूचि को तलाशती (खोजती) है और उस पर कार्य करती है।

---

[६] युहन्ना १५:१०

[७] इफिसियों २:१०

- कलीसिया मे अथवा कलीसिया के चारों ओर महसूस की हुई आवश्यकताओं का विश्लेषण से उनका आरम्भ नही होता। उन्हे मसीह के प्रकटन के द्वारा पहचान जाता है। जो महसूस की हुई आवश्यकता और वास्तविक आवश्यकताओं के बीच का फरक (भेद) जानता है।[८]
- वे भले (अच्छे) कार्य नही है जो कलीसिया निश्चित करती है और फिर परमेश्वर को उन्हे आशिषित करने को कहती है।
- कार्य जो परमेश्वर पहचानते है निर्देशित करते है और उनका अधिकार देते है इन कार्यो को वह आशिषित करेंगे और उसकी कार्यसूचि को सम्पादित करने मे उसका उपयोग करेंगे।

पौलूस कलीसिया के अगुवों के लिए पाँच सेवकाई के वर्शीकरण को लिखा है- प्रेरित (प्रचारक), भविश्यक्ता, सुसमाचार सुनाने वाले धर्म गुरू (पुरोहित) और शिक्षक। उसने लिखा हालाँकि सभी के लिए एक ही अतिमुख्य कार्य का वर्णन है: परमेश्वर के लोगों को सेवा के काम के लिए सिद्ध करना।''[९] कलीसिया के अगुवों की सेवा दान अधवा बुलाहट जो भी हो उसका परिणाम परमेश्वर के लोगों को भले कामों के लिए साज्ञित (सिद्ध) करने वाला होना चाहिए। इस परिच्छेद का तात्पर्य (आशय) स्पष्ट और चुनौतिपूर्ण दोनो है: *यदि कलीसिया के अगुओं का काम सेवा करने के लिए सदस्यों को सज्ञित (सिद्ध) करने में इसका परिणाम नही होता तो उन्हों ने उस कार्य को परिपूर्ण नही किया जो उन्हें निर्धारित किया गया था।*

जब तक हम मसीह के दासपण को परावर्तित नही करते तो सुसमाचार अधूरा है। पौलूस ने लिखा *''क्यों कि हम अपने को नहीं, परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं, कि वह प्रभु है; और अपने विषय में यह कहते हैं, कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक है।''*[१०] जिस सुसमाचार मे कार्य सम्मिलित नही है वह सम्पूर्ण सुसमाचार नही है। उसमे व्यक्ति परिवर्तन की सामर्थ हो सकती है परन्तु उसमे समाज को परिवर्तन करने की सामर्थ का अभाव होगा। केवल सम्पूर्ण सुसमाचार में ही यह दोनो बातें करने की सामर्थ है। मै तुम्हे अपने आपसे पूछने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ:

- क्या हमारी कलीसिया पने लोगों को भले कामों के लिए सज्ञित (सिद्ध) करती है?
- क्या हमारी कलीसिया भले कामों के लिए जानी चाती है?
- क्या परमेश्वर को, हम भले कामों को चुनकर हमे निर्देश देने के लिए हम अनुमति देते है?

एकता की विशेषता (इफिसियों ४:१-६, १२)

चंगाई की अन्त:शक्ति (संभावना) जो परमेश्वर ने अपनी कलीसिया मे निर्माण की है, उसे संसार (दुनिया जगत) के लोगों को एकसाथ लेके आने मे अविश्वसनीय सामर्थ है अन्यथा (नही तों) वे जातीय, जनजातीय, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और, राजकीय भेद विभाजित हो गए होते। इन

---

[८] आवश्यकताओं का विश्लेषण उपयोगी हो सकता है, परन्तु वह कलीसिया के निर्णयों के पिछे प्रेरक बल नही होना चाहिए।

[९] इफिसियों ४:१२ अ

[१०] २ करिन्थियों ४:५

विभाजन को (बॅटवारे को) चंगा करने की कलीसिया की सामर्थ, परमेश्वर की कार्यसूचि का हिस्सा (भाग) है, और यह कलीसिया के लिए उसके उद्देश्य का एक हिस्सा (भाग) है। उस उद्देश्य को केवल तभी अनुभव किया जाता है, जब कलीसिया स्वयं एकत्व और एकता में रहती है। पौलुस इफिसुस की कलीसिया को एकता में रहने की प्रार्थना (बिनती) करता है:

> *तुम से बिनती करता हूँ कि जिस बलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य जाल चलो। अर्थात सारी दीनता और नम्रता सहित और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो। और मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो। एक ही देह है, और एक ही आत्मा एक ही आशा है, एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बापतिस्मा और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है।*[११]

फिर उसने एकता और सेवा के कामों के बीच के सम्बन्धों को स्पष्ट किया। पौलुस ने लिखा कलीसिया के अगुओं को ''*परमेश्वर के लोगों को सेवा के काम के लिए तैयार करें ताकि मसीह की देह उन्नति पाए और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाए।*''[१२]

मसीही एकता का दान और कार्य इन दोनो समान वर्णन किया गया है।[१३] कितना सच। मसीह की देह में एकता देखने मैं तरसा हूँ। बरसों से (सालों से) .... कलीसिया को सिद्धान्त सम्बन्धी निर्णयों पर सामंजस्य (सर्वसम्मति) प्राप्त करने के लिए मैंने कलीसिया को सभाओं का आयोजन करते हुए देखा। कभी कभी, बडे बडे विभाजन का परिणाम हुआ। तथापि हमारे इन प्रशिक्षण सम्मेलनों में, परमेश्वर ने हमें दिखाया हैं कि उसके लोगों के लिए एकता का प्राप्त करने के विश्वस्त (अचूक) मार्ग है सेवा के कामों को करना - एकसाथ।

हामारे प्रशिक्षण सम्मेलनों की स्थानीय कलीसिया को उनके समाज मे परमेश्वर के प्रेम को प्रदर्शित करने के लिए रूपरेखा बनायी गयी है। स्थानीय कलीसिया के अगुवों सम्मेलनो मे उपस्थित थे और वे साम्प्रादायिक पार्श्वभूमि के विस्तृत वर्णक्रम से आते है। जैसे वे एक दुसरे के उसपार बैठते है, मै सुनता हूँ, हम एकदूसरे को प्रतिष्ठा के कारण जानते है, परन्तु हम कभी नही मिले। हम रुढ़िवादी परतमूँहवाले भाई है। क्यों कि तुम (आप) उदारतावादी बापतीस्मा दाता है, हम एकसाथ होने का कारण नही देखा ..... हम ने हमारे पूरे जीवनों में (जीवनभर) उसी शहर में सेवकाई की थी।'' फिर भी वे वहां है। यह सीखते हुए कि परमेश्वर के प्रेम को टुटे हुए संसार (जगत) में एकसाथ मिलाकर, कलीसिया किस तरह सें प्रदर्शन कर सकती है, उनके ईश्वरपरक मतभेद रहने के बाबजूद भी।

उपयोगी बनने के लिए कलीसिया को एकता के विशेषता की आवश्यकता है। नही तो भी कलीसिया व्यक्तियों से तैयार गई है जो कभी एकदूसरे से विमुख थे - गैर यहूदी से यहूदी, विदेशीयों से स्वदेशी सम्मिलित लोगों से बहिष्कृत लोग। भले ही, मसीह में हम एक नये समाज के समान बनाए

---

[११] इफिसियों ४:१-६

[१२] इफिसियों ४:१२-१३ अ

[१३] ब्लोएस्क, कलीसिया का सुधार, *१८१*

गए है परमेश्वर के परिवार के सदस्य, पवित्र मन्दिर के समान एकसाथ बाँधे गए, एक जीवित ..... (इमारत) जहा परमेश्वर स्वयं रहते है। पौलुस हमे एकता के शब्द चित्र देता है: ''एक में दो'', ''एक नया मनुष्य,'' ''संगी (साथी) नागरिक'', ''एकसाथ बनाए गए।''[१४] वह कलीसिया को एकता में रहने का अनुरोध करता है। प्रारंभिक समाज में हमारे पास एक आदर्श (नमूना) है, त्रियेक परमेश्वर - पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। निगरानी (चौकसी) करनेवाली दुनिया (संसार) मसीही लोगों की एकता के अभाव को पाखण्ड के समान सही न्याय करती है शैतान वही पसन्द करता है जब परमेश्वर का परिवार (कुटुम्ब) बाहर में एकता के अभाव को, एक सफाई (बहाना क्षमाहेतु) समान परमेश्वर को, कलीसिया को और कलीसिया के भले कॉमों को दूर करने (अस्वीकार, टालदेना) मे उपयोग करता है। कलीसिया के बाहर यदि परिवर्तनीय सामर्थ का अभाव है, तो इसका जबाब ढुँढने का पहला स्थान है कलीसिया के अन्दर। बायबिल सम्बन्धी एकता हरएक (प्रत्येक) कलीसिया के बीच में आरम्भ होनी चाहिए। कलीसिया के अन्दर एकता की अभिव्यक्ति स्थानीय कलीसिया के बीच में एकता को आगे बढ़ाएगी। उपयोगिता के लिए एकता एक अनिवार्य (जरूरी, आवश्यक) विशेषता है। एकता का शाक्तिशाली (प्रभावशाली) प्रदर्शन पाया जाता है जब कलीसिया मसीह को सेवा के लिए उसकी बुलाहट का (आज्ञा) पालन करती है। कलीसिया की एकता की अन्तःशक्ति संसार (दुनिया) के किसी अन्य हस्ती (अस्तित्व) से अधिक शक्तिशाली (प्रभावशाली) है।

परिपक्वता की ओर बढ़ना

इफिसियों हमें बताता है कि नम्रता, प्रेम और सेवा का और एक गौण उत्पादन ''परिपक्वता'' है। यह परिपक्व ''दिमागीज्ञान'' पुद्धिवाद अथवा सिद्धान्त-सम्बन्धी समझ से कई अधिक है। कलीसिया के परिपक्व लोग परमेश्वर के सत्य के विषय कई अधिक जानकार (सुविज्ञ) है। वे मसीह में गहरी से जड़ पकडे हुए है और वे उसके (मसीह के) राज्य के संदेश और सुसंगति का प्रदर्शन करते है।

मसीही परिपक्वता को विकसित करने शिष्यता के कार्यक्रमों को अभिप्रेत किया जाता है परन्तु ऐसे कई कार्यक्रम मसीह के अनुकरण करने के जो ''सीधे'' पहलूओं पर अकेले सकेंद्रित करते है- बायबिल अध्ययन, प्रार्थना मसीही चरित्र (स्वभाव) और पवित्र जीवन। वे भले कामों को नही करते- यही अनिवार्य ''सपाट'' आवश्यक घटक है जो पौलूस ने परिपक्वता के लिए कहे थे। शिष्यता के साहित्य अक्सर अपेक्षा करते है कि परिपक्वता आध्यात्मिक ज्ञान और आध्यात्मिक क्रिया से आती है, कार्योंपर समान (बराबर, तुल्य) जोर दिए बगैर। बहुत कुछ इसी तरह, शिष्यता के इन कार्यक्रमों के विकास कार्यो का महत्व जानते है। वे जानते है कि परमेश्वर से और पडोसि से प्रेम रखना ''कानून और भविश्यद्वक्ता'' का संक्षिप्त विवरण (सारांश) है।[१५] आखिरकार मैने पाया कि उनके लिखित साहित्य, दुसरों के लिए परमेश्वर के प्रेम के व्यावहारिक प्रदर्शन पर यदि कोइ कमजोर (बलु) है-एक बहुत ही बदनसीब (अभागा) गलती (असावधानी)।[१६] हालाँ कि, हमने देखा, बायबिल कहती है

---

[१४] इफिसियों २:११-१२, चयन किया।

[१५] मत्ती २२:४०

[१६] हमें जैसे ''सर्वांगिण चिन्ता'' (परवाह) के संदर्भ के साहित्य मिले, जहां छोटे समूह के सदस्यों को एक दुसरे के लिए व्यावहारिक सेवा अर्पण करने के लिए अनरोध किया गया। यह भला (अच्छे) है, परन्तु यह केवल छोटे दायरे के .... में ही सेवा करती है। हमे हमारे मसीही दायरों के बाहर में भी सर्वांगिण सेवा करने की आवश्यकता है विशेष रूप से हमारे प्रभाव के क्षेत्रों में।

कि कलीसिया के अगुओ ने ''परमेश्वर के लोगों को सेवा के कार्यो के लिए तैयार करना है।'' इस प्रकार परमेश्वर के तैयार लोग ''परिपक्व बनते है, मसीह की परिपूर्णता को सम्पूर्ण परिमाण को प्राप्त करना।''[१७]

परिपक्वता के लिए ग्रीक शब्द मनुष्य के सामर्थ को उसके विकास के ऊँचाई से संबंधित है। पवित्र आत्मा ने प्रेरित पौलुस के द्वारा कलीसिया को इस तरह (प्रकार) की सामर्थ और परिमक्वता ुसे पाना चाहिए, यह बताया। वह कार्य करने का एक गौण-उत्पादन है जो परमेश्वर ने तैयार किया और नम्रता और प्रेम के द्वारा जिसे संभव किया। अन्तिम परिणाम एकता परिपक्वता और मसीह की परिपूर्णता। मैं इसे गणितीय समीकरण मे संक्षिप्त करना पसन्द करता हूँ:

नम्रता

+ प्रेम

+ सेवा के कार्य

= एकता

+ परिपक्वता

+ मसीह की परिपूर्णता

एक आन्तरिक रूप से सुसंगत जीवन शैलि - नम्रता, प्रेम और सेवा

जैसे पौलुस इफिसियों को उसके पत्री के प्रेम के व्यावहारिक प्रयोगा का वर्णनकरते हुए समाप्त करता है, वैसे इसे हम जारी रखे।

पौलुस चाहता था उसके वाचक एक आन्तरिक रूप से सुसंगत जीवन शैलि को प्रस्तुत करें। प्रेम और सेवा के मूलत्व मसीह की देह के अन्दर और वैसे ही कलीसिया की वीवारों के बाहर भी परिचलित होना चाहिए। वे कलीसिया के लोगों के सुसंगत जीवन शैली का हिस्सा (भाग) होना चाहिए। यदि कलीसिया का भीतरी (आन्तरिक) जीवन परमेश्वर के प्रेम से रहित है, वहां सभी बातोंपर परिवर्तन का कम प्रभाव होगा। जीवनशैली के मूलतत्वों को लिखने के पश्चात, पौलुसने फिर मूलतत्वों का व्यावहारिक प्रयोग दिया - ताकि उसके वाचक एकता, परिपक्वता, और मसीह की परिपूर्णता में बढ़े जैसे वे नमृता, प्रेम और सेवा का परिचालन करते है। यहाँ उसके उनके लिए निर्देश (सुचना) है - और हमारे लिए भी:

- परमेश्वर की धार्मिकता और पवित्रता परावर्तित करें। देह की कामूक इच्छाओं को संतुष्ट करने के लिए उन्हेनाढूँढ़। (खोजना, तलाशना)
- सच बोले। एक दूसरें के साथ झूठ ना बोले।
- हररोज (हरदिन) एक दूसरे को क्षमा करें।

---

[१७] इफिसियों ४:१२-१३

- मेहनत करे और जिन्हे जरूरत हो ठन्हे दें। जो अपना नही है उसे न लें।
- केवल वही कहे जिसे दुसरों का गठन हो। ऐसी बातें न कहें जो दूसरों को घटाती (कम करती) है।
- पवित्र आत्मा को अनुवचन दें। परमेश्वर की आत्मा को दु:ख न दें।
- कृपा और करुणा के साथ दुसरों को क्षमा करें। उनके विरोध मे दुर्भाव न रखें अथवा बुराई का चिन्तन ना करं।
- परमेश्वर जो प्रेम है उसका अनुकरण करें और मसीह के त्यागमय प्रेम को परावर्तित करें।
- ऐट्रिक अनैतिकता और लालच के किसी भी संकेत से दूर रहे (बचे)।
- तुम्हारा संवाद (वार्तालाप) धन्यवाद-ज्ञापन के साथ होने दें।
- ऐसे संवाद (वार्तालाप) से दूर रहे जो अश्लीलता, अशिष्ट अथवा जो दूसरों को घटाती (कम करती) है ऐसे परिहास से दूर रहें।
- याद (स्मरण) रखे कि अशुद्धता और लालच मूर्तिपूजा है और जो इनका चयन (चुनाव) करते है उन्हे परमेश्वर के परिवार मे (कुटुम्ब मे) मीरास नही है।
- आज्ञाभंग के कार्यों का चुनाव (चयन) न करें। बजाय इसके उनका भण्डाफोड करें।
- प्रत्येक (हरएक) सूवसर के भण्डारी बनें जो परमेश्वर तुम्हे उसकी इच्छा प्रत्येक ..... पूरा करने के लिए देता है।
- मद्यसार का दुरुपयोग न करें। बजाय इसके परमेश्वर की आत्मा से भर जाएँ।
- परमेश्वर के वचन को एकदूसरे के साथ बाँटे। अपने हृदय (दिल) मे एकसाथ आध्यात्मिक गीत गाएँ।
- तुम्हारे (आपके) जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परमेश्वर की अशिषों के लिए धन्यवादी-ज्ञापन की आत्मा के साथ यह करें।
- अपनी योजनाओं पर बल न देना। मसीह के आदर में से एक दूसरे के आधीन रहें। परिवार इसका उदाहरण है। पत्नियों अपने पति के आधीन रहों। पतियों, जैसे मसीह ने अपने आपको उसकी दुल्हन, कलीसिया को दे दिया, उसका आदर्श (नमूना) बनो। बालकों अपने माता-पिता के आज्ञाकारी (आधीन) बनो। बच्चेवालो तुम्हारी अपेक्षाओ को विवेकी (सन्तलित) बनाओं और अपने बालकों को शिक्षा दो ताकि वे मसीह के राज्य के बालकों के समान जिए।
- मजदूरों दूसरों की सेवा करो जैसे तुम स्वयं मसीह के लिए कार्य कर रहे हो। तुम्हारा अन्तिम (आखरी) मुआवजा मसीह से आएगा। निरीक्षकों, परमेश्वर समान बनो। पक्षपात के साथ लोगों से बरताव ना करो। परमेश्वर आपका न्याय करेगा - और जिन का आप निरीक्षण करते है - वही मापदण्ड के साथ।[१८]

---

[१८] इफिसियों ४:१७-६:९

जैसे पौलुस ने इस पत्री को बन्द (खत्म) करने की तैयारी की, वह अपने वाचकों को स्मरण दिलाता है कि, परमेश्वर की योजना की कलीसिया होने का विशेषाधिकार, चुनौति के बगैर नही होगा। बैरी जानता है कि कलीसिया परमेश्वर का अनोखे रूप से चयन (चुनाव) किया हुआ और उसकी महान योजना को कार्यान्वित करने और संचालन करने का पात्र है। ज्योति और अनध्कार की शक्तियों की बीच का रोष युद्ध। पृत्येक पिढ़ी में परिणाम, एक बडे माप में कलीसिया पर, और परमेश्वर के प्रति उसका क्रोधपूर्ण वचनबद्धता और उसके इरादों (आशयों) पर निर्भर करता है। प्रत्येक शक्ति और धूर्त (चालाक) सोच जो बैरी चला (सँभाल) सकता है उसका कलीसिया के विरुद्ध उपयोग मे लाया जाएगा। शैतान जानता है कि वह कलीसिया को दुसरे मार्ग पर मोडेगा, विभाजित करेगा अथवा भ्रष्ट करेगा, परमेश्वर का विहित उद्देश्य अस्थायी रूप से विफल कर देगा।

अनिवार्य (अपरिहार्य) युद्ध के लिए कलीसिया को तैयार करने मे मदद करने के लिए, पौलुस मे रक्षात्मक और आकमक युद्ध के लिए तयारी की। हमने उसके वाचकों को परमेश्वर के सम्पूर्ण शस्त्र पहनने के लिए निर्देश दिए:

- रक्षात्मक शस्त्र - सत्य (सच), धामिज्ञकता, विश्वास, उद्धार (मुक्ति) में भरोसा (दृढ़ विश्वास)
- आक्रमक शस्त्र - परमेश्वर का वचन, पवित्र आत्मा, और प्रार्थना

आशा के लिए कारण

हमारी पिढ़ी की कलीसिया ने रफिसुस की कलीसिया के लिखे गए आखरी संदेस (संदेश) की ओर ध्यान देना चाहिए। यह संदेश पौलुस के द्वारा नही लिखा गया परन्तु वह स्वयं मसीह की ओर से आता है। यह बायबिल की आखरी पुस्तक, प्रकाशितवाक्य में अभिलिखित किया गया है।

इफिसुस की कलीसिया को उनके कार्यों को (कर्मों को) यहोवा ने निश्चयपूर्वक मेहनती कार्य दृढ़ता, दुष्ट (अधर्मी) स्वभाव की असहिष्णुता, सत्य और असत्यता के बीच में पहचान ने की क्षमता, और दुर्भाग्य के नीचे सहनशक्ति ऐसा कहा था। मसीह इफिसुस की कलीसिया को सचेत भी करता है कि उसने उसका पहला (प्रथम) प्रेम खो दिया। शायद, उसने मसीह के लिए प्रेम को खो दिया जो उसे अथक रूप से जारी रखेगा परमेश्वर को क्या खुश करता है- उसकी कार्यसूचि सबकुछ सुधारने के लिए। मसीह ने इफिसियों की कलीसिया के सुचेत किया किया फि यदि वह उसके पहले प्रेम में लौटा नही तो वह उसके दीवट को हटा देगा - उसकी उपयोगिता को भी।[१९]

परमेश्वर कलीसिया की मदद करे आज जब हम अपने पहले प्रेम से पलटते है। वह हमारे प्रेम रखने का और परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के आवेश (भाव) को नया (ताजा) करें। बायबिल (धर्मग्रन्थ) स्पष्ट है। कलीसिया प्रबल होगी और नरक के द्वार (फाटक) उसके विरुद्ध खडे नही हो पायेंगे।[२०]

---

[१९] प्रकाशितवाक्य २:१-७

[२०] मत्ती १६:१८

यघापि परमेश्वर के लोगों की पीढ़ी जो उसके आदेशों को जबाब नही देती उनके इरादों के आशिषों को गँवा देंगी। जो पिढी मिस्त्री गुलामी से मुक्त हो गई थी उस पीढी ने परमेश्वर ने आक्राम को वचन में दी हुई मीरास को प्राप्त नही किया। बरीयों के साथ उलझाव से वे डरते रहे, और वे परमेश्वर की आज्ञा को काम में लाने के लिए लापरवाह (अनमने) थे।[२१] कलीसिया की प्रत्येक पीढी -और हरएक स्थानीय कलीसिया - उसके आगमन तक ''काम में लाने'' के लिए जिम्मेवार है।[२२] यहएक चयन (चुनाव) है। जहां हम है वही रहते है (निवास करते है) अथवा हमारे लिए परमेश्वर के उद्धश्य के आज्ञाकारिता मे हम आगे बढ़ते हैं।

यह कार्य कदाचित असंभव होगा। परन्तु हमारे अन्दर उसकी कार्य करनेवाली शक्ति के कारण, वह असंभव नही है :

अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है, कलीसिया में और मसीह यीशु में सकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन।।[२३]

परमेश्वर की महिमा करने की यह एक अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति है! वह हमारे द्वारा कलीसिया के द्वारा परमेश्वर के कार्य की अविश्वासनीय शक्ति का स्मरण दिलाती है। ''कलीसिया मे उसकी महिमा'' उसी समान परमेश्वर के पुत्र मे होने पाए यह ध्यान दे!

यह महिमा क्या है? यह परमेश्वर की प्रतिमा है, जो मसीह में पूर्ण रूप से परावर्तित हुई। वह कैसे परावर्तित हुई? यह उसके पिता की इच्छा अनुसार करने से परावर्तित हुई थी। परावर्तित हुई - परमेश्वर की इच्छा के अनुसार करने के द्वारा।

परमेश्वर की महिमा उसकी शक्ति से संबंधित है। परमेश्वर की शक्ति उसकी प्रतिमा के परावर्तित होने से आती है - उसकी इच्छा के अनुसार करने से। शक्ति जिससे यीशु मृतकों में से जी उटे वही आज कलीसिया के लिए पलब्ध है, परन्तु केवल तभी जब कलीसिया स्वयं इसका लाभ उठाती - परमेश्वर की इच्छा के अनुसार करने से। उसके उद्धेस्य प्राप्त करने के लिए उसकी शक्ति (सामर्थ) हमारे अन्दर कार्य (काम) करती है, और इसके परिणाम निरन्तर (अनन्त) है। वे सदा के लिए है। कितनी तेजस्वी (मनोहर) आशा! यही आशा के लिए कारण है!

अक्सर आशा के लिए कारण हम गतल बातों पर आधारित करते है - सदृश्य फल पर। उसके राज्य मे, फल परमेश्वर की कृपा का दान है, ना की मानवी प्रयत्न का नैसर्गिक परिणाम। हमारी आशा अविश्वास पर आधारित होनी चाहिए कि, परमेश्वर उसके अभिवचनों ..... करता है, चाहे हम उस परिपूर्णता को देखने के लिए जीवित रहे या ना रहे। इब्रानियों ११ हमे स्मरण दिलाता है कि हमारे विश्वास के कई (नायक) वीरों ने अपना सम्पूर्ण जीवन उन्हे दिए गए आर्थवचनों की परिपूर्णता को देखे बठौर (सिवाय) जीए। हम ने भरोसा रखना चाहिए कि परमेश्वर विश्वासी है और उसके दिए

---

[२१] व्यवस्थविवरण १:२१-३४

[२२] लूक १९:१३ (KJV) ''काम में लाने के लिए'' ग्रीक शब्द का मतलब ''व्यवसाय करना।''

[२३] इफिसियों ३:२०-२१

गए अभिवचनों को वह पूरा करेगा। परमेस्वर के राज्य में, इस प्रकार (तरह) का विश्वास, धार्मिकता के समान है जिसका परमेश्वर सम्मान (आदर) करते है - और अन्त मे उसका प्रतिफल देता है।

यदि हम हमारी आशा सदृश्य परिणामों पर आधारित रखते है, हम हार मान लेते है यदि हमें प्रतिफल नही दिखता। यदि हम हमारि आशा परमेश्वर के विश्वसनीयता पर उसके अभिवचनों को परिपूर्ण करने के लिए आधारित रखते है, तो बैरीयों के बीच में मसीह के प्रभुत्व को घोपित (प्रमाणित) करने और उसकी तरह जीने के लिए हम जारी रखेंगे जो हमारे चारो और घुमती है। इस तरह (प्रकार) की आशा जीवन को देखने के लिए हमारी आँखे खोलती है जब की दुसरे मृत्यु को देखते है। यह अलौकिक क्षमता है जो दूसरे नही देख सकते, जो हमें स्पष्ट (प्रत्येक्ष) निराशा मे साहस और आशा देती है। यह क्षमता (योग्यता) है ''आँखो की फूल को रास्तों मे, दरारों के द्वारा टुटते (भंग) हुए देखना, घुणा और बैर से अनुच्चरित क्षमा का शब्द सुनने के लिए कान और मृत्यु और विनाश के आवरण के नीचे नये जीवन के महसूस करने के लिए हाथ।[२४]

जैसे हम परमेश्वर की कार्यसूचिको सहयोग देते (करते) है, हम जो उससे माँगते है और कल्पना करते है वह हमारे कई अधिक अपार करता है। उसकी महान कार्यसूचि है परन्तु वह महान है! उसकी कार्यसूचि को सम्पादन करने के लिए, उसकी सामर्थ (शक्ति) हमारे सपनों से परें है। इस महान कार्यसूचि को कार्यान्वित करने का परमेश्वर का यह इरादा है उसकी देह (शरीर) को एकत्रित करना, हमें उसकी परिपूर्णता में लाना और हमारे टुटेपण को चंगा (स्वस्थ) करना - हमारे जातियों के टुटेपण को भी। मसीह हमे उसकी बुद्धिमानी से प्रेम से और उसकी सामर्थ (शक्ति) से पूर्ण करें-ताकि उसके आगमन तक हम उसके उद्धेश्य की सेवा कर सकें। हम अपने आपको नम्र करे, प्रायश्चित करे और सेवा करें। परमेश्वर हमारी मूर्ति को जंगा (स्वस्थ) करे और सुधारें। वह हमे बढ़ना विश्वास को प्रदान करना जारी रखें कि हम विश्वासी रूप से उसके अभिवचन का आदर (सम्मान) करे और सभी के मेल मिलाप की योजना करं। हम हमारे चारों ओर रहनेवाले के साथ नमृता, प्रेम, भले काम और सेवा के साथ व्यवहार (बरताव) करें। उपयोगिता की विशेषताएँ यीशु मसीह की कलीसिया में एकता परिपक्वता और मसीह की परिपूर्णता प्रदर्शित करने की योग्यता (क्षमता) लाएँ। उसका राज्य आवे, जैसे स्वर्ग में वैसे ही पृथ्वी पर!

---

[२४] नौवेन, अन्यूब मे भाव बताया, एक मार्गदर्शिका, पुरोहितों और अन्य सेवको के लिए प्रार्थना, ६८।

भले कामों के लिए बुलावा - ''मैं तुम्हारे कामों को जानता हूँ''

''**मैं तुम्हारे कामों को जानता हूँ**, तुम्हारे मेहनत के काम और तुम्हारि दृढ़ता को। ... **मै तुम्हारे कामों को जानता हूँ**, तुम्हारा प्रेम और विश्वास, तुम्हारी सेवा और दृढ़ता और यह कि अभी तुम जो कर रहे हो उससे अधिक जो तुमने पहले किया ... मैं तुम्हारे कामों के अनुसार तुम्हारा चुकता करूंगा ... **मैं तुम्हारे कामों को जानता हूँ** ... मैंने तुम्हारे कामों की मेरे परमेश्वर की दृष्टि में पूर्ण नही पाया ... **मैं तुम्हारे कामों को जानता हूँ**। देखो, मैंने तुम्हारे समक्ष एक खुला दरवाजा रखा है जो कोई नही बन्द कर सकता ... **मैं तुम्हारे कामों को जानता हूँ**, कि तुम ना ठंडे हो ना गरम।''

- मसीह यीशु ने, युहन्ना को, कलीसिया के लिए
(प्रकाशितवाक्य, अध्याय २ और ३, चुनिन्दा)

''मैंने प्रचार किया कि, उन्हों ने मन को फिराना चाहिए और परमेश्वर की ओर फिरना चाहिए और **उनके मन फिराने से उनके कामों के द्वारा सिद्ध करें**।''

-पौलुस, राजा अगीघा से बात करते हुए,
(प्रेरितों के काम २६:२० ब)

जिस के द्वारा और नाम के कारण हमें नुग्रह और प्रेरिताई मिली कि सब चातियों के लोग **विश्वास करके उसकी माने**।

- पौलूस, रोमियों को धन्यवाद देता है (रोमियो १:५)

परमेश्वर ''हर एक को **उसके कामों को अनुसार बदला देगा।'' जो सुकर्म मे स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खो**ज में है, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा।

-पौलुस, रोमियों को लिखता है (रोमियो २:६-७)

उन बातों को छोड मुझे और किसी बात के विषय में कहने का हियाव नही, जो मसीह ने अन्य जातियों की अधीनता के **लिये वचन और कर्म और** चिन्हों और अदभुत कामों की सामर्थ सें, और पवित्र आत्मा की सामर्थ से मेरे ही द्वारा किये गए।

-पौलुस रोमियों के लोगों से कहता है (रोमियो १५:१८-१९ अ)

परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना ही सब कुछ है।

-पौलुस, कुरिन्थ के लोगों को (१कुरिन्थियों ७:१९ अ)

केवल विश्वास का जो प्रेम के द्वारा प्रभाव करता है।

-पौलुस, गलतिया की कलीसिया को (गलतियो ५:६ ब)

सूचना: हरएक परिच्छेद मे महत्वपूर्ण ..... जोडा गया है।

हम अपने परमेश्वर और पिता के साम्हने तुम्हारे **विश्वास के काम** और **प्रेम का परिश्रम,** और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा की धीरता को लगातार स्मरण करते है।

-पौलुस थिस्सलुनीकियों की कलीसयिा को नमस्कार कहता है
(१ थिस्सलुनक्कियो १:३)

वचन पर चलनेवाले बनो, और केवल सुननेवाले ही नही जो अपने आपको धोखा देते है।

-याकूब, मसीही यहूदियों को लिखता है, जो पूरे जग मे तितर बितर हो गए है
(याकुब १:२२)

हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है, कि **अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उनकी सुधि लें...**

-याकूब (याकूब १:२७ अ)

और **प्रेम और भले कामों** में उस्काने के लिये क दुसरे की चिन्ता किया करें।

-इब्रानियों का लेखक (इब्रानियो १०:२४)

हम **भले काम करने में** हियाव न छोडें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे। इसलिये जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ **भलाई करें;** विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ।।

-पौलुस, कलतिया की कलीसिया को (गलतियों ६:९-१०)

उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे **भले कामों** को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।

-यीशु ने पहाड पर उदेश मे कहा (मत्ती ५:१६)

तब राजा उन्हे उत्तर देगा मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तुम ने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ **किया, वह मेरे ही साथ किया।**

-यीशु चेलों को सिखाते है (मत्ती २५:४०)

हमारे लोग भी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये **अच्छे कामों में लगे रहना** सीखें ताकि निष्फल न रहे।

-पौलुस ने तीतुस से कहा (तीतुस ३:१४)

क्योंकि हम उसके बनाए हुए है, और **मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये मुजे गएँ** जिन्हे परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये तैयार किया।।

-पौलुस, इफिसुस की कलीसिया को (इफिसियो २:१०)

भाग तीसरा

स्थानीय कलीसिया जो संस्कृतियों को बदलती है

स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है जिस को किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिला दिया और होते होते वह सब खमीर हो गया।

— मत्ती १३:३३

तुम जगत की ज्योति हो ...
... तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।

— मत्ती ५:१४,१६

तीसरे भाग का आरंभ

स्थानीय कलीसिया
जो संस्कृतियों को बदलती है

पुराने नियम में यहेजुकेल को इस्राएल से पूछने को कहा गया है: '' हम कैसे जीवित रहे?''[१] डॉ. फ्रान्सीस स्केफर ने १९७६ मे उस शीर्षक पर एक पुस्तक लिखी, और उसके बाद में चूक कोलसन ने २००१ मे जिसका शीर्षक था कैसे अब हम जीवित रहं? दोनो भी संस्कृतियों के साथ मसीही व्यक्तियों की भूमिकाओं के विषय मे बताते है। जैसे यह महत्वपूर्ण है वहाँ चुनौति करना और स्थानीय कलीसिया को उसके समाज में उसकी भूमिका को मानने की त्यावश्यक आवश्यकता है- सामूहिक सेवा और उनके व्यश्क्तिगत सदस्यों को सुसाज्जित करके यह दोनो द्वारा समाज के क्षेत्रों को प्रभावित करने के लिए जहां वे रहते है, कार्य करते है और उनका प्रभाव है। हमे परमेश्वर के चुनाव के शाखा-कलीसिया के साथ आरम्भ करना है।

भाग दो मे हमने कलीसिया की बढोतरी के लिए परमेश्वर के महान उद्देश्य को देखा, जैसे धर्मग्रन्थ मे व्याख्या की गई है और सम्पूर्ण इतिहास मे दिखाई गई है। हमने कलीसिया के स्वरूप की इतिहास की और भूमिका की चर्चा की। भाग तीन स्थानीय कलीसिया पर ध्यान केन्द्रित करती है और वे उनके समाज और जातियों के बदलाव (परिवर्तन) के प्रतिनिधी कैसे बनेंगे।

खमीर बदलाव का प्रतिनिधी है। यीशु ने स्पष्ट किया: *''स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है जिस को किसी स्त्री ने लेकर तीन परेसी आटें में मिला दिया और होते होते वह सब खमीर हो गया।''*[२]

मै कल्पना करता हूँ की यीशु एक जवान लडका होने के नाते, उसकी माता जब काम करती थी उसके साथ उत्तेजित होकर बात कर रहा है। जैसे उसकी माँ ने आटे मे खमीर को मिलाया उसने बडे ध्यान से देखा। उसने बार बार उस मिश्रण को कूटा पूरे खमीर को आटें मे मिलने दिया। यीशु ने ध्यान से देखा, जैसे उसने ऐसा कईबार किया। उसे यह प्रक्रिया अच्छी तरह से मालूम थी। वह उस आटे को `क ओर रखकर रुकती थी। छोटे लडकों रुकना बहुत कठिण लगता (जान पडता) था - विशेष रूप से जब गरम ताजी रोटी इतना अच्छा स्वादिष्ट रहती थी। परन्तु उसकी माता स्पष्ट करती थी, खमीर को उसका काम करना है। जैसे उसने किया, आटा ऐसा कुछ नया और भिन्न (अलग) हो रहा था - ऐसा कुछ की जल्दीही वह स्वादिष्ट बनेगा!

वर्षोंबाद, यीशु भीड़ के साथ बातें कर रहा था, दृष्टांत के दृष्टांत में उन्हें राज्य का वर्णन कर रहा था। उसने उन्हे बताया की वह एक राई के दाने के बोने के बराबर है- जब उन्हे लगाया गया उसकी

---

[१] ब

[२] ब

छोटी सी छोटी बीज भी जितने पौधे है उनसे भी अधिक पडे बगीचे के पौधों समान विकसित (बढती है) होगी। फिर शायद असका अपना बचपन का दृश्य उसके मन (विचारों) में आया जैसे उसने स्पष्ट किया की ''स्वर्ग की राज्य खमीर के समान है जिसको किसी स्त्री ने लेकर अधिक मात्रा के आटें में मिला दिया और होते होते वह सब खमीर हो गया।'' खमीर धीरे धीरे आटें मे व्याप्त हो जाता है। सम्पूर्ण धान बदल जाता है। खमीर परिवर्तन (बदलाव) का प्रतिनिधी है। उसी रिती से राज्य सभी बढ़ता (विकसित होता) है जब सुसमाचार का सामर्थ्य लोगों के जीवनों को व्याप्त करता है। लोग जो मसीह की प्रतिमा मे परावर्तित हुए है वे उनके चारो ओर के संसार मे फैल जाते है और संसार में असर करते है (प्रभावित करते है)।

डेविड बर्नेट से स्पष्ट कियाः

संसार (जगत) में (अन्दर) राज्य के जीवन के स्वरूप से सम्बन्धीत यीशु ने तीन रूपकों का उपयोग कियाः नमक ज्योति और खमीर... इनमे से प्रत्येक तत्व पुरानी आज्ञा को सक्रिय रूप से फैलाता है। नमक खाने में आत्मासात (सोक) हो जाता है; ज्योति अन्धेरे में चमकती है; खमीर आटें में किण्व (जामन) हो ती है। इसके बदले में राज्य का समाज पुराने समाज को सांस्कृतिक परिवर्तन लाकर फैला देगा लोगों मे संपूर्णता लाएगा।[३]

स्थानीय कलीसिया और उसके सदस्य (सभासद) परावर्तित हो गए। फिर वे दुसरों के परिवर्तन के लिए क्रियाशील प्रतिनिधी बनते है। एकता से रहना और सेवा करना कलीसिया के लोग बदलाव के प्रतिनिधी है उनका संस्कृतियों को फैलाते हुए और बदलते हुए। यह विकास है, राज्य का व्याप्त करनेवाला खमीर।

समाज को प्रभावित करने का कितना असाधारण सुअवसर। संस्कृति को व्याप्त करने का सुअवसर, जैसे खमीर सम्पूर्ण आटें मे व्याप्त होती है और आटें को बदल देती है। महापौर की ओर से कार्य करने का विशिष्ट (असाधारण) सुअवसर। स्थानीय कलीसिया संस्कृतियों में परिवर्तन ला सकती है। मसीह के अनुयायी जातियों को चेले बना सकते है।

तिसरे भाग के लिए आधार-वाक्य

हालॉकि मैने धर्मविषयक ग्रन्थ और इतिहास को पढ़ते हुए मजा लिया मेरा अनुबोधक मुख्यतः धर्मग्रन्थ का अभ्यास करने से, कलीसिया में काम करने से और कार्यन्वित होते हुए देखने से आता है। सर्वेक्षम और अध्ययन इन दोनों सें मेरे कलीसिया के विषय में एकत्र किये हुए आधार वाक्य है। उन में से कुछ का हमने पहले ही पुनरवलोकन किया है, लेकिन मैं उन्हे तिसरे भाग के लिए फिर से यहा प्रस्तुत करना चाहूंगाः

आधार-वाक्य १: जातियों को चेले बनाने के लिए, और सभी तरफ के लोगो को यह सिखानो के लिए की जो उसकी आज्ञा उसे मानने के लिए यीशु ने कलीसिया की स्थापना की थी। कलीसिया सभी को आज्ञापालन सिखाते हुए जो यीशु ने आज्ञा दी थी, परमेश्वर के राज्य को पृथ्वीपर बढ़ावा देती है।

---

[३] बर्नेट - जातियों की चंगाई, १३०

आधार-वाक्य २: साहित्य (सामग्री) साधनों का अभाव परमेश्वर के लोगों को जगत की सेवा करने से जहां परमेश्वर उन्हे रखता है माफी नही देता।

आधार-वाक्य ३: स्थानीय कलीसिया, कलीसिया का मुख्य सांस्थानिक अभिव्यक्ति है जहां यीशु उसके उद्देश्य को कार्यान्वित करने के लिए निश्चित किया है। जब स्थानीय कलीसिया, परमेश्वर रचित भूमिका को उसके लिए परिपूर्ण करती है, परमेश्वर स्वयं को चंगाई और सुधार कार्य मे सम्मिलित होते है।

आधार-वाख्य ४: कलीसिया पृथ्वीपर दृश्य और अदृश्य दोनों भी है। उसकी कम से कम तीन सम कालिन अभिव्यक्ति सार्वत्रिक कलीसिया, स्थानीक कलीसिया और परकलीसिया।

आधार-वाख्य ५: परमेश्वर के द्वारा उसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उपयोग मे लाया गया प्रतिनिधी अथवा उपकरण से कई ज्यादा है कलीसिया। वह उसकी ..... है, और उसकी इच्छा को पूरी करने के लिए उसे अधिक प्रेरित किया।

ऐसे विचार आपको प्रोत्साहित और प्रेरक बने जैसे आप और आपकी कलीसिया इस दर्शन को पकडे रहे और परमेश्वर की विस्तृत कार्यसूचि को कार्यान्वित करे जैसे यीशु महापौर (मेयर) होते।

स्थानीय कलीसिया द्वारा परिवर्तन

बाइबल के अनुसार परिवर्तन की ओर

९

जब हजारों लोग किसी विशाल सभा में हाथ उठाकर यह घोषणा करते हैं कि वे मसीह के पीछे चलना चाहते हैं, तो इसे परिवर्तन नहीं कहा जा सकता। यदि एक देश के ५० प्रतिशत लोग ''नया जीवन प्राप्त'' लोगों की सूची में डाल दिया जाए तो वह सामाजिक या सांस्कृतिक परिवर्तन नहीं कहलाता। यदि युगांडा की जनसंख्या के ८० प्रतिशत लोग स्वय को ''मसीही कहूलवाए[१] परंतु यदि संयुक्त राष्ट्र युगांडा को आफ्रिका के दूसरे नंबर का भ्रष्ट देश का दर्जा दे तो इसे परिवर्तन नही कहा जाएगा। यदि समाज में नजदीकी में चर्च स्थापित हो जाए तो इसें बाइबल के अनुसार चंगाई और पुनरूद्धार नही कहा जाएगा यह अच्छी बात हो सकती है परंतु बाइबल के अनुसार परिवर्तन नही। यह बाइबल के अनुसार आने वाला शलोम नही है।

बाइबल के अनुसार परिवर्तन

शद्धिक मायने मे ''पवित्तन'' तब होता है जब किसी जीज के स्वभाव या चरित्र मे पूरी तरह बदलाव आ जाएं। ''बाइबल के अनुसार परिवर्तन'' परमेश्वर के साथ उस पुनः मिलन को दर्शाता है जो मनुष्य द्वारा परमेश्वर की आज्ञाउलंघन द्वारा टूट चुका था। बाइबल के अनुसाार परिवर्तन - परमेश्वर राज्य का एक कार्य - तब होता है जब व्यक्ति परिवारों, समुदायों, समाजों, संस्कृतियों तथा राष्ट्रों द्वारा उसकी आसाओं का पालन किया है।

हम उसी प्रकार के परिवर्तन की चर्चा करेंगे। यह हमारा नहीं परमेश्वर का कार्य है। फिर भी परमेश्वर ने उसके द्वारा दी जाने जगाई और परिवर्तन के कार्य को पहले से पूरा कर दिया है। यह स्थिति यीशु को उद्धारकर्ता मानने से कहीं बढ़कर है। यह परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना है! आत्मिक बदलाव मार्ग खोलता है परंतु परिवर्तन जीवन भ होने वाली प्रक्रिया है। यहा तक कि पौलुस प्रेरित भी उसके जीवन के अंत तक यह नहीं समझ पाया कि उसका पूरी रीति से व्यक्तिगत परिवर्तन हो पाया था या नही। वह जानता था कि वह एक यात्रा पर है और मसीह के समान परिवर्तित हो रहाहै। उसकी यात्रा जब तक पूरी नहीं होगी जब तक वह मसीह की उपस्थिति में न पहूंच जाए।[२] उसी प्रकार हमारे समाज भी मसीह के दोबारा आगमन तक पूरी तरह परिवर्तित नहीं होंगे। परंतु ''हमारे उद्धार के लिये कार्य फसे'' की पौलुस की चेतावनी के अनुसार हमें महान दिन के आने तक उस संसार में परमेश्वर की योजना को पूरा कसे के लिये कार्यरत रहना चाहिये।

---

[१] ब

[२] ब

परिवर्तन की प्रक्रिया

पवित्र वचन में ''परिवर्तन'' शब्द का उपयोग यह समझाने के लिये किया गया है कि शिष्य के मस्तिष्क[३], चरित्र[४] और पुनरुत्थित शरीर मे वास्तव में क्या होता है।[५] जब हम किसी समाज, संस्कृति या देश के परिवर्तन की बात करते हैं, तब हम शब्दों के द्वारा यह बताते हैं कि क्या होता है जब परिवारों, समाजों और समुदायों में व्यक्तिगत रूप से बड़ी संख्या में परिवर्तन होते हैं। एक व्यक्ति जिस प्रकार अत्मिक छुटकारा को अनुभव करता है, संस्कृतियां और सामाजिक प्रथाएं ''बचाए जाने'' या ''नए जन्म'' का अनुभव नही करते। परंतु व्यक्तियों ने छुटकारा प्राप्त किया है यह उनकी जिम्मेदारी है कि वे उनके बदलते जीवन के द्वारा उनके आसपास की दुनिया को प्रभावित करें। वे सत्य के लिये बोलते है। वे सुधार प्रणालि के पक्षमें होते है। वे न्याय और दया के द्योतक होते है। वे लोगों मे परमेश्वर की छति को देखते है। वे उन प्रकार के ..... के लाये करते है जो मसीह ने किया होता यदि वह मेयर (महापौर) होता।

इस कल्पना को सही सानित करने के लिये बाइबल में ठोस सभूत है। पुराना नियम व्यक्तिगत, परिवार, समाज, शहर, समूदाय और राष्ट्रीय जीवन के सभी पहलूओं मे परिवर्तन के संदर्भो से भरा पड़ा है।[६] नए नियम में इपिसियों ४:१७-५:२० नई सृष्टि एक विश्वासी के चरित्र और कार्यो को बताती है। उसके आगे इफिसियों ५:२१-६:५ परिवर्तिक जीवन में परिवर्तन के विषय बताति है। एक व्यक्ति के जीवन के विभिन्न पहलू का जब मसीह द्वारा मार्गदर्शन और प्रभुत्व किया जाता है तन व्यक्ति का परिवर्तन होता है। पौलुस लिखता हैः ''सि संसार के सदृष्य न बनो; परंतु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल - चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली और भावती और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालुम करते रहो।''[७] व्यक्तिगत तौर पर हम परमेश्वर की च्छिा को जान सकते है। परंतु जब तक हमारा रहन-सहन परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बदल न जाए; तबतक न हमारे विचार और नही हमारे जीवन बदल पाएंगे।

परिवर्तन एक नियमित प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम मसीह की आज्ञाओं को समझ सकते और आज्ञाकारिता के साथ उनका पालन कर सकते है। हम उसकी समानता में बनाए गए है। यह अचानक नहीं हो जाता। जिस प्रकार एक बच्चा अचानक युवा या वयस्क नही बन जाता उसी प्रकार पहला कदम लेते ही हम यीशु के परिपक्व शिष्य नही बन जाते। जब हम उसके साथ चलना आरंभ करते है, हमारी आज्ञाकारिता अपरिपक्व और अनुभवहीन होती है। जब हम उसकी आज्ञा का पालन करना खुश कर देते है, हम मसीह के समान होने के महत्व की समझ में बढ़तेजाते हैं। हम इस हद तक उसके अनुरूप होजाते हैं कि हमारा जीवन उसकी प्रभुता के अधीन हो जाता है। व्श्वक्तिगत परिवर्तन पवित्र आत्मा का कार्य है, परंतु व्यवहारिक रूप से आज्ञापालन करना - हमारा कतर्व्य है। प्रेरित पौलुस ने कुलुसियों के विश्वासियों को ज्ञान से भर देने के लिये इसलिये कहा ताकि वे ''...

[३] ब
[४] ब
[५] ब
[६] ब
[७] ब

परमेश्वर की इच्छा की पहचान में परिपूर्ण हो जाओ ताकि तुम्हारा। चाल-चलन प्रभु के योग्य हो, और वह सब प्रकार से प्रसन्न हो, और तुम में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे, और तुम परमेश्वर की पहचान में बढ़ते जाओं, उसकी महिमा की शक्ति के अनुसार सब प्रकार की सामर्थ से बलवंत हो जाओं।''[८]

परिवर्तन व्यक्तिगत रूप से शुरू होता है और परिवारों, समाजो और देशों मे फैल जाता है। यह भी एक प्रक्रिया है। जब व्यक्ति तथा परिवार, परिमाण और गंभीरता से परमेश्वर की आज्ञापालन में बढ़ते जाते है वे समाजों को प्रभावित करते हैं। वह इस हद तक होता है कि परिवर्तित समाज के उनके संस्कृति पर प्रभाव द्वारा राष्ट्र भी परिवर्तित हो जाते है।

व्यक्ति

बाइबल कहती है कि; मसीह में हम ''नई सृष्टि'' बन जाते है।[९] ''हमारा नया जन्म हुआ है।''[१०] परमेश्वर हमारे विचारों, चरित्र, और व्यवहार को बदल देता है। परमेश्वर लोगों को भी बदल देता है! परिवर्तन एक प्रक्रिया है और हर व्यक्ति का अनोखा अनुभव होता है।

मै आपको एक व्यक्ति के जीवन परिवर्तन में परमेश्वर की अनोखी समार्थ का उदाहरण देना चाहता हूँ। ध्यान दें कि उस व्यक्ति के परिवर्तन ने किस प्रकार से कई लोगों के जीवन को छू लिया :

एक पास्टर, सुसमाचार प्रचार के लिये निषेध किये गये देश में मस्जिद के पास पर्चे बांट रहा था। इस कार्य को रोकने के लिये सरकार ने उसे उसके अधिकारिक स्तर से वंचित कर दिया। उसका सुसमाचार प्रचार का तरीका मान्य नहीं था। जब उसने हमारे एक प्रशिक्षण सम्मेलन में भाग लिया और परमेश्वर के प्रेम के क्रियाशील तरीकों के विषय सीखा, उसने एक नई तरकीब सोचा। उसने तुरंत चार कार्यकर्ताओं को इकट्ठा किया, ब्रेट लाया और मनोरुणालय के मुख्य अधिकारी से मरीजों को मिलने उन्हें ब्रेड देने और उनके लिये प्रार्थना करने की अनुमति मांगा। उस समूह को अनुमति तो मिल गई परंतु एक ऐसे कठिन वार्ड मे जाने की अनुमति मिली जहा कभी स्वस्थ न होने वाले असाध्य ..... को एक बंद कक्ष में रखा गया था। उनमें एक ऐसा व्यक्ति था जिसने कई वषों से बातचीत नहीं किया था। चलने की बजाय वह रेंगता था। उसका चेहरा सूज गया था और विकृत हो गया था। उसका एक कान बहुत ही बड़ा हो गया था। उसके पास असहनीय बदबू आति थी। वह बहुत ही रांदा दिखता था। उसे मिलने वाले लोग उस पर हाथ रखकर प्रार्थना करते परंतु हाथ धोए बिना किसी अन्य वस्तु को छूना नही चाहते थे। अगले सप्ताह यह पास्टर और कार्यकर्ता फिर से रूग्णालय पहुचे। वहां उनकी मुलाकात मनोवैज्ञानिक कक्ष में सलाखों के पीछे खड़े उंचे-दुबले व्यक्ति से हुई। उन्होने उससे उस खास संमूह के रोगियों के पास उन्हें ले चलने को कहा। उस व्यक्ति ने उन्हें बताया कि वह वही व्यक्ति है जिसके लिये उन्हों ने पिछले सप्ताह प्रार्थना की थी - और प्रार्थना ने उसे उतना बदल दिया था कि वहचाहत है कि वे उसके लिये और प्रार्थना करे। समूह उसे पहचान न सका और उससे कहा कि उनके पास अधिक समय नहीं है और वह उन्हें दूसरे रोगियों के पास ले चले। उसने वैसा ही

---

[८] ब

[९] ब

[१०] ब

किया, और वार्ड के कर्मचारयिों इस बात की पुष्टि कर दी कि यह वही व्यक्ति है जिसके लिये उन्हों ने पिछले सप्ताह प्रार्थना किया था। सेवको का समूह अचंभित रहगया। व्यक्ति चंगा हो गया था। वह चलता और बातचीत भी करने लगा था। वह लिख भी सकता था। उसके रोग की पहचान को असाध्य से साध्य (ठीक हो सकने वाला) में बदलना पड़ा। जैसे जैसे समय बीतता गया, सेवकों का यह समूह मनोरग्णालय आता रहा, ब्रेड, कपडे देता रहा ओर रोगियों के लिये प्रार्थना करता रहा। उसी प्रकार अन्यरोगी भी चंगे होते गये। बाद में उस समूह को ८०० लोगों को और रुग्णालय के कर्मचारियों को वचन सुनाने के लिये आमंत्रित किया गया। परमेश्वर ने सहायक स्त्रोतों को भी बढ़ा दिया क्यो कि जो इसके विषय सुनते थे वे भी उन के साथ जुड जाते थे। तीन माह के अंदर ही अधिकारियों की मदद से एक विशाल समूह हरसप्ताह पांच रुग्णालयो में २६०० रोगियों, पांच अनाथाश्रमों दो कारागृहों और शराब और नशीली दवाओं से ग्रस्त लोगों के पुर्नवासन केंद्र में सेवा कसे लगा। वे उन्हो ने आवारा बच्चों तथा बेघर लोगों के बीच भी सेवा की शुरुवात की।[११]

परिवार

व्यक्ति परिवार को प्रभावित करते हैं। वचन इस बात की पुषिट करता है। माता-पिता को चाहिये कि वे अपने बच्चों को प्रेमि परमेश्वर के जीवन के विषय सिखाए।[१२] बूढ़ी स्त्रियों को चाहिये कि वे तरुण स्त्रियों को उनके परिवार से प्रेम करना सिखाएं और सेवक तथा प्रचीनों को चाहिये कि वे अपने परिवार का अच्छा प्रबंधन करे।[१३] बाइबल के अनुसार परिवर्तन तब आता है जब हरव्य क्ति और परिवार स्वंय परमेश्वर के मार्ग पर चलें - और मिलकर दूसरों की सेवा करें।

समाज

परिवर्तित व्यक्ति और परिवार यह जानते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें उनके समाज में किसी उद्देश्य से रखा है। उनके समाज के लियें उनकी ''विशालदृष्टि'' है। नीतिवचन ३१ में जिस स्त्री के विषय लिखा गया है वह अपने घर और बाहर उसकी सेवा के लिये सम्मानित है। उसका पति नगर के द्वार पर आदर पाता है, जहाँ वह समाज के अगुवों के साथ सेवा करता है।[१४] समाज केवल दिखने वाले अगुवों से प्रभावित नही होता परंतु परदे के पीछे के कार्यो द्वारा भी होता है। पौलुस ने तिमोथी को प्रशिक्षित किया था और तिमोथी को उन व्यक्तियों को प्रशिक्षित करना था जो दूसरों को प्रशिक्षित कर सकते थे।[१५]

राष्ट्र

यह समझना कठिन है कि व्यक्ति और समाज वास्तव में देश को प्रभावित कर सकते है। परंतु वचन हमें याद दिलाता है कि यह एक प्रक्रिया है। यह प्रगति केवल भौगोलिक नहीं होती परंतु धीरे-धीरे संस्कृतियों और मत प्रणालियों के द्वारा बढ़ती है जैसे आटे में खमीर मिलजाता है।

---

[११] ब

[१२] ब

[१३] ब

[१४] ब

[१५] ब

उस वचन को उसी दृष्टिकोण से देखें जो यीशु ने उसके चेलों से कहा था कि वे सामर्थ प्राप्त करेंगे और ''यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में ''गवाह होंगे''[१६] यरूशलेम उस समय चेलों का ठिकाना था। यह उनके पारंपारिक विश्वास और संस्कृति का केन्द्र था और यीशु के अनुयायी अल्पसंख्यक थे। यहूदिया यहूदि ''प्रांत'' था जिसमें यरूशलेम भी था। सामरिया उत्तर यहूदिया का एक भाग था। वचन हमें जताता है कि यहूदी लोग सामरियों घृण करते थे ऐसे घुठिल लोग जो परमेश्वर के सामने शुद्ध नही थे। यीशु ने कहा कि उसकी परिवर्तन करने की सामर्थ शत्रुओं के हृदय और देश में बी कार्य कर सकती है! यह एक सुदार की ओर कदम था। ''पृथ्वी की छोर'' ही केवल स्थान नहीं थे, परंतु लोग राष्ट्र और संस्कृतियां यीशु के चंद अनुयायीयों के लिये जिन्होने यीशु के यहकहते सुना था कल्पना से बाहर या। उसकी आत्मा से भरकर वे उस कार्य को शुरू करने वाले थे जो एक दिन राष्ट्रों को आशीषित करता और बदल देता।

बाइबल हमें राष्ट्रो और पृथ्वी के लोगों के लिये परमेश्वर को योजना की झलक देती है। भजन के लेखक के द्वारा परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा किया ''सभी राष्ट्र उसके कारण धन्य होंगे, और सारी जातियां उसको धन्य कहेगी।''[१७] दूसरे भजन में हम पाते हैं ''मुझ से मांग और मैं जाति जाति के लोगों को ..... सम्मति होने के लिये, और ..... के दशों को तेरि निज भूमि बनने के लिये दे दूंगा।[१८] परमेश्वर ने फिर से यह इच्छा जाहिर किया कि राष्ट्र उसके प्रभुता के अधीन होवे: ''चुप हो जाओ और जान लो कि मैं ही परमेश्वर हूँ। मैं जातियों में महान हूँ। मै पृथ्वीभर में महान हूँ।''[१९]

कलीसिया और परिवर्तन का केंद्र

हमने परिवर्तन को एक प्रक्रिय रूप में देखा है - व्यक्तिगत, पारिवारिक और राष्ट्र स्तर पर। एक और घटक है - कलीसिया - जौ इन सब का केंद्र है।

अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिये परमेश्वर ने कलीसिया के जरिये राष्ट्र को चेला बनाने की योजना बनाई। यीशु ने अपने चेलों से राष्ट्रों को चेला बनाने, उन्हें बप्तिस्मा देने और उसकी आज्ञा मानना सिखाने को कहा। राष्ट्र पहले कदम में परिवर्तित नही होने जैसे जाने बप्तिस्मा देने और शिसा देने के द्वारा। परिवर्तन तब आता है जब लोग जिवन और समाज के हर श्रेत्र मे परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं। सुसमाचार प्रचार और पप्तिस्म मार्ग खोलते हैं; परंतु शिष्यता - ''आज्ञापालन सिखाने के द्वारा - जो कलीसिया की नियमित जवाबदारि है।

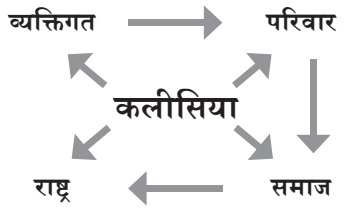

[१६] ब
[१७] ब
[१८] ब
[१९] ब

परमेश्वर की जोजना में, कलीसिया परिवर्तन का केन्द्र बिंदु है। यह प्रक्रिया को कार्यन्वित करती है।[२०] यह मसीह के उद्देश्यों को समाज के हर स्तर के लोगों - व्यक्तिगत, परिवार, समाज और राष्ट्र - तक पहूंचाने और सहायता करने मे माध्यम है।[२१] यह उसके सदस्यों को समाज के हर कोने में जाकर जीवन के हर क्षेत्र में परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्यों को प्रगट करने के लिये तैयार करती है।

किसी ने पूछा, ''यदि आने वाले कल चर्च बंद होजाए तो क्या आपका शहर इस बात पर गौर करेगा? क्या आपका शहर इस बात का विरोध करेगा?[२२] यदि कलीसियां इमानदारि से समाज की सेवा करती हैं तो उत्तर होगा ''हां!'' हमने ऐसा होते देखा भी है। बाइबल के अनुसार समाज मे परिवर्तन हुए हैं क्योंकि स्थानीय कलीसियाओं ने लगातार नए तरीकों से और त्यागपूर्ण रीति से लोगों की सेवा की है:

आइये हम केनिया के एक ऐसे क्षेत्र में बढ़ते परिवर्तन को देखें जो अनाधिकृत रीति सें बस गया था:-

कगिशु, झुग्गी झोपड़ी में एक १५ सदस्यों वाला चर्च था जहां के घर रद्दी टीनशीट, लकड़ी के टुकडों से बने थे। इस कलीसिया कों हमारे सेवकाई प्रशिक्षण की कॉन्फ्रेन्स का निमंत्रण मिला और उनमें से २१-वर्षीय सदस्य मेशक के कॉन्फ्रेन्स में शामिल होने के लिये चुना गया। मेशक एक नए दर्शन को लेकर उस कॉन्फ्रेन्स सं लौटा: ''मै'' ने सीखा कि यीशु की आज्ञापालन करना ही विकल्प नही है!'' इसलिये मेशक, (एक बुजुरी), पास्टर और उनकी पत्नी ने मिलकर प्रार्थना किया और परमेश्वर से ऐसे कई योजना को मांगा जिसके द्वारा वे परमेश्वर के प्रेम को उनके समाज तक प्रायोगिक रूप से प्रगट कर सकते थे। उन्हें प्रार्थना का उत्तर मिला: उन्हों ने चर्च में ही बच्चों के लिये एक प्रायमरी स्कूल कि शुरुवात की।

उन्हों ने तुरंत कलीसिया के सदस्यों से बातचीत शुरू की जिनके पास बच्चे थे परंतु वे सार्वजनिक स्कूल में बच्चों की फीस भरने में असमर्थ थे। कई लोग अपने बच्चों को इस नए ''स्कूल'' में भेजने के लिये तैयार हो गए। बिना किसी प्रशिक्षण के, मेशक, पास्टर और पास्टर की पत्नि ने चर्च के एक कमरे में ६ से १२ वर्ष के बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया। जहां न टेबल, न पुस्तक और न ही कोई साधन उपलब्द थे। गांव के लोग इस से सहमत नहीं थे इसलिये वे रात को उनके सामान की चोरी करने के लिये वहां पहूंचे। मेशक को उसकि १ अमरिकन डॉलर की पहली तनख़ाह उसे सात महिने के पश्चात बच्चों के माता- पिता द्वारा फीस और दान के रकम में से मिली। मेशक और डिसमस ने आसपड़ोंस के बच्चों को भी आमंत्रित किया और स्कूल बढ़ता गया। जल्द ही एक कमरे में अलग अलग उम्र वाले ४५ विदायर्थी इकठ्ठे होने लगे। ६ वैं माह तक दूसरी और ८ वैं माहतक तीसरी शिक्षक भी स्वेच्छा से पढ़ाने के लिये स्कूल से जुड गये। १०० विद्यार्थि जमा हो जाने से शिक्षक लोग कमरे के मध्य में बंदकर अपने विद्यर्थियों के साथ एक दूसरे की विपरीट दिशा में बैठने लगे। बढ़ता हुआ यह स्कूल पडोसियों के लिये असुविधा का कारण बन गया और वे वहां से हट गये। जैसे ही पड़ोसि वहां

---

[२०] ब

[२१] ब

[२२] ब

से हट गये स्कूल को और जगह उपल्ब हो गई। इस समय तक स्कूल दो वर्ष पुराना हो चुका था और उसके पास दो इमारतें हो गई थी - जिनमें १० से ज्यादा कमरे थे जिन्हें रविवार को आराधना के लिये भी उपयोग में लाया जाने लगा।

अकले वर्ष चर्च ने पास ही के कवांगवेअर स्थान में जमीन का एक भाग एक इमारत को खरीद लिया और स्कूल वहां स्थानांतरित किया गया। ६ वें वर्ष में वहां १७ वेतन भोगी शिक्षा, ५ गैट-शिक्षक कर्मचारि और ४४५ बच्चे हो गए! जब नव निर्वाचित सरकार ने सभी बच्चों के लिये प्राथमिक शिक्षा को मुफ्त घोषित कर दिया तो स्कूल में संख्या ६०० से घटकर ४४५ की हो गई। उस क्षेत्र का करीब हर दूसरा स्कूल बंद हो चुका था - परंतु उस स्कूल में अधिकतर बच्चों को भर्ति के लिये प्रतीक्षा सूचि में रहना पड़ता था।

यह समाज, स्कूल और चर्च की कहानी की केवल शुरुवात ही है। इस प्रयत्न का प्रत्यक्ष फलेक माध्यमिक शाला दस कर्मचारी और ६० विद्यार्थी हैं जो पास के गांव में ही शुरू की गई।

कगिशु के एक चर्च ने कमी के पूरी करने के लिये जो मेशक के स्कूल के स्थानांतरण के कारण हुई थी वहाँ फिर से एक प्राथमिक स्कूल का शुरुवात की। अन्य कलीसिया ने २० बच्चों की दिनभर देखभाल करने का केन्द्र खोल दिया जिनकी माताए नौकरी करने जाती थीं। शुरुवात कलीसिया की संगति बढ़कर ६० सदस्यों वाली कलीसिया बन गई और उस कलीसिया ने ४० सदस्यों से भी ज्यादा। वाली एक और कलीसिया को स्थपित किया। उनमें से हर कलीसिया ने विभिन्न स्थानों मे दो और नई कलीसियाओं की शुरुवात की। प्रथम कलीसिया के पास्टर ३ वर्ष पहले ही युगांडा चले गये जहां उन्हों ने एक समृद्ध माध्यमिक स्कूल की शुरवात की। स्कूल के विद्यार्थी, शिक्षक और विद्यार्थियों के माता - पिता की मदद के लिये कगिशु में एक दुकान भी लगाई गई। स्कूल के नए स्थान के आसपास कई छोटे व्यवसाय भी शुरु किये गए। ठेकेदारों ने भी स्थायि इमारतों का निर्माण करना शुरू कर दिया।

एक बाहुत ही छोटी सी कलीसिया और उसके सदस्यों द्वारा परमेश्वर की आज्ञा का त्यागपूर्ण आज्ञापालन के ६ वर्ष पश्चात आज कगिशु और कवांगवेअर के समाज और कलीसियाओं मे विशाल और दिख पड़ने वाला परिवर्तन हुआ है। वास्तव में कगिशु के परिवर्तन की जांच की गई जब समाज के सदस्यों ने पूरे समाज का नाम कगिशु से बदलकर (जो ''छूरि'' या ''छूरा भोंकना'' कहल्वाता है) रूइता रखने की सलाह दिया (जिसका अर्थ ''खतरनाक बात को खत्म कर देना''है)।[२३]

..... केवल परमेश्वर ही इस परिवर्तन की सीमा को जानता है, हम समाज में प्रत्यक्ष दिख पड़ने वाले प्रभाव के आधार पर इन सच्चाईयों को देख पाए है:

३२ पूर्ण रोजगार

५ स्कूल

स्कूल में १००० से भी ज्यादा बच्चे

६ नई कलीसियाएं

---

[२३] ब

अनगिनत नए विश्वासि

कगिशु और कवांगवेअर में नया कारखाना

कवांगवेअर में नया आर्थिक विकास

सामाजिक परिवर्तन

नागरिक मामलों में कलीसिया की भूमिक प्रथम प्राथमिकता नही है, यह तब हो सकति है जन कलीसयिा परमेश्वर की योजना को अपने समाज में प्रस्तुत करने चाहती हो। पुराने नियम में हम सरकार के प्रति परमेश्वर के दुष्टिकोण को देखते हैं जहां लैव्यवस्था की पुस्तक नागरिक व्यवस्था और जीवन के विषय बताती है। परमेश्वर के लिये उसके आदर्श राष्ट्र इस्राएल की धार्मिक अगुवाई का विषय महत्वपूर्ण था। उसने लोगों की भलाई के लिये ..... राष्ट्रों मे अपने प्रतिनिधियों -युसुफ, दानियेल और नहेम्याह - को राज करने के लिये अदभुत रीति से रखा। हम मिसा में युसुफ और बेबिलोन मे दानिएल और - नहेम्याह के विषय बहुत कुछ विस्तृत जानकारी पाते है और देखते है कि इस्राएलियों को गुलामि के विधर्मी देश की शांति के लिये भी प्रार्थना करने को प्रोत्साहित किया गया था: ''परंतु जिस नगर में मैने तुम को बंदी कराके भेज दिया है उसके कुशल यत्न किया करो, और उसके हित के लिये यहोवा से प्रार्थना किया करे। क्यों कि उसके कुशल से तुम भी कुशल के साथ रहोगे।''[२४] यीशु उस बात में स्पष्ट था कि परमेशवर और समाज के प्रति जिसमें हम रहते है हमारि कुछ जिम्मेदारिया भी है।[२५] अंत में, रोमियो को अपनी .... में पौलूस हमें याद दिलाता है कि सामाजिक सरकार भी परमेश्वर के लिये महत्वपूर्ण है। परमेश्वर ही उन्हें नियुक्त करता है और वे उसके अधिकार के अंतर्गत ही समाज के कुशल के लिये कार्य करते हैं।[२६]

राष्ट्रों के परिवर्तन की बात की कल्पना करना कठिन जान पड़ता है। यह उतना कठिन नहीं होगा यदि हम यह मान ले कि जब परमेश्वर केलोग - जिन्हें उसने नामलेकर बुलाया है - उसके अधीन हो जाते है और राष्ट्रों को शिष्य बनाते तथा समाज और संस्कृतियों में परिवर्तन होजाता है। जैसा हमने देखा कि परमेश्वर ने इस्राएल से कहा कि यदि वे नम्र होकर प्रार्थना करें उसकी ओर दृष्टि करे और अपनी दुष्ट चाल से फिरें तो वह उन्हें चंगा करेगा और अपने लोगों के पापों को क्षमा करेगा।[२७]

परिवर्तन और समाज में न्याय

समाज में आलीशान मकान, साक्षरता अभियान, संकट निवारण केन्द्र या जेल सेवकाई के द्वारा परिवर्तन नहीं होता। ..... दिखने में ये सकारात्वक हों परंतु ये सामाजिक विषमताओं को ही बढ़ावा तेते है। जब तक कि मूल कारण को खत्म न किया जाए, अन्याय सामाजिक विषमता और नैतिक विषमता लगातार बढ़ते रहेंगे।

यशायाह ५८ हमें बताता है कि जब हम मूल कारणों और लक्षणों को खत्म करते है ऐसा कसे के द्वारा हम उसकी आराधना करते है। यशायाह ५८ के ६वें आयत में परमेश्वर उन सबको जो उसकी

[२४] ब

[२५] ब

[२६] ब

[२७] ब

आराधना करते है आदेश देता है कि वे भूखों के साथ अपना भोजन बांटे गरीब और बेघरों को आश्रय दें, नंगों को कपड़े पहिनाएं और उन्हें आपने परिवार से न निकालें।

परंतु कुछ लोग इस सामाजिक अन्याय के मूल कारणों को ख्तम करने के लिये कुछ ज्यादा ही दृढ़ संकल्प है। ६वी आयत इस प्रकार थे आराधना करने के विषय बताती है: ''अन्याय से बनाए हुए दासों, और अंघेट सहनेवालों का ''जूआ तोड़कर'' उनकों ''छुड़ा लेना'', और ''सबजूओं को टुकड़े -टुकड़े कर देना''। ये शब्द - ''छुडाना'' ''तोडना'' ''छुड़ा देना - अधिकार के शब्द है। यीशु के अनुयायी जिनकी सरकार मे राजनीति मे व्यवसाय मे पहुंच है और उनके पास अधिकार है उन्हें परमेश्वर द्वारा अन्याय के मूल कारणों का खातमा करने के लिये विशेषकर रखा गया है। यहां और यशायाह ५९ में परमेश्वर अपने लोगों को जिन्हें उसने अधिकार के स्थान पर रखा है, इश्वरीय सामर्थ का उयोग करने की आज्ञा देता है। कलीसयिा की जिम्मेदारी है कि वह उन लोगों को जो अगुवाई में है उन बदलाव के लिये कार्य करने के लिये प्रोत्साहित करें जिसके द्वारा परमेश्वर की योजना दिख पड़ती हो और अपने जवानों को पहुंच वाले स्थानों पर कब्जा कसे के लिये तैयार करें ताकि अगली पीढ़ी के लिये परमेश्वर की योजना पर अमल किया जा सके।

सामान्यत: जब परमेश्वर का भय मानने वाले लोग पहूंच और धिकार के स्थान पर होते हैं तब कलीसिया अन्याय के मूल कारणों का खातमा ज्यादा प्रभावि रूप से कर सकती है। स्थानीय सरकारी स्थर पर सिटी कॉउंसिल के सदस्य और महापौर (मेयर) के पास अन्याय और सामाजिक ढ़ांचे में अन्याय की गहरी ..... से निपटने के विशेष अधिकार होते है। कलीसिया को चाहिये कि वह अपने सदस्यों के जिन्हें समाज सेवा की बुलाहट हो राजनैतिक जबाबदारी लेने के लिये प्रोत्साहित करे। ऐसी परिस्थिति में उन्हें कलीसिया से बरर्वास्त न करं। उन्हें संगति में रखें उनके लिये प्रार्थना करें, उन्हें प्रोतसाहित करें और उन्हें जबाबदारी दें।

जब हम मानवीय क्लेश और मूल कारणों दोनों से निपटते हैं, तो हम यशायाह ५८ में चंगाी के विष्य परमेश्वर की प्रतिज्ञा को पढ़ते है:

> *''जब तेरा प्रकाश पौ फटने के समान चमकेगा, और तु शीघ्र चंगा हो जाएगा; तेरा धर्म तेरे आगे आगे चलेगा, यहोवा का तेज तेरे पीछे रक्षा करते चलेगा। तब तू पुकारेगा और यहोवा उत्तर देगा तू दोहाई देगा और वह कहेगा, मै यहां हू।''*[२८]

मै यहां कुछ और भी बताना चाहूंगा। भौतिक रीति से गरीब कलीसियाए उतनी ''अधिक गरिब'' नही होति कि वे समाज की मदद न कर सकें। उसी प्रकार स्थानीय कलीसियाए भी उतनी भी ''अधिक कमजोर'' नहीं होती कि वे सामाजिक न्याय न दिला सके चाहें सता में परमेश्वर का भय माननेवाले हों या न हों। परमेश्वर के दूतावास की तरह कलीसिया के पास उन कायों को करने की उसका सामर्थ और अधिकार है जिसके दिये उसने उन्हें बुलाया है। उसके राजदूत होने के कारण हम उसके प्रतिनिधि रूप में - उसके नाम से कार्य करते हैं।

---

[२८] ब

नैतिकता, नीति, संसारिक धारणा और विश्वास में सांस्कृति परिवर्तन

हम राजनैतिक प्रक्रिया की ओर देखरहे थे, परंतु केवल यही एकमात्र या तरीका नही है जिससे सांस्कृतिक परिवर्तन लाया जा सकता है। हमारे समाज और राष्ट्र बदल सकते है यदि परमेश्वर के लोग इमानदारी से यह जांचे कि: ''यदि यीशु महापौर (मेयर) होता तो वह क्या करता?'' उसके लोगों को चाहिये कि वे जो उसकी सामर्थ पाप हैं और उसका प्रतिनिधित्व करतें है वे जहां भी हो नम्रता के साथ जैसा वह चाहता है उसी प्रकार का परिवर्तन लाएं।

यह स्पष्ट है कि हमारे समाज और संस्कृति में परिवर्तन होना जरूरी है। पौलुस कहता है सभी बातों का मसीह के आगे झुकना जरूरी है - और हम उसके प्रतिनिधि है। हमारे समाज के लोगों को आत्मिक नए जन्म की जरूरत है। हमारी संस्कृतियों को बायबल के अनुसार परिवर्तित होने की जरूरत है ता कि उन मूल्यों, सदाचार और नीतियों का जैसा परमेश्वर चाहता है और बायबल के सिद्धांतों पर आधारित हैं,पगट किया जा सके। जैसे परमेश्वर का राज्य हमारे जीवन और कलीसियओं को भेझता है और हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं - न्याय, सदाचार, नीति, संसारिक धारणा और विश्वास में हमारे देश और संस्कृति भी उसकी शिष्यता में आ जाएंगे।

समाज की बुराइयों कि सूचि बनाने में ज्यादा समय नही लगता। मै अपनी ही संस्कृति में पाए जाने वाली बुराइयों के विषय सोचता हूं। पारंपारिक पारिवारिक मूल्यों का त्याग हो रहा है। अधिकारी के प्रति बहुत कम सम्मान रह गया है। उपभोगिता काबू से बाहर हो चुकी है। पत्रकारिता मसीहियों की उपेक्षा करती है। जनता आत्मिक होने का दावा करती है परंतु संसारिक सामान्य धारणांए इश्वरहीन हैं। लैंगिक अश्लीलता मामूली बात बन गई है। सरकार और व्यवसाय में लिये जाने वाले निर्णय बायबल के अनुसार नहीं होते। हिंसा, अपराध, नशीलि दवाएं, और सांप्रदायिक शत्रुता करीब हर समुदाय में पाए जाते हैं। जीवन, अजन्मे, बीमार और वृद्धों के प्रति आदर कम हो गया है। मनोंरंजन इण्डस्ट्री स्वच्छंदता के बढ़ावा देती है। सिद्धांतों को दबाया जाता है। परमेश्वर और दूसरों से बढ़कर लोग उनके अधिकार और पसंद पर ध्यान देना ज्यादा महत्वपूर्ण समझते हैं।

> आश्चर्य की बात नहीं कि शोधकर्ताओं ने पाया कि संयुक्त राज्य अमरिका के नयजन्म प्राप्त मसीहियों में से केवल ९% लोग ही बायबल की विचारधार रखते है और कुल जनसंख्या के ४% लोग ही बायबल की विचार धारा रखते हैं। शोधकर्ताओं ने पाया कि बायबल की विचार धारा रखने वाले लोग बहुत कम ही विवाह के बिना जीवन विच्यकड़पन, समलै, गिकता, धृष्टता, व्यभिचार, अश्लील साहित्य, गर्भ पात या जुआ को मंचूरी देते है या खुद करते हैं या क्षमा करते हैं। इन शोधकर्ताओं ने कहा: यदि इस पृथ्वी पर हमारे लिये आदर्श बनकर आया कि हमें कैसे जीना चाहिये, तो हम उद्देश्य भी यीशु के समान जीवन व्यतीत करना चाहिये। दूख की बात है कि केवल कुछ लोग ही मसीह के प्रेम आज्ञापालन और उस्की प्राथमिकताओं का पालन करते है। लोगों का यीशु के समान व्यवहार न होने का कारण है कि वे यीशु के समान नहीं सोचते .... अधिकांश अमरिकनों कों यह भी पता नहीं कि बायबल के सिद्धांतों का किस प्रकार अनुकरण किया जाए ताकि जीवन के चुनौतियों और अवसरों का सामने कर सकें।[२९]

[२९] ब

हमें - कलीसिया को - पृथ्वी के नमक और जगत की ज्योति बनना होगा।[३०] हमारे समाज और संस्कृति को महापौर (भेयर) सेवा देना यह हमारी जवाबदारी और अवसर है। तब हमें कैसे रहना चाहिये?

सामाजिक परिवर्तन - क्या यह दीर्घायु होता है?

जिन समाजों ने बायबिल के अनुसार परिवर्तन का पहले अनुभव किया है वे उसका फल भविश्य में भी खाने से क्यों वंचित रह जाते है? रब्बी दानिएल लेपिन द्वारा लिखित एक लेख ''समान भूकम्प के असमान परिणाम'' उस प्रश्न के उत्तर पर प्रकाश डालता है।[३१] रब्बी लेपिन लिखते हैं कि जब संस्कृतियां बाइबल की विचारधारा से हर जाती हैं वे बड़ा जोखिम उठाति है। जब सुलमौन के समय के इस्त्राएल ने परमेश्वर की आज्ञा का उलंघन किया, वह संसार के समृद्ध राष्ट्र से घटकर हारा हुआ गुलाम राष्ट्र बन गया। जब यूरोप और उत्तर अमरिका के प्रगतिशील राष्ट्र उनके बायबल के सिद्धांतो से फिरने लगे उनका भी पतन होने लगा। एक देश की हरपीढ़ी (परमेश्वर) सृष्टिकर्ता को जानने, प्रेम करने और उसकी आज्ञा का पालन करने को समर्पण विषय या तो बढ़ती है या घट जाती है। हर पीढ़ी का जीवन में परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति लिया गया निर्मय और कार्य का प्रभाव उनकी ानेवाली पीढ़ियों पर पड़ता है। परमेश्वर और उसकी योजनाओं के प्रति झकाव एक पीढ़ी और उसके आने वाले वंश को उपर की ओर ले जाति है। परमेश्वर की योजना से फिर जाना पतन की शुरुवात करता है।

हां सामाजिक परिवर्तन बने रह सकता है, परंतु हर पीढ़ी उन कार्यों के लिये जवाबदार रहती है जो जीवन यामृत्यु की ओर ले जाती है। क्योंकि कलीसिया पीढियों को आगे बढ़ाती है, वही संस्कृति को एक पीढ़ी द्वारा दूसरी पीढ़ी तक उन सिद्धांतों को जो बाइबल के अनुसार नहीं है ले जाने से ''रोक'' ससकती है, और उसके समाज तथा राष्ट्र जीवन की ओर ले जा ससकती है।

स्थानीय कलीसिया समाज को प्रभावित करने के ६ कारण

मसीहियों के पास परमेश्वर के समान सोचने और उसकी योजनाओं के अनुसार जीने की योग्यता है। यह स्थानीय कलीसिया को एक अनोखी और कौशल्यपूण क्षमता प्रदान करती है कि वह किसप्रकार समाजपर प्रभाव डाल सके! हमारी सबसे बड़ी ताकत यह है कि मसीह कलीसिया का सिर है। परंतु उसके अलावा कम से कम ६ और तर्कपूण कारण है जो यह पताते है कि स्थानीय कलीसिया किस प्रकार समाज को जिसमे रहती है, प्रभावित करता है:-

१ स्थानीय कलीसिया की सर्वांगिण आज्ञा है। यदि स्थानीय कलीसिया परमेश्वर की महान योजना के अनुरूप हो तो हर रीति से व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में सम्मिलित रहेगी। उसके पास अपने समाज के लिये और प्रत्येक व्यक्तियों के लिये जो उसमें रहते हैं एक दर्शन होगा - अर्थात उनके भौतिक, आत्मिक, सामाजिक और बौद्धिक जरूरतों के पूर्ति के लिये। वह स्वंय को केवल अपने सदस्य या समाज के भलाई करने तक ही सीमित नहीं रखती। वह स्वंय को परमेश्वर के एक

[३०] ब

[३१] ब

या दो आसाओं के पालन तक ही सीमित नहीं रखती। यदि कलीसिया मे परमेश्वर की विशाल योजना का असर हुआ है वह उद्देश्यपूर्ण रीति से जीवन के सभी क्षेत्रों मे कार्य कत्ता है।

२. स्थानीय कलीसिया अपने लोगों को वचन से लगातार सुसिक्षत करती रहती है। कलीसिया उपदेशों, बाइबल स्टडी, संडे स्कूल छोटे समूहों और अन्य माध्यमों द्वारा नियमित रूप से सिखाए जाने प्रोत्साहित किये जाने, तथा तैयार किये जाने के लिये इकट्टी होती है। इक्ट्टे होने की यह नियमित प्रक्रिया सदस्यों को वेजहां भी हो - घर मे, समाज में, कार्यक्षेत्र में और स्कूल मे - परमेश्वर की इच्छानुसार जीना सिखाति है। प्रेरित पौलुस ने कहा कि कलीसिया के अगुवे परमेश्वर के लोगों को सेवा के लिये तैयार करते है। ''तयार करना'' जान से कहीं बढ़कर है। यह तैयारी और अनुभव प्रदान करता है। यह लोगों के कौशल्य, नीति, समझ, योग्यता आत्मिक वरदानों, विश्वास और इमानदारी का विकास करती है।

३. स्थानीय कलीसिया समाज के विभिन्न पहलूओं को दर्शाती है। स्थानीय कलीसिया समाज के सभी वर्गो, जाति समूहों, शैक्षणिक स्तरों, और व्यवसायों का प्रतिनिधित्व करती है। कलीसिया के सदस्य बाहरी झोपड़पट्टियों और बड़ी कालानियों में रहते है। वे शिक्षणिक संस्थाओं, व्यवसायी समुदाय, नौकरी पेशा, समाचार पत्र तथा कला, खेल की दुनिया चिकित्सक, समाज सेवी, कृषि, निक्री, उत्पादन, कारखाने कानून, श्रामिको, और सरकार में कार्यरत होते हैं।

कलीसिया के अलावा हम और कहां उन भिन्न लोगों को एक ही पटल पर पा सकते है? समाज के ये विभिन्न घटक एक अकेले स्थानीय कलीसिया में नहीं पाए जा सकते। यदि समाज के सभी भागों में स्थानीय कलीसियाए हो तो उनमे मसीह के प्रतिनिधि भी होंगे। कुल मिलाकर स्थानीय कलीसियाओं के पास समाज के कई भागों में परमेश्वर की इच्छा को प्रगट करने के अवसर होते हैं - जहां उनके सदस्य रहते हों, काम करते हों, इकट्टे होते हों दुकाने हो, पढ़ते हों या मनोरंजन करते हों। कलीसिया का बढ़ता हुआ प्रभाव तक दिख पड़ता है जब समाज में कलीसिया बनी रहे। यह तब नही दिख पड़ता जब मसीही कलीसिया नामधारी है। यदि नामधारी भी है। तो भी कलीसिया वह अपनी संस्कृति पर प्रभाव डाल सकती है जैसे प्रकाश की एक किरण अंधियारे को चीरती है।

४. स्थानीय कलीसिया देशी होती है। बहुधा, स्थानीय कलीसिया। समाज के बाहर से आए हुए लोगों के समूह ..... स्थापित की जाती है। प्रारंभिक ''लक्ष्य'' पूरा होने के बाद वह स्थानीय हो जाती है - उसके सदस्य और अगुवे उसी समाज से आते हैं जिनके बीच वे सेवकाई करते हैं। ऐसा उन्हीं कलीसियाओं के साथ होता है जिनका संचालन बाह्यी किसी संप्रदाय या रूदिवादी संस्था से न होता है।

५. स्थानीय कलीसिया आत्म-निर्भर होती है। क्योंकि स्थानीय कलीसिया देशी होती है अधिकतर वह स्थानीय श्रोतों के द्वारा अपने कार्यों के लिये आत्म निर्भर होती है। कई अन्य संस्थाए - विशेषकर जो गरीबों के बीच कार्य करती है - समाज में परिवर्तन लाने के लिये बाहर से आती हैं। उसलिये ऐसी कई संस्थाएं के कार्यक्रम बिना बाहरी सहायता के नही चल पाती परंतु स्थनिय कलीसिया देशों और आत्म निर्भर होने के कारण अपने नियमित कार्यों मे बिना किसी बाहरी या व्यक्तिगत मदद के चलती रहती है।

६. कलीसिया जीवन भर उसके सदस्यों के साथ जुड़ा देति है। कुछ अन्य ऐसी संस्थाए होती है जहां लोग स्वेच्छ से, नियमित रूप से जीवन भर यह सीखने के लिये आते रहते हैं कि किस प्रकार का जीवन जिया जाए। स्थानीय कलीसिया सभी उम्र के विश्वासयियों - बच्चों तरुणों, जवानो और ..... - को सिखाने के लिये बाध्य होती है। समाज को कुछ संस्थाओं में यह बात पाई जाति है शोसाठिया संस्थाएं - जब तक उनके विदायर्थी उनके साथ है - तब तक हि उन्हें जीवन के विषय सिखा सकते है। व्यवसाय भी तब तक ही उनके कर्मचारियों को प्रभावित कर सकते है जब तक वे उनके लिये काम करते हों। राजनीतिसे भी नागरिकों से तब तक कह सकते हैं जब तक वे सत्ता मे हों।

स्थानीय कलीसिया ऐसी जगह है जहा मदस्य लंबे अरसे तक जुके रह सकते है, जहा सहायता दी और ली जाती है जहा सदस्य परिपक्व होते है और अपने दायो के बाहर जानकर वचन की सेवकाई भी कर सकते हैं। यह एक अदभुत बात है। परमेश्वर हमें उनकी भरपूरी से भर देता है। उसका सामर्थ हममें कार्य करता है और उसकि महिमा कलीसिया में दोती है - सभी पीढ़ियों के लिये।[३२]

कलीसिया के उन्नति के विषय के दीपः

आज कई कलीसियाओं में एक गलत धारणा है- एक धारण कि ज्यादा से ज्यादा लोगों को सुसम ाचार सुनाने और संख्या को कलीसयि के बढ़ने से समज अपने आप ही बदल जाएंगे। परंतु कलीसिया का प्राथमिक उद्देश्य गिन्ती मे बढ़ना नही होना चाहिये! कभी-कभी गिन्ती में बढ़ने वाली उन्नति के लियें कुछ कीमत भी चुकानी पड़ती है जैसे हमारी संस्कृति को ठेस न पहुंचाने या हमारि संस्कृति के उन पहलुओं का विरोध न करनेसे जो परमेश्वर का शिक्षा के अनुसार न हो। के उद्देश्य से उपदेश को अप्रभावि करना। प्रेरित पौलुस लिखता है कि हम एक युद्ध में है।[३३] यह एक बड़ा युद्ध है, छुटपुट चलनें वाला नही। हमें अपने पक्ष का बचाव करना चाहिये और विरोधियों को चुनौति देना चाहियें। हमारे साथ ...... के लिये हमे लोगों को लुभाना या शिश्यता के नियमो मे ढ़ीला नहीं करना चाहिये।

मेरे एक सहकर्मी ने मुझे दो कलीसियाओ की सही तुलना को बताया। ये भौतिक नही है लेकिन सेवकाइयों की नीति है। एक झील चाहे वह कितनीभी बड़ी क्यों न हो, फिर भी उसकी सीमाए है - वह जड़ या धर सकती है। वह स्थिर भी हो सकती है। परंतु नदियां किसी भी दिशा में जा सकती है। उनमें गति होती है, वे प्रवाह को बदल सकती है और वे लोगों को जहां वे जाना चाहते है वहां पहुंचा सकती हैं। झील के जैसी कलीसिया अधिक से अधिक लोगों को इकट्टा कर सकती है परंतु उसकी सफलता बजाय इसबात से कि उसके लोग चरित्र और सेवा में बढ़ रहे हैं या नही, उसके आकार से मापीजाती है। नदी के जैसी कलीसिया बहते वक्त लोगों को प्रभावित करती हैं और उनके किनारों तक छलकती हैं। झील का मुद्दा होता है कि लोग कितने थे।'' नदी का मुद्दा होता है ''जो लोग आए थे उनका क्या हुआ।'' झील का प्रश्न होता है ''कितने लोगों ने कार्यक्रम में भाग लयि?'' नदी का प्रश्न होता है ''कार्यक्रम के द्वारा कितने लोगों में परिवर्तन आया''[३४]

---

[३२] ब

[३३] ब

[३४] ब

जब कलीसियाए स्वर्गीय सिद्दांतों के आधार पर उन्नति करती है, उनके सदस्य उद्दारकर्ता की प्रभुता के अधीनता में समर्पित होते हैं और उसकी प्रभुता को उनके व्यक्तिगत, पारिवरिक और सामाजिक जीवन मे प्रगट करते है। जब कलीसियाओं की उन्नति उस प्रकार से होती है तब समाज में परिवर्तन आता है। जब परमेश्वर की आसा का पालना जैसे स्वर्ग में उसी तरह पृथ्वीपर किया जाता है तब परमेश्वर का राज्य दिख पड़ता है। बात संघ्या की नही परंतु आज्ञा पालन की है। जब उसकी आज्ञापालन की चाति है तब संस्कृतियों को बदलने के लियें परमेश्वर कलीसिया का उपयोग करता है।

स्थानीय कलीसिया की बल और क्षमता

कहीं भी किसी भी संस्था से बढ़कर संस्कृतियों को बदलने की सबसे अधिक क्षमता कलीसिया में होती है। जब हम क्षमता को देखते है वह हमे यह समझने में सहायता करती है कि मसीह ने कलीसयिा को क्यों बनाया, विशेषक स्थानीय कलीसिया जिसके द्वारा वह अपनी महान जोयना को लागू करता है। कलीसिया उसके राज्य की घोषणा करती है और उसे आगे बढ़ति है। वह परमेश्वर की इच्छा को जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे पृथ्वी पर भी पूरी करने में सहायता करती है। कई स्थानीय कलीसियाएं ऐसी समझ नही रखतीं, कारण वे अपनी जिम्मेदारी की समझ नही पाती और वे परमेश्वर द्वारा दी गई उनकी छिपी क्षमता को नहीं पहचानती। परमेश्वर के आदर्श और सामर्थ के द्वारा वे काफी क्षमता रखती है।

परमेश्वर कलीसियाओं और व्यक्तियों को बुला रहा है कि वे उसे समाजों में प्रगट करे, खेदित तथा दुखी लोगों को सात्वना दें और समाज, सदाचार तथा सिद्धांतों के पथप्रदर्शक बने। कलीसियाओं को उनकी अपनी नही परंतु परमेश्वर की सामर्थ से कार्य करना चाहिये। परमेश्वर सामर्थी है। वह हमारे बिना भी परिवर्तन लासकता है, परंतु उसने हमें चुना है। वह हमें असंभव काम करने को नही कहता और न त्याग देने के लिये। वह हमें तैयार करता, अधिकार देता, लोग देता और वरदान देना जिनकी हमें जरूरत होती है और उस कार्य को पूरा करने में हमारी अगुवाई करता है। कलीसिया उसके हाथों में एक साधन है जो पुन:मिलन में मध्यस्थी करी है। ऐसा कारण जिसें हम पूरी तरह नही समझ सकते वह यह है कि संसार मे प्रभु परमेश्लवर ने उसकी योजना को पूरी करने के लिये उसके लोगों को चुना है-ताकि वे दुखी संसार में उसके हाथ, बाहें, पैर और बोलने वाले बन जाएं

स्थानीय कलीसिया को गवाही के लिये तैयार करना

१०

बीस वर्ष से भी ज्यादा वर्षो से मै ने परमेश्वर को विश्व के कलीसियाओं को ात्मिक सेवकाई के विस्तृत कार्यसूचि से वचन की विशाल योजना की ओर लेजाने के लिये स्वतंत्र करते हुए देखा है। एक संकृचित केंद्र पतित संसार के प्रति परमेश्वर की योजना को छिपारखता है। वह कीसिया के जो परमेश्वर की दूतावास है, मार्ग में रुकावट डालता है। परंतु जब एक कलीसिया अपने ..... को परिवर्तन के उन सब कार्यों को करने के लिये प्रेरित करती है जो यीशु ने महापौर (मेयर) की तरह किया होता तो उसके परिणाम प्रभावित तथा आश्चर्यजनक होते हैं।

मैं बताना चाहता हू कि सर्वांगीण सेवकाई में ध्यान लगाना सुसमाचार प्रचार की जलरत को किसी भी तरह से कम नहीं करता - अर्थात परमेश्वर के प्रेम और छुटकारा को कहने और लिखने में रुकावट नही उटाता। सुसमाचार का प्रचार कलीलिया के लिये परमेश्वर की योजनाओं के पूरा करने में बराबर का हिस्सेदार है। परंतु हम यहां दूसरें हिस्सेदार के विषय बात कर रहे है - अर्थात परमेश्वर के प्रेम का प्रायोजित प्रदर्शन। हम उस बात की समीक्षा कर रहे हैं कि ..... सेवकी किस प्रकार स्थानीय कलीसिया और उसके सदस्यों के जीवन मे गरहाई से एक विशेषता बन जाति है।

आफ्रिका के एक संप्रदाय में प्रत्येक स्थानीय कलीसिया ने पूरेवर्ष के लिये ''एक दूसरे से प्रेम करने'' का ..... किया। यह अच्छी बात है। फिर भी हमें यह कभी नहीं कहना चाहिये कि ''और वह पिछले वर्ष का पूण था।'' जब सवाँगिण सेवकाई हमारि कलीसिया की डी.एन.ए. है तो हमारे पड़ोसियों से प्रेम ाने वाले सभी वर्षो के लिये हमारा ..... होजाता है।

डी.एन.ए. का रोपण

जब मै एक घरेलू आराधना कलीसिया में प्रचार कर रहा था तो वहां मुझे एक प्रश्न पूछा गया। एक विश्व स्तरीय अगुवे ने पूछा:

> ''बॉब, आप संसार में जो कई स्थानीय कलीसियाओं को देखते हैं तो उनमें और सर्वांगिण सेवकाई में क्याफर्क पाते हैं? व कौनसी बातें है जो उन्हें इस शिक्षा को ''पकडे रहने'' और उसी प्रकार जीवन झिताने की प्रेरणा देती है? हमने हमारे चर्च में एक सभा का आयोजन किया। हमारी घरेलू कलीसिया ने कुछ मूल योजनाओं पर कार्य किया। परंतु मैं चाहता हूंकि ये हमारी कलीसिया के द्वारा भी ..... जाएं! मैं चाहता हूं कि ये भी हमारे ही अंग बन जाएं! वे कौनसी नाते है जो सर्वांगिण सेवकी को स्थानीय कलीसिया के डी.एन.ए. के अंग बनाती है।

यह कितना चुनौतिपूर्ण प्रश्न है? विज्ञान कहता है कि मेरे डी.एन.ए. में एक अनोखी ''गुप्त पहचान'' है। मेरा डी.एन.ए. मेरे विषय जानकारी देता है मेरी उपस्थिति को बताता है, मेरी योग्यताओं को और मेरी विशेषताओं को बताता है - उस बातों को जो मै अपने बच्चों और नाती-

पोतो को वंश की पहचान के रूप में देना हूं। एक स्थानीय कलीसिया का डी.एन.ए. उसकी पहचान की बारीकी गुण और मुख्य हो सकते हैं - वे अनोखे और उल्लेखनीय जो वह अपने सदस्यों को देती है।

मेरा मित्र यह जानना चाहता था कि किस प्रकार एक स्थानीय कलीसिय सर्वांगिण सेवकाई में घुल-मिल सकती है जैसे वह उसका पहचान का ही क अंश हो। मैं रात भर जागता रहा और सही हल पाने की कोशिस करता रहा। सुबह होने तक मैने पांच विशेषताओं को जाना जिन्हें मैने युगांडा के बडे चर्च के पास्टर को बताया और उस पर चर्चा किया। उनकी कलीसिया में सर्वांगिण सेवकाई का डी. एन.ए पाया जाता हैं और मै उनकी राय जानना चाहता था। वास्तव में, जब लोग हमारी कलीसिया के साथ जुड़ना चाहते हैं तो हम उन्हें बताते हैं, ''हम सर्वांगिम है। यही हमारी पहचान है। यदि आप हमारे साथ जुड़ना चाहते हैं तो इसके लिये आपने आपको तयार करना होगा। यदि आप हमारे अंग बन जाते हैं तो आपको भी सर्वंगिण सेवकाई करना होगा।'' उन्होने बताया कि जब वे कलीसिया के साथ जुह जाते हैं तो वे कलीसिया के डी.एन.ए को जान लेते है। वे उनसे की जाने वाली उम्मीदों को जान लेने हैं-कि उन्हें एक छोटे समूह में रहना होगा, उन्हें समाज की सेवा करनी होगी और यह भी जान लेते हैं कि उन्हें जिम्मेदार ठहराया जाएगा। वे कलीसिया के संगठित (विविध) व्यक्तित्व को समझते है। युगांडा के पास्टर इन पाचों बातों से सहमत हो गए। उसके पश्चात हमारे सहकर्मियों ने दो और बातों को बताये - जिन्हें मिलाकर कुल सात बाते हो गई।[१]

स्थानीय कलीसिया के डी.एन.ए के घटक

१. *दोष स्वीकृति:* कलीसिया का सर्वोच्च अगुवा इस बात को अच्छी तरह जानता और आश्वत है कि मसीह के प्रेम के प्रदर्शन में कोई समझौता नहीं होता। यदि अगुवे उस से आश्वत नहीं है तो सर्वांगिण सेवकाई कलीसिया के डी.एन.ए का भाग नही हो सकती - यदापि कलीसिया कभी[२] सर्वांगिम सेवकायी भी करती रहै। कलीसिया के अगुवों को यह बात भी मानने होगी कि जब वे पने पड़ोसियों से प्रेम करते हैं तो यह परमेश्वर ही है जो उनकी सेवकाई का फल देता है। वे फल को देख नही पाएंगे परंतु वह उनकी अगली पीढ़ी में ही मिलेगा।

DNA Elements

1. Conviction
2. Repentance
3. Commitment
4. Application
5. Ongoing teaching
6. Accountability
7. Acknowledgement

२. *पश्चाताप:* एक सर्वांगिण कलीसिया उसके पिछले आज्ञा उलंघन, भरताव के लिये पश्चाताप करती है और परमेश्वर की संगीत में नये मार्ग पर पुरे हृदय और समर्पण के साथ चलता है। कई स्थानो में जहां हमने प्रचार किया, परमेश्वर की आत्मा ने उसके महान उद्देश्य को समझने के लिये कलीसिया की आखें खोलना शुरू कर दिया हैं। परमेश्वर ने पास्टरों और अगुवों में समाज के पतन के ..... हल ढूंढने की उच्छा जागृत कर दिया है। वे उनकी सेवकाई और समाज के लिये परमेश्वर की योजनाओं के बीच की दूरी को देख सकते हैं। वे मानते है कि कलीसिया परमेश्वर

[१] ब

की योजनाओं को पूरा करने में असक्षम रही है। परमेश्वर की इच्छा को पूरा न करपाना पाप है - भले ही वह जानबूअकर न किया हो। केवल पश्चाताप ही उसका हल है, जिसे मैं आपको समझाना चाहता हू। ''पश्चाताप'' करने का अर्थ है घूमजाना और दिशा बदल लेना। यह घूमजाना और पवित्र आत्मा की अगुवाई मे परमेश्वर को हमें बदलने का मौका देना है। बाइबल हमें उन उत्सवों के विषय बताती है जहां उल्लेखनीय अवसरों को मनाया गया। एक कलीसिया आराधना सभा या किसि अन्य तरीके से उसकी पिछली अंधी अवस्था के विषय पश्चाताप करना चाहेगी और बदलने तथा आगे बढ़ने के लिये समर्पित होना चाहेगी।

३. *समर्पण:* पास्टर और अगुवे वे सब करने के लिये समर्पित है जो उनकी कलीसियाओं को सर्वांगिण -सेवकाई की ओर ले जाति है। वे कलीसिया के लिये दर्शन के साथ कार्य करते हैं, और वे व्यक्ति गत रीति से सेवकाई के जीवन को समर्पित है। उनका समर्पण त्याग, जोखिम, समय और प्रयत्नों की मांग करता है। उन्हें पुनर्गठित होना पड़ेगा। उन्हें कलीसिया की कुछ गतिविधियों कों छोड़ना होगा। उन्हें कलीसिया के सदस्यों को खोना होगा। उन्हें अर्थिक हानि उठाना होगा, या उन्हे किसी कार्य को करने के लिये अधिक धन की आवश्यकता होगी। उनका संप्रदाय (संस्था) या सहकर्मी उनकी इमानदारी पर शक कर सकते है। फिर भी कलीसिया के अगुवे सर्वांगिण सेवकी को कलीसिया की सामान्य स्वाभाविक जीवन शैली बनाने के लिये पूरी तरह समर्पित है।

४. *अमल:* स्थानीय कलीसिया के अगुवे अपनी शिक्षा और व्यक्तिगत जीवन में सर्वांगिण सेवकी को अमल में लाने पर जोर डालते है। कलीसिया की गतिविधियों मे सर्वांगिण सेवकाई दिख पड़ती है। कलीसिया के अगुवे सर्वांगिण सेवकाई के न केवल सोचने और बोलने वाले है परंतु उसके अनुसार कार्य करने वाले भी है। वे उन तरीकों का जिनका वर्णन आने वाले अध्यायों में है - अर्थात प्रेमका अनुशासन और मूल योजना - का उपयोग करते और ..... करते है। करीब करीब इस उदेश और बाइबल अध्ययन में सर्वांगिण सेवकाई के विषय कहाजाता कियाजाता और अमल में लाया जाता है।

५. *नियमित शिक्षा:* कलीसिया के सदस्यों को अच्छे कार्य करने का आज्ञा के विषय याद दिलानेकी जरूरत होती है। सर्वांगिण सेवकाई के विषय किसी सम्मेल में बताया जाता है परंतु उसके पश्चात उसे भुलाया नहीं जाना चाहिये। यह वैसा ही होगा जैसे सुसमाचारा के द्वारा किसी व्यक्ति को मसीह के पास लाना; परंतु ..... उन्हें वचन की याद न दिलाना उनको वचन के विषय जानकारी नदेने तथा समझने के विषय ध्यान न देना होगा। सर्वांगिण सेवकाई कलीसिया की ..... तारो से जुडी हुई है - उपदेश में बाइबल अध्ययन में उपासना में छोटे समूहों मे और तैयार करने में। सर्वांगिण सेवकाई कलीसिया में अधिकतर जोर दिये जाने वाली चर्चा का विषय है। सर्वांगिण सेवकी में कलीसिया नियमित और सुचाऊ रूप से प्रचार, शिक्षा और प्रशिक्षण प्राप्त करती है।

६. *जिम्मेदारी:* जिस कलीसयिा में सर्वांगिण डी.एन.ए. पाया जाता है वहां विश्वासयोग्य और प्रेमपूण सेवा के प्रति - व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर - भौतिक जिम्मेदारी पाई जाति है। कलीसिया के अगुवे स्वयं को और सदस्यों को सेवा कार्य के लिये जिम्मेदार ठहराते हैं। लोग जवाब देही देना

पसंद करते है। छोटे समूह के अगुवे अपने समूह की सेवकाई से संबंधित रिपोर्ट पेश करते है। हर व्यक्ति जवाबदार होता है और कलीसिया भी उसके सदस्यों को जवाब देही होती है। जिस प्रकार कलीसिया धन हाजिरी, सदस्यता, बप्तिस्मा या मसीहि के प्रति समर्पण के विषय रिपोर्ट पेश करती है, उसी प्रकार वह सर्वांगिण सेवकाई के विषय भी रिपोर्ट पेश करती है।

७. *मान्यता:* जब सर्वांगिण सेवकाई किसी स्थानीय कलीसिया के डी.एन.ए का भाग बन चाती है, सब कलीसिया उसके या उसके सदस्यों द्वारा किये गये सेवा कार्यो का सम्मान किया जाता है। यह उत्सव लोगों की अच्छाईयोंका सम्मान करने के लिये नहीं-परंतु इसलिये होता है कि परमेश्वर ने लोगों को जैसा वह चाहता है वैसे हो उसके राजदूत होने के लिये सामर्थी बनाया। इसके कई तरीके है:

- *आराधना सभा में:* कलीसिया की साप्ताहिक आराधना सभा में गवाही देने की अनुमति दी जाती है। उस बात का ध्यान रखा जाता है कि उसके लोगों द्वारा केवल परमेश्वर को ही महिमा मिले मनुष्य को नहीं। मत्ती ५:१६ कहता है, ''उसी प्रकार तुम्हारा उजीयाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले काम को देखकर तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है, बढ़ाई करें।''

- *छोटे समूहों में:* संडे स्कूल, बाइबल स्टडी या घरेलू समूह में जैसी उम्मीद की जशाति है हर व्यक्ति उसकी सेवा मे आज्ञापालन के कारण परमेश्वर ने पिछली सभा के पश्चात उसका किस प्रकार उपयोग किया उन बातों का वर्णन करता है।

- *सूचना प्रसारण के द्वारा:* कलीसिया उसके सूचना फलक पर या समाचार पत्रिका में या कलीसियाई पत्र में घटनाओं और संबधित छायचित्रों को स्थान देती है।

जब हमारा नया जन्म होता है तब हमें मसीह का डी.एन.ए प्राप्त हो जाता है - अर्थात उसके स्वरूप होजाना। हम पहले से ही उसके स्वरूप है परंतु हमें उसके अनुसार चलने की जरूरत है। वचन मे भी सर्वांगिण सेवकाई के विषय पहले से ही लिखा है। जब स्तानीय कलीसयिा के लोग उसी प्रकार कार्य करते है तब वह उनकी कलीसिया के डी.एन.ए का अंग बन जाता है।

स्थानीय कलीसिया के लिये परमेश्वर के दर्शन को जानना

जब स्थानीय कलीसियाएं सर्वांगिण दर्शन को अपना लेती हैं और सर्वांगिण सेवकाई के लिये उनके सदस्यों को तैयार करती है, उन्हें सर्वांगिण दर्शन को जानने, अपने लोगों को अवगत कराने और समाज में प्रायोग रूप से अमल में लाने के लिये अवश्य कदम उठाना चाहिये।

तैयार करना शिक्षा देनेमे बढ़कर है। उसका अर्थ नमूना पेश करना, प्रशिक्षण देना, साहित्य प्रदान करना, चरित्र और नीति का रोपण करना, दर्शन को बढ़ाना जान और अनुभव बांटना, परिपक्व करना और शिष्य बनाना है। यह नये पैमाने पर तैयारी है।

कलीसिया के अगुवो द्वारा सर्वांगिण सेवकाई के दर्शन की प्राप्ति के विषय हम उनसे पूछना चाहेंगे: ''यदि यीशु महापौर (मेयर) होना तो आपके समाज मे किस प्रकार का परिवर्तन हुआ होता।'' दर्शन

ही कुंजी है। ''जहा दर्शन नहीं लोग नाश हो जाते हैं।''[२] बिना दर्शन वाली कलीसिया अपनी पूर्ण वस्था को बनाए रखने से बढ़कर बहुत कम ही कुछ कर पाती है। उसके पास समाज मे परमेश्वर के राज्य के लिये कुछ करने के लिये बहुत कम ही संभावनाए होती है। परंतु एक दार्शनिक कलीसिया के पास अल्पकालीन और अनंतकालीन महत्व के कार्यो को करने की ..... क्षमता होती है।

कलीसिया के लिये परमेश्वर का दर्शन साधारणत: चरवाहे से ..... तक पहुंचता है। उसके पश्चात वह कलीसिया। की रोजमर्रा जीवन में - मिशन स्टेटमेंट, पुलपिट (मंच) बाइबल अध्ययन, संडेस्कूल, छोटे समूह, और सेवा योजना ओं से - बताया तथा कार्यान्वित किया जाता है। उसे कलीसिाया की जीवनशैली बनाने के लिये दर्शन को बांटना, उसके अनुरूप कार्यकरना महत्वपूर्ण बात है।

दर्शन को कलीसिया में बांटने के लिये पास्टरगण सबसे अधिक तम प्रभावशाली होते हैं जब वे उसे कलीसिया के इन सभी अगुवों को प्रथम ..... है - पास्टरगण, अगुवे शिक्षक और कर्मचारी । पास्टर और अगुवों को चाहिये कि वे वही दर्शन रखना और अमल मे लाना चाहिये और लोगों की परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप अगुवाई करना चाहिये।

प्रचार तब अधिक प्रभावशाली होता है जब सारी कलीसिया उसे सुने। उपदेशों के द्वारा कलीसिया वचन को सुनती है और वही बात संडेस्कूल, बाइबल स्टडी, करेलू संगति, शिष्यता समूह आराधना, जवानों की सेवा परामर्श सेवा और सुसमाचार प्रचार समूहो तक पहुंचाती है।[३]

कलीसिया के मिशन और दर्शन प्रक्कथन के रूप में बहु उद्देशीय सेवकाई का एक भाग होना महत्वपूर्ण है। कलीसिया के प्रसिद्ध अगुवें ने मिशन स्टेटमेंट को कलीसिया की सेवकाई के संक्षिप्त विवरण के रूप मे परिभाषित क्रिया जो कलीसिया के अस्तित्व में होने की आवश्यकता को बताता है - उदाहरण: भेचे जाने के लियें महान चुनाव[४] और महान आज्ञा।[५] दर्शन की व्यख्या स्थानीय कलीसिया की अदभुत बुलाहट को परिभाषित करती है - उसकी भौगोलिक स्थिति, जिनके मध्य सेवकी की जाती है, तरीके या अंतिम .....।[६] बहुधा व्यक्तिगत रूप से मै ''दर्शन'' को बहुत विशाल और ''मिशन'' (लक्ष्य) को अनोखा समझता है। हर रीति से यहस्थानीय कलीसिया की सामान्य तथा विशिष्ट बुलाहट को बहू उद्देशीय होने में महत्लवपूर्ण है। यह आवश्यक है कि कलीसिया का दर्शन और लक्ष्य केवल परमेश्वर की योजना के ही अनुरूहप है - ातत्मिज्ञक भौतिक और सामाजिक क्षेत्रों में। वे इन बातों कों प्रगट करेंगे जिन्हें मैने निम्नलिखित तरीके से क्रमबद्ध किया है:

- मसीह को प्रभु बताना और उसके लिये दूसरों की सेवा करना (२कुरि-४:५)।
- संसार में जाकर राष्ट्रों को शिष्य बनाना, और परमेश्वर की आसाओं को मानना सिखाना (मत्ति २८:१९)।

---

[२] ब

[३] ब

[४] ब

[५] ब

[६] ब

- परमेश्वर की योजना को पूरी करना और परमेश्वर के राज्य को बढ़ाना (मत्ति ६:९-१०)।
- सभी बातों को बहाल करो (कुल १:२०)।
- संगति, आत्मचिंतन और प्रार्थना के विषय सिखाना। (प्रेरितों के काम २:४२)
- नमक, ज्योति, और खमीर होना (मत्ति ५:१३-१६; १३:३३)
- न्याय चुकाना, कृपालु होना और परमेश्वर के साथ नम्रता से चलना। (मीका ६:८)
- संगीत और स्तुति के द्वारा आराधना करे। (फूल ३:१६)
- पवित्र लोगों के सेवा के कार्य के लिये सिद्ध करना (इफि ८:११-१२)
- छोटे से छोटे के साथ वही करना जैसा मसीह साथ करते है। (मत्ति २५:४०)
- प्रेम और भले कामों के लिये एक दूसरे से मिलना और प्रोत्साहित करना (इब्रा.१०:२४-२५)
- एक दूसरे की चिंता करना (रोमियो १२:१३)
- सब बातों से बढ़कर परमेश्वर से और अपने पड़ोसियों से प्रेम करना। (मत्ति २२:३७-३९)

यदि लक्ष्य और दर्शन नही तो पास्टर और समर्पित अगुवों की यह जिम्मेदारी है कि वे उन्हें तैयार करें। जो लोग किसी संस्था में है उन्हें संस्था का मिशन स्टेटमेंट का पालन करना चाहिये और उनके संस्था की बहुउद्देशीय सेवकाई की बुलाहट को दर्शन के स्टेटमेंट के द्वारा स्पष्ट करना चाहिये।

दर्शन को दूसरों के साथ बांटना और लागू करना

जब पास्टर और अगुवों द्वारा बहुउद्देशीय सेवकाई का दर्शन समझ लिया गया हो तो उसे कलीसिया के व्यक्तिगत, पारिवारिक और छोटे समूहमें और उनके द्वारा बांटना और अमल में लाया जाना चाहिये। कभी-कभी पास्टर और अगुवे उस समय ऐसा सोचने लगते है; ''अभी ठहरों! हमारी कलीसिया छोटि है। हमारे पास धन नही है! लोग ऐसा नही करेंगे।'' मेरा तात्पर्य बडे बैमाने के योजनाओं से नहीं है जिसके लिये काफी धन और समय निवेश करने की जरूरत होती है। नही, यह एक बड़ें पैमाने के दर्शन का है जो छोटी योजनाओं, समय के त्यागपूर्ण निवेश, वैशल्य और अन्य साधनों द्वारा पूरा किया जा सकता है। परमेश्वर की बड़ी योजनाओं के लिये छोटी-छोटी बातों पर अमल करना अर्थहीन दिखापड़ेगा परंतु दूर के गंतव्य एक बार में एक कदम के उठाए जाने के द्वारा ही पूरे किये जाते है। परमेश्लवर की इच्छा को एक बार मे एक बात अमल करने के द्वारा ही पूरी होती है। मै यह कहना चाहता हूं, ''..... को खाने का सबसे अच्छा तरीका क्या है?'' उद्दर है, ''एक बार में एक .....!'' कृपया समझने की कोशिश करे कि मै वासतव में ..... नही खाना। परंतु जब मै विशाल कार्य को देखता हूं, वह मुझे यह समझने की याद दिलाता है कि एक के बाद एक छोटे पैमाने पर किये गए ..... दर्शन को पूरा कर सकते है।

म्यानमार के हमारी एक सभा में हमने सैकड़ों पास्टर और ..... के अगुवों को कई छोटे समूहों मे बांट दिया। हमने प्रत्येक समूह से छोटी योजना को तैयार करने और संपूर्ण सभा के सामने उसे प्रस्तुत करने को कहा। एक ..... चिकित्सक उसके देश की चरूरतों को अच्छी तरह जानती थी और उसने सोछि कि उसके समूह की साधारण योजना अर्थहीन होगी। फिर ..... अन्य समूहों

ने भी अपनी योजना को तैयार किया और उन्हें प्रस्तुत किया। अब उसने उन सब कों क सात पाया तो वह चिकित्सक उनके सामूहिक कार्य को देखकर चकित रह गई!

दर्शन को पूरा करने के लिये कलीसियों को पारंपरिक और अपारंपरिक शिक्षा के माध्यम से कार्यरत करने के लिये निम्नलिखित तरीके है - अर्थात एक बार में एक ..... खाना।

वे जहां भी हों

पहला स्थान जहां परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग उसका प्रतिनिधित्व करें वह है - वे जहां हों वहीं से शुरुवात की जाए! स्थानीय कलीसिया अकसर उसके लोगों कों ..... सबसे ज्यादा परिवर्तनशील कार्यों में सिद्ध करने मे लापरवाही कर देती है। अर्थात उनके अपने व्यक्तिगत जीवन की गवाही देने में। व्यक्तिगत रूप से पवित्र लोगों को सिद्ध करना और हुन्हें सेवा के कार्य में सम्मिलित करना कलीसिया के प्रत्येक अगुवें की जिम्मेदारी का एक भाग है - अर्थात, परमेश्वर के लोगों को सेवा के कार्य के लिये तैयार करना।[७] मसीह के अनुयायी होने के नाते हमें, सेवा के क्षेत्र में जहां हम अधिक से अधिक समय बिताते हैं, परमेश्वर का आसा का पालन करना चाहियें - हमारा अतिरिक्त या दान किया हुआ समय नही। यह स्थान हमारा घर, फॅाक्टरि, छापखाना, कार्यालय, चिकित्सालय या पारलियमेंट भी हों सकता है। सभी मसीही परमेश्वर के राज्य के राजदूत है जो अपने अपने स्थानों में जहां वे अत्याधिक प्रभाव ..... है परमेश्वर की योजनाओं को प्रस्तुत करते है।

इब्रातियों १० वां अध्याय उसी जात की पुष्टि करता है: ''और प्रेम, और भले कामों में उसकोन के लिये हम एक दूसरे की चिंता किया करें, और क दूसरे के साथ इकठ्ठा होना न छोड़े।'' ये पद आपस से संबंधित हैं। कलीसिया के लोगों को तरस की सेवा के लिये प्रोत्साहित होने और निर्देश दिये जाने के लिये इकठ्ठा होना है और जो कुछ उन्हों ने सीखा है उसे करने के लिये विभिन्न स्थानों में जाना है। मेरा विश्वास हैं कि परमेश्वर यह जानता था कि हमें प्रोत्साहन निर्देश और उसके प्रति उत्तरदायित्व की जरूरत पड़ेगी।

उपदेशों और शिक्षाओं को व्यक्तिगत रूप से अमल में लाना

संपूर्ण स्थानीय कलीसिया को बहुउद्देशीय सेवा के लिये उपयोग में लाना इतनी ही बुनियादी (महत्वपूर्ण) बात होगी जितनी कि लोगों द्वारा सुने गये उपदेशों और शिक्षाओं को जो उन्हों ने सीखा है अमल में लाना - चाहें वे जहां भी हों। प्रत्येक शिक्षा के अंत में छोटे समूह की सभा, या उपदेश को अगुवों द्वारा:-

- उन कार्यों को जो वास्तविक, विशिष्ट और तुरंत करने योग्य है, उन्हें करने के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।
- सुनने वालों को सीखी गई कोई भी बात को अमल में लाने के लिये आव्हन दें।
- दूसरे व्यक्ति द्वारा अमल में लाई जाने वाली बात के लिये उन्हे प्रार्थना करने के लिये अनुरोध करें।
- अगली सभा में उसविषय रिपोर्ट देने या गवाही देने के लिये उन्हें प्रेरित करें।

[७] ब

[८] ब

१. उनकार्यों को जो वास्तविक, विशिष्ट और तुरंत कसे योग्य है, उन्हें करने के लिये प्रोत्साहित करेः वक्तागण अकसर ऐसी नई बातों को अमल मे लाने का ..... देते है जिसे लोग भूल जाते जिसे असंबंधित पाते है या जिसे करने की कोशिश भी नही करते। उसके बदले उन्हें सुनने वालों को उनबातों को अमल में लाने के विषय बताना चाहिये जो वास्तविक विशिष्ट, और तुरंत कर सकने योग्य है। यदि पास्टर और अगुवे यहबताएं कि हाल ही में उन्होंने उनबातों पर किस प्रकार अमल किया है तो यह सहायक सिद्ध होगा।

- अमल में लाने वाली बात वास्तविक होना चाहिये।
- यह स्पष्ट होना चाहिये. ''मुझे क्या करना है?'' ''कब करना है?'' ''किसके साथ और किसके लिये करना है?''
- यदि वह तुरंत किया जाए तो उत्तम होगा अर्थात अगलि मीटिंग या सभा के पहले हूरा हो जाये।
- किसी भी बात पर अमल करते समय भोजन, आराम या नींद के त्याग करने की जरूरत होगी। उन्हें बाइबल में निर्देशित अन्य महत्वपूर्ण बातों को नजर अंदाज करके नहीं किया जाना चाहिये (जैसे परिवार, कार्य या चर्च)।

२. सुनने वालों को एक बात पर अमल करने के लिये आव्हान दें। पास्टर और अगुवों को चाहिये कि वे उपदेश या शिक्षा देने के पश्चात सुनने वालों को व्यक्तिगत रूप से अमल करने योग्य बात को चुनने के लिये प्रेरित करें। उन्हें कुछ जानने और कुछ भी न करने की आदत छोड़ने के लिये सिखाए। उन्हें प्रार्थनापूर्वक परमेश्वर से मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिये प्रोत्साहित करें। ऐसा करने से उन्हें अमल करने योग्य कई बातें मालूम होगी तब वे निर्णय लेने के लियें परमेश्वर से मार्ग दर्शन प्राप्त करें।

३. दूसरे व्यक्ति द्वारा अमल में लाई जाने वाली बात के लिये उन्हें प्रार्थना करने के लियें अनुरोधरे। सभा के अंत में पास्टर या समूह के अगुवे सहभागियों को उनके द्वारा अमल में लाने चुनी गई बात को दूसरों के साथ मिलाने और एक दूसरे के लियें मिलकर प्रार्थना करने के लिये कहें। यह एक छोटे समूह की बैठक में या सभा के पश्चात आव्हन के दौरान किया जा सकता है। अमल के अपने तरीकों को दूसरों को बताने से उन्हें अपने निर्णय को कार्यान्वित करने में सहायता मिलेगी। ऐसा करने से जब दूसरा व्यक्ति सुनियोजित तरीके से अमल करे तो यह आनंद की बात होगी।

४. लोगों को अगली अगली आराधना या मिंटिंग में रिपोर्ट देने या गवहि देने के लिये कहें। ऐसा करने के द्वारा पास्टर और अगुवे सदस्यों को गवाहि देने या रिपोर्ट देने की जवाबदारी देते है। समूह में मीटिंग शुरू होते ही एक के बाद एक जल्दी-जल्दी रिपोर्ट दीजाएं। चर्च में एक सदस्य द्वारा गवीाह दी जासकती है या कलीसिया के लोग २ या ३ समूह में बांटकर जल्दी-जल्दी गवाही दे सकते है। यह इस बात को पुष्टि करता है कि बातों पर अमल किया गया है, कारवाई के महत्व को बढ़ाता है और लोगों को एक दूसरे के लिये प्रार्थना करने के लिये प्रोत्साहित करता है।

कोी भी इमारत सुरक्षित रीति से तब तक बढ़ाई नही जा सकती है जब तक उसकी ..... मजबूत न हो। उसी प्रकार मसीह के अनुयायीयों की भी मजबूत नींव होना चाहिये यदि वे अपने समाज में उसके राज्य को फैलाना चाहते है। यह नींव सही इश्वरसान से भी बढ़कर है, यह परमेश्वर का स्वभाव है जो उनके प्रतिदिन के जिवन में दिखाता है। जब व्यक्तियों को उनके चर्च द्वारा समाज को बदलने के लिये प्रशिक्षित किये जाते है, तब उन्के जीवन के द्वारा मसीह का स्वभाव दिखाना चाहिये। प्रेरित पौलुस हमें बताता है कि हमें पवित्र, निर्दोष, शांत और फलवंत जीवन जीना चाहिये और हमें सौम्य, आत्मा से भरपूर, स्तुति करने वाले और धन्यवादी होना-चाहिये। जब तक हम हमारे जीवन में परमेश्वर के स्वभाव को नही लाते, हम दूसरों को परमेश्वर की योजना के विषय नहीं बता सकते। मेरा विश्वास है कि परमेश्वर के प्रेम का हरव्यक्ति द्वारा शांतिपूर्ण, त्यागपूर्ण, पवित्र आचरण उसके राज्य के लिये चर्च की सामूहिक कई गतिविधियों से बढ़कर है।

परिवारों को मिलकर कुछ बातों को अमल करने के लिये प्रोत्साहित किया जा सकता है। उनका - स्कूल, शहरी कर्मचारियों, खेत पड़ोसी आवास और कई सामाजिक सेवाओं से संपर्क रहता है। इनमें से हर क्षेत्र मे परमेश्वर अपनी इच्छा को पूरी करना चाहता है। परिवारों को जागृत करने देखने और उनके आसपास की जरूरतों को पूरा करने के लियें प्रशिक्षित किया जा सकता है। साथ ही स्थानीय कलीसियाए भी कई परिवारों को मिलकर परमेश्वर की सेवा के लिये तैयार कर सकते हैं। जब कलीसयिा परिवारों को तैयार करती हैं, वह केवल वर्तमान जरूरतों को ही पूरा नही करती परंतु आने वाली पीढ़ी को भी तैयार करती है। जिन बच्चों को दूसरों की सेवा करने के लिये तैयार किया जाता है वे आगे चलकर दर्शन, उद्देश्य और सेवक का हृदय रखने वाले अगुवे हो सकते है।

उपदेश

यदि परमेश्वर द्वारा दिया गया दर्शन सचमुच पास्टर को प्रभावित किया है तो यह बोझ उसके द्वारा कमिटियों को दी जाने वाली शिक्षा में दिख पड़ेगा और दूसरों को भी प्रभावित करेगा। उपदेश ही ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा परमेश्वर के दर्शन और पूरी योजना को दूसरों के साथ बांटाजा सकता है। जब भी वचन को समझाया जाता है, पास्टरों को स्वंय से पूछना चाहिये, ''मै किस प्रकार उसको बहुउद्देशीय सेवा के लिये उयोग कर सकता हूँ। यदि आप एक पास्टर है और अपनी पसंद के वचनों को पढ़ने और प्रचार करने का प्रयत्न करते हैं तो मै आपका प्रोत्साहित करूंगा कि आप परमेश्वर से मांगे कि कलीसिया के लियें उसकी सभी योजनाओं को जानने के लिये आपकी आखें खोल दे। दर्शन को बांटने का आधार पवित्र वचन होना चाहियें ताकि कलीसिया सदस्य यह समझपाएं कि यह[९] क अच्छी, नई तरकीब से बढ़कर है। उन्हें परमेश्वर के वचन द्वारा यह सुनने की जरूरत है कि उसकी कलीसिया के लियें परमेश्वर की यह इच्छा है- उनकी कलीसिया के लिये भी। उपदेश कलीसिया को यह देखने में सहायक होंगे कि परमेश्वर ने पूरे इतिहास में और इस पीढ़ी में कलीसिया का उपयोग समाजों मे परिवर्तन लाने के लिये किया है।

उपदेशों को उन व्यक्तियों के जीवन से समझाना चाहिये जो प्रचार करने है और उसी के अनुसार जीवन भी बिताते है। क्या पास्टर लोग पड़ोसियों समुदायों, शहरों या देश के प्रति चिंतित हैं। क्या

---

[९] ब

[१०] ब

कलीसिया के लोग उसविषय जानते है? जब यीशु ने उसके चेलों के पैर धोए, उसने यह खुद उदाहरण देने हुए किया। .... मै वचन की शिक्षा देता हूं तो मैं बीते दिनों और संसार के दूसरे भागों में घटी घटनाओं का उदाहरण के तौर पर उपयोग करता हूं। परंतु जब मै यह बताता हू कि पिछले सप्ताह या बीते कल परमेश्वर ने मुझ में और मेरे द्वारा किन प्रकार कार्य किया तो लोग ज्यादा अच्छी प्रतिक्रिया करते हैं।

मैं अक्सरपास्टरों को प्रेरित करता हूं कि वे अपनी कलीसिया को पिछले सप्ताह दो सप्ताह पहले और अंत में तीन या चार सप्ताह पहले दिये गये उपदेश के मुख्य उद्देस्य को लिखने को कहैं। मैं उन्हें निराशा का समाना करने को तैयार रहने के लियें भी कहता हूं जो उन्हें लोगों की याद रखने की योग्यता में भारी गिरवाट को ..... से होगी।

परंतु उपदेश याद रखे जा सकते हैं और यह तब होगा जब उन्हें पक्के इरादे के साथ अमल में लाया जाए। यहां कुछ सुआव दिये जा रहे हैं:

- उपदेशो ऐसे हों जिनको अमल में लाया जा सके - केवल सुनने के लिये नहीं।
- हर उपदेश के पश्चात प्रत्येक व्यक्ति को किसी भी बात पर अमल करने के समर्पण के लिये आव्हन दे जो विशिष्ट, वास्तविक और तुरंत करने योग्य हो। यदि उपदेश में अमल में लाने योग्य बातों पर विशेष बल न दिया गया हो तो लोग उस विचार से ही संतुष्ट हो जाएंगे कि हां वे बेहतर जीवन जीएंगे - सामान्य रूप से और भविष्य में भी बेहतर जीवन जीने की कोशिश करेंगे। यह निर्णय आने वाले सप्ताह में गायब हो जाता है - या आराधना की समाप्ति पर लोग कलीसिया के अन्य लोगों के साथ बातचीत में लीन हो जाते है।
- जब तक उपदेश के द्वारा पवित्र आत्मा बात न करे, अनंतकाल की बातें जाहिर नही होतीं। जब हम उपदेश तैयार करते और प्रचार करते है हमें उसकी ओर से मिलने वालि अगुवाई के प्रति जागरूक रहना चाहिये।

छोटा समूह

अधिकतर विशिष्ट, वास्तविक और तुरंत अमल करने योग्य बातों के लियें प्रोत्साहन करने का सबसे उत्तम स्थान छोटे समूह है। छोटे समूहों को बहु उद्देशीय सेवा के दर्शन हेतु तैयार करने और क्रियाशील करने के लिये निम्नलिखित कुछ मुख्य सिद्धांत है:-

- बहुउद्देशिय सेवा के लिये सदस्यों को तैयार करने हेतु कलीसिया विद्यमान छोटे समूहों का उपयोग कर सकती है। उस उद्देश्य को संडे स्कूल, बायबल स्टड़ी, प्रार्थना मीटिंग, घरेलू संगति और - घरेलू समूहों में सरलता से कियान्वित किया जा सकता है।
- छोटे समूह के अगुवों को उनकी हर शिक्षा में बहुउद्देशीय सेवा के पहलूओं को देखने के लिये तैयार किया जाना चाहिएं। उन्हें सभाओं के आयोजन में उस तरह प्रशिक्षित करना चापिये कि समूह के सदस्य सिखाए जाने वाले सिद्धांतों को तुरंत खोज लें और उसपर अमल करें।
- छोटे समूह व्यक्तिगत स्तर पर अमल करें। हर मीटिंग के अंत में समूह के समस्य एक दूसरे को यह बताते है कि वे आने वाले सप्ताह में दी गई शिक्षा के। किस तरह व्यक्तिगत रीति से

अमल में ला रहे है और फिर वे एक दूसरे के लिये प्रार्थना करते हैं। नई शिक्षा के शुरुवात मे ही अमल करने योग्य बोतों की समीक्षा की जाती है।

- जब छोटे समूह उनके समाज और सभ्यता को प्रभावित करने के लिये उनके क्षमता और जवाबदारी को समझ लेते हैं उन्हें संसार के समझ और उनके ..... परमेश्वर के प्रेम को प्रदर्शित करने के तरीके खोजने और योजना बनाने के लिये उपयोग किया जा सकता है। तब छोटे समूह छोटे स्तरपर ..... सेवा योजना की शुरुवात कर सकते है। छोटे समूह को तैयार करना और उपयोग में लाना बड़े पारंपारिक कलीसिया को समाज की सेवा मे लगाने से कही आसान है। छोटे समूह, सामूरिक सेवकाई के अच्छे सहायक हैं।

- किसी भी प्रकार का छोटा समूह बहुउद्देशीय सेवकाई को बढ़ावा दे सकता है। दो छोटे आदर्श समूह पारिवारिक और पारस्परिक समूह होते है। पारिवारिक समूह नियमित रूप से इकठ्ठ होते है व्यक्तिगत रीति से अमल करने योग्य बातों को बढ़ावा देते, प्रार्थना और परमेश्वर की स्तुति करते है, और मिलकर सेवा करने की योजना बनाते हैं। पारस्परिक समूह में सामान्य लोग होते है - चिकित्सा पेशेवर व्यवसायि, शिक्षक बच्चों की माताएं ..... में रुचि रखने वाले लोग। वे परमेश्वर की योजनाओं को अपने ..... तरीकों के दायरे में गवाीह देने हैं। एक व्यवसाय संबंधी समूह उदाहरण के लिये हो सकता है कि ऐसे मुद्दों को जैसे नौकरी या ठेका प्राप्ति के लिये दी गई घूस, या कम वेतन-भोगियों को उनके परिवार की मदद के लिये सहायता .... के द्वारा सुलझाते हैं।

एक कलीसिया छोटा समूह अपने पड़ोस में सेवा कर सकतें हैं - जैसे ऐसे बुजुर्गों को ढूंढना जो अपने घर की सफाई करने, लॉन की घास काटने, बगीये की देखभाल करने, कपड़े धोने पकाने या बीमार से ठीक हो सकने में असमर्थ हों। या हो सकता है अकेलापन ही उनके लियें भारी बोझ हो। हो सकता है कि उन बुजुर्गों का कोई परिवार या मित्र न हो जो उनकी मदद कर सके, परंतु एक कलीसिाय परिवार या परिवारों के छोटे समूह उनकी देखरेख की जवाबदारी ले सकते है।

मंडली

एक स्थानीय कलीसिया को सामाजिक जरूरतों के पूरा करने हेतु उपयोग करने के कई तरीके हैं। हार्वेस्ट के द्वारा विकसित साधनों (१२वें अध्याय में चर्चित) का उपयोग कलीसियों को उनके पड़ोसियों पर परमेश्वर की योजनाओं और उसके प्रेम को प्रगट करने में किया जा सकता है। कलीसियाओं को न केवल समाज सेवा परंतु नागरिक कार्यों जैसे न्याय, धार्मिकता और परमेश्वर की योजनाओं में भी भाग लेना चाहिये। कलीसिया को चाहिये कि वह भी उन समस्याओं को ऐसे तरीकों से सुलझाए जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है। भविष्य द्वारा हमें इस बात का ..... देता है, ''यहोवा तुझ से उसे छोड़ और क्या चाहता है, कि तु न्याय से काम करे, और कृपा से प्रीति रखे और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले?''[११] कलीसिया के नागरिक कार्यों मे शामिल होने के विषय निम्न लिखित कुछ सुआव है:-

---

[११] ब

- जब नागरिक और राजनैतिक मुद्दों का मामला हो तब कलीसिाय को उसे हल करना चाहिये, कलीसिया के अगुवे पुलपिट से उनके विषय बातचीत कर सकते हैं, उन विषयों के लिये विशेष समूह बनाए, और उन मुद्दों पर कलीसिया की राय के विषय सभाओं में उनके विचार व्यक्त करें।

- कठिन/चटिल नागरिक मुद्दों को सुलझो के लिये यदि संभव हो तो कलीसिया दूसरी कलीसियाओं या विद्यमान सामाजिक संगठनों से मिलकर तथा आपसी तालमेल के साथ कार्य कर सकती हैं।

- नागरिक विषयों से संबंधित बातों को कलीसिया आराधना में अपने प्रार्थनाजीवन का एक भारा बना सकती है, उन्हें प्रार्थना पत्रों के द्वारा और छोटे समूहों में बांट सकती है।

- वास्तविकता जानने और वचन मे मुद्दों के हाल खोजने के लिये कलीसिया के सदस्यों को नागरिक मुद्दों से अवगत रहने के लिये प्रोत्साहित किया जा सकता है। उन्हें उस बात से प्रोत्साहित किया जा सकता है कि समस्या के एक से अधिक इश्वरीय हल हो सकते है। उन्हें दूसरों को सुनने और स्वर्गीय सिद्दांतों को नागरिक मुद्दों के लिये प्रस्तुत करने मे सहायताप्रदान की जा सकती है।

- कलीसिया उन सदस्यों के लिये जो नागरिक अगुवाई में ..... हुए है, एक जवाबदार समूह को तैयार कर सकती है जो उनके लिये प्रार्थना करे और उनके निर्णयों तथा कार्यों के लिये उन्हे जिम्मेदार भी टहराए।

- कलीसिया उन जवानों को भी जो सरकार में रुचि रखते हैं पेशेवर होने के लिये प्रोत्साहित कर सकती है - ताकि वे नागरीक/राजनीति के क्षेत्र में स्वर्गीय प्रतिनिधी होने पाएं।

''बुनियादि स्तर'' प्रयत्न और नागरिक क्षेत्रों में भागिदारी

कभी-कभी कलीसिया का एक सदस्य बहुउद्देशीय सेवकाई या नागरिक क्षेत्रो में भागीदारी के दर्शन के प्राप्त करता है और उस पर अमल करता है - शायद शुरुवात में निजी स्तर पर और फिर बाद में कलीसिया के अन्य लोगों के साथ। फिर और लोग भी इस कार्य में जुड़ जाते है। आगे चलकर यह एक सेवकाई बन जाति है जिसे कलीसिया भी अपना ..... है - जिसमें वह अगुवाई भी करती है।

कलीसियाओं को चाहिये कि वे अपने सदस्यों को व्यक्तिगत रूप से नागरीक कार्यो के लिये प्रोत्साहित करे। व्यक्तिगत स्तर पर नागरिक कार्यों के भागीदार होने के लिये निम्नलिखित सुझाव हैं।

- सदस्य को आसपड़ोस, समाज, शहर समिति, या स्थानीय स्कूल की सभाओं में सम्मिलित होने के लिये प्रोत्साहित किया जा सकता है।

- वे यदि संभव हो तो महत्वपूर्ण मुद्दों पर आम चर्चा संपादक और निर्वाचित प्रतिविधियों को पत्र लिख सकते हैं।

- व्यक्तिगत रीति से मसीहि लोग नागरिक अगुवों से मिलकर उनकी सेवाओं के लिये उन्हें धन्यवाद दे सकते है और चर्च उनकी किस प्रकार सहायता कर सकती है उस विषय पूछ

सकते हैं वे उनसे प्रार्थना करने हेतु उनकी मुख्य समस्याओं की सूचि मांग सकते है। यदि इस मुलाकात के समय अगुवे अनुमति दें तो वे उनके लिये प्रार्थना भी कर सकते है। और अंत में वे नागरिक अगुवों की समस्याओं को सुलझाने के लिये और प्रार्थना करने के लिये उन्हें कलीसिया से भी कहसकते है।

- व्यक्तिगत स्तर पर स्थानीय तथा राष्ट्रीय चुनावों में मतदान कर सकते है।
- वे राजनीति कार्यालय खोल सतते है या शहर अथवा समाज में स्वेच्छा से कोई पद या जिम्मेदारी ले सकते हैं।
- अंत में वे उन बातों को जिनके द्वारा उनके जीवन में अदभुत रीति से प्रभाव पड़ा है दूसरों को बता सकते हैं।

शिष्यता प्रशिक्षण

यीशु के अनुयायी संसार में परमेश्वर के उद्देश्य के प्रतिनिधी अपने आप ही नही बन जाते। जब पौलूस ने उन लोगों के विषय कहा जो उद्देश्यपूर्ण रीतिसे परमेश्वर का योजना को प्रस्तुत करते थे, उसने उन्हें ''राजदूत''[१२] कहा। कलीसिया के लोगों को परमेश्वर की योजनाओं का प्रभावि प्रतिनिधित्व करने के लिये तैयार किया जाना चाहियें। उनकी शिष्यता के प्रशिक्षण द्वारा उन्हें विश्वास के मूल (आधार) को भी सिखाना चाहियें। और उन्होंने जो कुछ सीखा है उस पर अमल करने के लिये मसीह की आज्ञाओं को मानने और उनके दायरे के भीतर परमेश्वर की योजनाओं को क्रियान्वित करने के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।

उस प्रकार की शिश्यता प्रशिक्षण व्यक्तिगत या छोटे समूह स्तर पर सबसे अधिक सफल और प्रभावी होते है। शिष्यता प्रशिक्षण, कलीसिया का आंतरिक गतिविधी होना चाहिये। उसके पहले कि वे दूसरों को शिष्य बनाए, शिष्यों को परमेश्वर की विशाल योजना का अनुभव होना चाहियें। वे अनुभवी, परिपक्व और स्तानी लोगों से भी सीख सकते है। शिष्यता प्रशिक्षण जो परमेश्व के राज्य के राजदूत तैयार करते है, निम्नलिखित ३ विशेषताओं को शिष्यों को प्रदान करे:

- भावनात्मक दर्शन
- योजनाबद्ध नीति
- प्रसंगीकरण

१. एक शिष्य को ''राजदूत बनाने के लियें उसे ''सभी बातों'' की बहाली के लिये परमेश्वर के स्नेहपूर्ण दर्शन के विष्य बताना हैं।[१३] जिसमें निम्न लिखित बातों का समावेश है:-

- परमेश्वर के उद्देश्य का महत्व, विशेषकर राष्ट्रों को शिष्य बनाने के विषय
- एक व्यक्ति की आज्ञाकारिता के कार्य और उस व्यक्ति के देश की शिष्यता

[१२] ब

[१३] ब

- बाकी बातों से हटकर परमेश्वर के संसार के लिये उद्देश्य पूर्ति हेतु एकव्यक्ति को अपना जीवन समर्पित करने का अवसर
- उस दर्शन को पूरा करने हेतु प्रतिबद्दता

२. दूसरा कार्य है परमेश्वर की योजना ओं के राजदूत होने के लिये शिष्य को योजनाबद्ध होने के लिये प्रशिक्षित करना। शिष्यों को दृढ़निश्चयी और योजनाबद्ध होना चाहिये।

- राजदूत नागरिकों से बढ़कर होते हैं - जिस सरकार का वे प्रतिनिधित्व करते हैं वे उसके कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिये दृढ़निश्चयता से कार्य करते है। उसी प्रकार मसीहियों को भी हमारे कार्यो के प्रति दृढ़निश्चय होना चाहिये - जाने, प्रचार करने शिष्य बनाने और आज्ञाकारिता[१४] की शिक्षा देने में।
- हमें केवल दृढ़ निश्चयीही नहीं होना चाहिये परंतु हमें योजनाबद्ध भी होना चाहिये। हमारी क्षमता से बढ़कर परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिये कई अवसर होने हैं। जिन अवसरों को हम चुनते है उन्हें ..... होना चाहिये। जब लोगों को सामान्य परिणाम प्राप्त होंगे, योजनाबद्ध अवसर उससे भी कही बढ़कर परिणामों को देंगे। हमें अवसरों को ढ़ंढ़ना और परमेश्वर की योजना को पूरा करने की सभी संभवनाओं के साथ उपयोग करना चाहियें।

३. तीसरा कार्य है शिष्यों को प्रसंग संगत होने के लिये प्रशिक्षित करना। शिष्यों को यह जानना चाहिये कि परमेश्वर की योजना को किस प्रकार प्रस्तुत किया जाए कि लोग उसे अच्छी तरह समझ पाएं और जैसा वह हैं उसे सुसमाचार की तरह री उसे स्वीकारा जाए। प्रसंगीकरण अनुकूल किसी जात को करने की उसे आकर देने की या परिस्थिति के अनुसार उसे ढालने की प्रक्रिया है। उदाहरण के लियें, परमेश्वर जो आत्मा है उसने मनुष्य जाति के प्रति अपने प्रेम के संदेश को प्रसंगिकृत करने के लिये यीशु को मनुष्य के रूप में भेजा। एक और यीशु ने अपने संदेश को प्रंसंगीकृत करने के लिये कृषि संबंधित घटना ओं के द्वारा कृषि प्रधान समाज को समझाया।

पीड़ित कलीसिया को समझाना और एक टिप्पणी

बहुत सी कलीसियाओं में जिनमे आत्माओं को जीतने वाले सेवक हैं वे गौर मसीही माहोल में है जहां मसीही लोग ख्रीष्ट विरोधी या आम समाज में नागरिक सेवा मे सीमित रूप से ..... है। फिर भी कलीसियाओं को चाहिये कि के नि समाजों में भी परमेश्वर का योजना को प्रस्तुत करें। एक तरीका है व्यक्तिगत सेवा के द्वारा। दूसरा ..... समझाने बुझाने के द्वारा।

हमसे संबंध रखने के लिये समाझाना परमेश्वर तरीका है। वह हमें कार्य करने के लिये बाध्य नहीं करता। वह हमारे सामने चुनाव के विकल्प रखता है, विकल्प के परिणाम रखता हैं और निर्णय हम पर छोड़ता है। समझाने के निम्न लिखित उदाहरण है:-

---

[१४] ब

- लोगों को बोलना चाहिये - उन्हे शांत नहीं बैठना चाहिये।
- मसीहियों को निर्णय लेने में बायबल में दिये गये बातों/दावों पर पूरी तरह निर्भर नहीं रहना चाहिये।
- उन्हें किसी भी मुद्दे को बायबल से संबंधित करने के लिये उसका उच्छी तरह अध्ययन करना चाहिये।
- उन्हें गौर मसीहियों को यह समझाने के लिये कार्य करना चाहिये कि परमेश्वर का मार्ग ही उत्तम।
- अंत में उन्हे यह निश्चित कर लेना चाहिये कि उनका अपना जीवन बायबल पर अधारित है।[१५]

कलीसिया को चाहिये कि वह लोगों को बताए कि अन्य विकल्पों कि तुलना में परमेश्वर की योजना ज्यादा फायदेमंद होंगे। कलीसिया अपने देश या समाज को तब तक शिष्य न ही बना सकती जब तक वह परमेश्वर की योजनाओं को जीवन के हर क्षेत्र, नागरिक जीवन में भी नहीं सिखाति या प्रचार करती।

कुछ सरकारें कलीसिया को समज मे सुसमाचार प्रचार नहीं करने देती। वे उन्हें उनकी गतिविधियों को ''आत्मिक'' जरूरतो के पूरा करने के कार्य तक ..... रखना चाहती है ताकि धर्म परिवर्तित लोगों की खरीद-फरोक को रोक जा सके। वास्तविक कारण यह हो सकता है जब वे लोगों से मिलने और उनकी भौतिक और सामाजिक जरूरतो को पूरी करते है तब चर्च का उनपर काफी प्रभाव पड़ता है। ख़ीण्यविरोधी सरकार चर्च के इन सेवाओ द्वारा बढ़ते हुए प्रभाव से उटते हैं।

फिर भी नागरिक सरकारें दूसरोंपर परमेश्वर के प्रेम को प्रगट करके से मसीहिवों को नहीं रोक सकतीं। बाइबल इस बात को ..... तरीके से कहवी है: *''पर आत्मा का कल प्रेम, आनंद, शांति, धीरज कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है। ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नही।''*[१६]

मैने यह पाया है कि व्यक्तिगत स्तर पर प्रगट कियागया परमेश्वर का प्रेम सामूहिक कार्यों से बढ़कर समिथी रूप से परमेश्वर के राज्य के लिये प्रभावशाली होता है। संगठित प्रचार के विरुद्ध सरकारी नियंत्रण वास्तव में सामूहिक गतिविधियों के लिये ज्यादा शक्ति और साधन प्रदान करते हैं। शांत, त्यागपूर्ण रीति से किया गया परमेश्वर के प्रेम का प्रगटीकरण - विशेषकर उन लोगों के साथ जिनके साथ कलीसिया के सदस्यों का सामान्य संबंध है - हमेशा संभव है। यह एक बड़ी बात है!

कलीसिया को भेजना और नियुक्तकरना

मसीहि लोग खोए हुए लोगों को चर्च में लाने का बात करते हैं - अर्थात ''जो चर्च में नहीं है उन्हे है उन्हे चर्चमें लाना।'' फिरभी लोगों तक सुसमाचार पहुंचाने का प्रभावशालि तरीका है कलीसिया के सदस्यों को कलीसिया से बाहर संसार भर में भेजना। हमें चर्च के लोगों को ''चर्च के बाहर भेजने की

---

[१५] ब

[१६] ब

जरूरत है।'' हमें उस पूल के पार जाना है जो कलीसिया को समाज से ..... करती है। यह जानने के लियें कि परमेश्वर उनसे प्रेम आता है, लोगों को - कलीसिया से - जुड़े रहने की जरूरत नहीं है।

निम्नलिखित पद पारंपारिक रीति से विभिन्न संस्कुतियों के सेवकाइयों के लिये उपयुक्त होता है। उसे स्थानीय कलीसिया के लिये जो अपने लोगों को उनके शब्दों ओर जीवन द्वारा यह ''प्रचार करने'' के लिये भेजती है कि यीशु प्रभु है - चुनौती समझाजाना चाहिये।

''फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया वे उसका नाम कैसे लें? और जिसके विषय सुना नहीं उस पर कैसे विश्वास करें? और प्रचार बिना कैसे सुनें? और यदि भेजे न जाएं तो कैसे प्रघट करें? जैसा लिखा है उनके पांव क्या ही सुहावने है, जो च्छी बातों का सुसमाचार सुनाते हैं।''[७]

अधिक से अधिक पास्टर चाहते है कि उनके सदस्य ''भेजे'' जाएं। मैं यहां यह बताना चाहता हू कि कलीसिया न केवल प्रचार करती, दर्शन बांटती, प्रशिक्षित करती, तैयार करती और शिक्षाओं को अमल करने के लिये प्रोत्साहित करती है - परंतु वह उसके सदस्यों को नियुक्त करना और संसार भा में भेजती है। हम कलीसिया के अन्य विश्वास की यात्राओं को याद करतें है। नए विश्वासी गवाही देते है ओर बप्तिस्मा पाते हैं। नए सदस्यों को पारंपरिक तरीके से स्वागत किया जाता है। नये जोड़े विवाह के बंधन में बांधे जाते हैं। नवजात शिशुओं को अर्पित किया गया है। पास्टरों को अभिषिक किया जाता है। मरणोपरांत यात्रा को एक यादगार कार्यक्रम द्वारा शुरू किया। जाता है। एक बात को अक्सर नजर अंदाज किया जाता है जबकि वह शिष्य के यात्रा की अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्दि हो सकती है - जब वे और उनकी कलीसियाएं उस बात का अंगीकार करते है कि मसीह और उनके चर्चे ने उन्हें उनके इर्द-गिर्द के संसार में, जहां भी वे है, मसीह के राजदूत और गवाह के रूप में भेजा है। यह मानवजाति के लिये की जाने वाली सबसे महान नियुक्ति है! फिर क्यों न उसे पक्के इरादे के साथ पारंपारिक नियुक्त के रूप में मनाया जाए? जिस प्रकार कलीसिया

की सदस्यता एक कागज पर, शादी मे अंगूठी पहन्वान होती है उसी प्रकार शायद ''सेवा के लिये भेजा जाना'' भी एक तौलिये से पहचान जाना चाहिये - जो मसीहि सेवकई का चिन्ह है। पैर धोने की विधि भी संपन्न की जा सकती है। ..... ऐसा किया जाता है, मैं पास्टर्स और चर्च के अगुवों को प्रोत्साहित करूंगा कि वे उन्की कलीसिया के लोगों को मसीहि के राज्य के राजदूत के रूप में भेजे जाने को परंपरागत रीति से मान्यता दें।

अंत में

अंत में मै कलीसियाओं को यह बताना चाहता हूँ कि वे ''बहुउद्देशीय सेवकाई से न खेलें और न ही उसे वे[१] कल्पित समझें। समस्त सुसमाचार तब ही प्रभावशालि होगा। जब वह कलीसिया की बुनियादी पहचान या डी.एन.ए का अंग हो। यह कलीसिया का वह आवश्यक अंग है जिस के लिये परमेश्वर ने उसे बुलाया है कि हम मसीहि को हमारे समाज में प्रगट करें इस प्रकार की सेवा के द्वारा जैसी सेवा मसीह किया होता यदि वह मेयर होता।

बहुउद्देशीय दर्शन अगुवों द्वारा जाना जाहिये, कलीसिया को बांटना चाहिये और समज में लागू किया जाना चाहिये। कलीसिया को चाहिये कि वह आपने दायरे के बाहर - व्यक्तिगत लोगों द्वारा, परिवारों छोटे समूहों और कलीसिया के द्वारा सेवा करने के लिये तैयार हो जाएं।

परमेश्वर ने उसके लोगों को इतिहास के सबसे महान उद्देश्य में भागीदारी का मौका दिया है। वह हमें उसके ..... होने की अनुमति देता है। हमारे कार्य अनंतकाल को प्रभावित करते है। कोई भी बात जो हम उसकी इच्छा के अनुसार करते है, प्रभावहीन नहीं होती। जिस विधवा ने उसके दो सिक्कों को मंदिर में दे दिया था उसने कभी कल्पना भी नही की थी। कि उसके द्वारा दिये गए दान का प्रभाव २००० वषों तक होता रहेगा। हम भी - जो मसीह यीशु की कलीसिया है - ऐसा प्रभाव टालते हैं जो भविष्य की पीढ़ियों तक बना रहेगा जो हम समय न जान सकते और न देख सकते हैं।

यदि हमारी कलीसिया के लोग उनके जीवन और परमेश्वर की योजनाओं के संबंध को समझ पाएं - वर्तमान और भविष्य दोनों के लियं - तो वे रखेपायेंगे कि उनके जीने या मरने का उससे बढ़का कोई और कारण नही होगा। हमारी स्थानीय कलीसियाओं के लोगों को उनकी भूमिका की विषय निरंतर अगुवाी की जरूरत है जो उन्हें परमेश्वर द्वारा गय दर्शन को पूरा कर सकती है।

परमेश्वर के राज्य का गणित सेवा के विस्तार

११

पिछले अध्याय में हमने गवाहों की गतिविधियों के विषय देखा। इस अध्याय में हम सेवा के विस्तार के विषय देखेंगे। गुणा करने वाला परमेश्वर है। यह एक साधारण परंतु प्रभावशालि संदेश है। मैं उस संदेश को सिखाने में इसलिये आनंदित होता हूं क्योंकि मै जानता हूं कि परमेश्वर इस संदेश की सच्चाई को संसारभर के कलीसिया के अगुवों को स्वतंत्र करने के लिये करता है- विशे,कर उन्हें जो भौतिक रीति से गरीब है - उन कार्यों को करने के लिये जिन्हें यीशु किया होता यदि वह मेयर होता।

दूसरों पर आश्रित रहनेकी सोच ने संसार के दो - तिहाई कलीसियाओं को जकड़ रखा है। परमेश्वर चाहता है कि उसकी कलीसिया एक ऐसा माध्यम बने जिसके द्वारा वह अपनी परिवर्तनशील सामर्थ को टूटेपन से छुटकारा/चंगाई दे सके - परंतु वह ऐसा इसलिये नहीं करता जब कलीसिया परमेश्वर को छोड़कर किसी अन्य श्रोतों पर विश्वास करती है। परमेश्वर बाहरी श्रोतों का ही उपयोग करता है परंतु कलीसिया को चाहिये कि वह प्राथमिक श्रोत के लिये केवल परमेश्वर की ओर ही देखे। जब हम परमेश्वर को छोड़ किसी और की ओर देखते है तब हम बड़ी खतरनाक रीति से सृजनहाट को छोड़ उसकी ही आराधना करने में आकशित होते जाते है - यह सोचे - समझे बिना ही की जाने वाली मूर्ति पूजा हैं।

सभामें जब हम परमेश्वर के राज्य के गणित के विषय सिखाते है, तब हम बाइबल की जानी बहचानी घटनाओं का विशलेषण करते है और उन्हें गणित के समीकरणों मे बदलते है। सर्वप्रथम भाग को जिसे हम समीकरण मे बदलते है वह है यशयाह ४०:२९ ''वह थके हुए कों बल देता है और शक्ति हीन को बहुत सामर्थ देताहै।'' मै पांच स्वंयसेवकों को कमरे में सामने बुलाता हूं। मै हरएक को एक बड़ा पेपर देता हूं जिसमें पर या चिन्ह लिखे होते हैं। फिर मै उपस्थिति लोगों को सामने आकर इन लोगों को इस क्रम में लगाने के लिये कहता हू कि उनके हाथों में पकडे हुए पेपर को पढ़ने पर वह यशायाह ४०:२९ को दर्शा जा सके। वह इस प्रकार व्यवस्थित किया जाना चाहियेः-

हमारि कमजोरियाँ	x	परमेश्वर	=	सामर्थ

परमेश्वर के राज्य के गणित का संदेश इस लघु स्पष्टीकरण में निहित है। यह हमें बताता है कि जब हम अपनी कमजोरियों को परमेश्वर को सौप देते है तो वह उन्हें बढ़ाकर हमारी कमजोरियों को समामर्थ में बदल देता है।

बाकी का भाग हमें बताता है: *''तरूण तो थकते और श्रमित हो जाते है और जवान ठोकर खाकर गिरते है, परंतु जो यहोवा की बाट जोहते है वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे, वे उकाबों के समान उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रामिक न होगे, चलेंगे और थकित न होंगे।''*[१]

[१] ब

यह एक साधारण परिवर्तन नही है। यह येसा परिवर्तन नहीं है जिने हम स्वंय करते है या यह कुछ ऐसा भी नही है जो बाहर से आता हो। यह एक आश्चर्यजनक बात है। यह परमेश्वर के द्वारा ही होता है। परमेश्वर के राज्य का गणित कोई दर्शनशास्त्र की बात नही कि ''यदि आप स्वयं में इतना विश्वास करले और सकारात्मक विचारों की सामर्थ पर विश्वास कर लें तो आप परिस्थिति को बदल सकेंगे।'' इस परिवर्तन की शुरुवात इस स्वीकृति से होती है कि हम, अपने आप में कमजोर है। यहां तक कि तरुण तो थक जाते और जवान ठोकर काकर गिरते है। जब हम अपनी कमजोरियों को मानने के लिये तैयार रहते है, तब हम परमेश्वर के सामने आकर अपनी कमजोरियों को रख सकने की स्थिति में आ जातें हैं। तब वह उसके राज्य के गणित का चमत्कार करता और हमारी कमजोरियों और सीमाओं को उसकी सामर्थ में बदल देता है।

रमारी सभाओं में मैं एक कहानी बताने वाले की तरह बाइबल की कई घटनाओं का उल्लेख करता हूँ। तब मै उपस्थित लोगों को छोटे समूहों में बंटकर गणित के सभीकरणों को तैयार करने को कहता हूं जिनका संबंध बताई गई घटना से होता है जब वे समीकरण को कर चुकें होते हैं तब हम उन्के द्वारा सीखी हुई सच्चाइयों का सारांश निकालने हैं - वे सच्चाइयां जो लोगों को दूसरों पर ..... रहने से छुटकारा देती है परंतु परमेश्वर पर आश्रित होना सिखाती हैं।

बाइबल का समीकरण

मैं आपको एक कहानी बताना चाहता हूं:

> किसी समय बारक नाम एक लटका था। वह करीब १० वर्ष का था। उसने पड़ोसियों से सुना था कि आज सुबह झील के किनारे एक शिक्षक आकर लोगों से बातचीत करने वाले थे। बारक अपनी माता के पास गया।
>
> ''मा, क्या मैं झील के पास शिक्षक की बातों को सुनने के लिये जाऊ?''
>
> ''नहीं बेटा। वह बहुत दूर है। तुम्हारे पिता भी घर पर नहीं हैं और तुम्हें उतने दूर भेजने से मैं डरती हूं। वहां पहुचने के लिये तुम्हें करीब एक घंटा चलना पड़ेगा।''
>
> ''ओह मां, कृपया मुझे जाने दों! मुझे कुछ नहीं होगा। मै दस वर्ष का हुं आप जानती हैं।
>
> ''बेटा भोजन का समय हो गया है, तुमने कुछ खाया भी नहीं हैं।''
>
> ''मां, मुझे भूख नहीं है! कृपया मुझे जाने दे!''
>
> ''ठीक है, परंतु खाने के लिये तुम्हें कुछ साथ ले जाना होगा।''
>
> फिर बारक की मां ने रसोई घर मे एक कपडे का टुकड़ा लेकर फैलादी। उसने बर्तन में से पांच रोटिया ली जिसे उसने सुबह पकाई थी और साथ में पकी हुई दो छोटी मछलियां ली जो उसने बाजार से खरीद कर लाई थी। उसने रोटियों और मछलियों को कपड़े में रखकर लपेटी और बारक को दे दी। लड़के ने उसे अपनी कमर के पट्टे में बांधा और दरवाजे से बाहर की और दौड़ पड़ा।

बारक झील तक करीब दौड़ते हुए दी गया। जब वह वहां पहूंचा तो उसने शिक्षक के चारों तरफ बड़ी भीड़ को देखा और उसे कुछ भी सुनाई नहीं आ रहा था। एक सयाना व्यक्ति शांति से भीड़ के किनारे बैठ गया होता परंतु दस-वर्ष का लड़का नहीं बैठ सकता! बारक भीड़ में घुस कर आगे बढ़ता गया जब तक वह शिक्षक के सामने न पहूंच गया।

शिक्षक जो कह रहे थे उसे बारक समझ नहीं पा रहा था, परंतु बड़ी अद्भुत रीति से उसे शिक्षक के सामने लायागया था। अन्य प्रचारकों की तरह इस शिक्षक ने भी काफी समय तक बातचीत किया। करीब चार बजे बारक के पेट में गुर्राहट सी महसूस हुई। उसे तुरंत मां के द्वारा बांध कर दिये गये भोजन की याद आ गई। परंतु उसने सोचा कि उन सब लोगों के सामने वह कैसे खा सकता था? उसने सोचा, ''यदि मैं सावधनी बरतू तो कोई भी मुझे देख नहीं पाएगा कि मैं क्या कर रहा हूँ।'' ऐसा सोचकर बारक ने भोजन को पोटली को नीचे रखा और सावधानी से खोल दिया। वह भूखा था, और भोजन भी देखने में अच्छा था। जैसे ही वह पहली रोटी उठाने पर था, उसने शिक्षक के कुछ चेलों को शिक्षकसे कुछ कहते हुए सुना। उन्होंने शिक्षक से कहा कि ..... अब काफी देर हो चली थी, उसे लोगों के वापस भेज देना चाहियें ताकि वे आसपास के गावों में जाकर अपने लिये भोजन की व्यवस्था कर लें। उसने शिक्षक को यह कहते सुना, ''लोगों को कहीं जाने की चरूरत नही है, तुम ही उन्हं कुछ खाने को दो।''

एक शिष्य फिलिप ने कुड़कुड़ाकि आट माह की तनखाह भी हर एक को एक कौट भोजन देने के लिये पर्याज नहीं होगी। दूसरा शिष्य अंद्रिया बारक के पास ही बैठा या और उसने उसे भोजन की पोटली को खोलते हुए देखा था। उसने शिक्षक से, जो स्वयं यीशु ही था - कहा - ''जो कुछ हमारे पास है वह है ---'' और तब अंद्रियास ने पोटली में देखा और गिनकर बताया, ''..... पांच रोटी और दो छोटी मछलियां।'' यीशु ने कहा, ''उन्हें मेरे पास ले आओ।''

मैं सोचता हूँ कि उस समय बारक के मस्तिष्क में क्या चल रहा होगा। ''मैं भूखा हूँ। बस मेरे पास तो सब कुछ यही है। यदि मैं उसे भी शिक्षक को दे दू तो मैं क्या खाऊंगा? ओह मै उसे चाहता हूँ। वह मुझसें यह से सकता है।''

बाकी कहानी हम जानते हैं। बारक ने अपना पूरा भोजन अंद्रियास को दे दिया जिसने उसे यूशु को सौप दिया। यीशु ने भोजन के लिये धन्यवाद दिया और उसे भीड़ को बांटने के लिये टुकड़ों में तोड़ने लगा।

उस रात जब बारक घर लौटा तो उसके और उसकी मां के बीच हुई वार्तालाप की उस प्रकार कल्पना कर सकते हैं।''

''मां, मां, पूछो तो कि आज क्या हुआ होगा। शिक्षक ने मेरा भोजन लिया।''

''उन्हों ने क्या किया?''

''हां मां! उन्हों ने मेरा भोजन लिया, उसे तोड़ा और सब लोगों को खिलादिया। वे लोग हजारों हजारों में थे। और जब सब खा चुके तो भी बारह रोटियां भोजन बच गया!''

''बारक! मुझे तुम्हें कितनी बार बताना पड़ेगा कि बढ़ा -चढ़ा कर बोलना बंद करों!'' यहा तो बारक बढ़ा-चढ़ाकर नही बोल रहा था।

तब मैं सभा में आए लोगों से पूछता हू कि: यदि आप वह छोटा लड़का होते तो आपको कैसा महसूस हुआ होता। क्या होता यदि आपकी कमर में पट्टे में बंधे भोजन को यीशु आपसे माग लेता? निश्चय यीशु किसी और तरीके से भीड़ को भोजन दे सकता था। उसने अंधों को चंगा किया। उसने तुफान को रोका। वह पानी पर चला। वह पत्थरों को रोटी में बदल सकता था। फिर भी उसने ऐसा नही किया। बल्कि उसने एक छोटे ..... को जो कुछ उसके पाप उसे दे देने को कहां।[२]

तब हम इस बात पर चर्चा करते है कि उस घटना को समीकरण के तौर पर किस प्रकार प्रस्तुत किया जाए। सभा के प्रत्येक छोटे समूह को चर्चा हेतु कुछ कट-आउट दिय जाते हैं ताकि वे उसे बाइबल की गणित के अनुसार समीक्षा द्वारा क्रमानुसार जोड़ सकें। एक संभावना उस प्रकार है:

	लड़का
+	**५ रोटी और २ मछली**
x	**यीशु**
=	**५००० लोगों के लिये भोजन**
+	**महिलाओं और बच्चों के लिये भोजन**
+	**१२ टोकरियां**

यह मानते हूए कि १००० महीलएं और बच्चें थे, यह ६००० गुणा का गुणानुफल था।

इस कहानी के और उसी के प्रकार की अन्य कहानियां भी जो परमेश्वर के गुणाकरा को बताते हैं उन्हें उसके राज्य के समीकरण के रूप में उस प्रकार दर्शाया जा सकता है:

	परमेश्वर के राज्य का समीकरण
	सभी लोग (गरीब भी)
+	**परमेश्वर पर विश्वास**
+	**त्यागपूर्ण दान**
x	**परमेश्वर**
=	**विशाल गुणानुफल**
+	**दूसरों के लिये आशीष**
+	**परमेश्वर का महिमा**
+	**व्यक्तिगत आशीष (कभी-कभी)**

[२] ब

इन कहानियों की शिक्षाएं यीशु के जीवन के अनुरूप हैं। उसके पास इस संसार का बहुत कुछ भी नहीं था। एकबार उसने कहा: *''लोमटियो के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं; परंतु मनुष्य के पुत्र के लियें सिर धरने की भी जगाह नहीं है।''*[३] फिर भी उसने ऐसा महान त्याग किया जैसा किसी ने कभी न किया होगा - उसने अपना जीवन बलिदान का दिया।

एक और कहानी है जिसका अंत सुखद नहीं है। यह एक कहानी है जो यीशु ने उसके राज्य के विषय समझाने के लिये कहा था:

> एक धनी मनुष्य लंबी यात्रा पर जा रहा था; और उसने अपने दासों को जाने से पहले निर्देश देने के लिये बुलाया। उसके तीन दास थे। उसने प्रत्येक से कहा कि वह अपनी संपत्ति में से कुछ उन्हें सौपना चाहता है। वह चाहता था कि उसके द्वारा दिये गए धन को वे निवेश को ताकि लौटने पर उसे कुछ लाभ मिल सके। उनकी योग्यता के अनुसार उसने एक दास को पांच, दूसरे को दो और तीसरे दास को एक तोड़ा दिया। तब वह धनी मनुष्य चला गया।
>
> वापस आने पर उसने दासों को बुलाया। उनके बीच शायद उस प्रकार बातचीत हुई होगी:
>
> ''तो, शिमौन, आपने क्या किया?''
>
> ''स्वामी, बाजार काफी अच्छा रहा! मैने आपके द्वारा दिये गए तोड़ों से व्यवसाय किया और धन को दुगना बढ़ाया। और ये रहे वे दस तोड़े जो आपके द्वारा किये गये पांच तोड़ों से बढ़ गए है।''
>
> ''शाबाश, शिमोन! तेरे अच्छे कार्य के कारण मैं तुझे अधिक बातों का अधिकारी ठहराऊंगा। वास्तव में मै तुझे अपने परिवार का एक सदस्य बनाने की सोचूंगा।
>
> तब स्वामी ने दूसरे दास जोशुआ को बुलाया।
>
> ''जोशुआ, जब मै यात्रापर था तब तूने क्या किया?''
>
> ''स्वामी, बाजार काफी अच्छा रहा। जो धन आपने मुझे दिया था उसे मैने निवेश करके उसे दूगना बना लिया। आपके द्वारा दिये गए दो तोड़े जो अब चार होगए है वे ये रहं।''
>
> ''शाबाश, जोशुआ! मुझे तुझेपर गर्व है। जो कुछ तुझे दिया गया था उसका तूने सदुपयोग किया है। मैं तुझे आपने परिवार का एक सदस्य बनाऊंगा।''
>
> स्वामी ने तीसरे दास को भी बुलाया:
>
> ''अनानियास, आओं! मैने जो तोड़ा तुझे दिया था उसका तूने क्या किया?
>
> आप बता सकते हैं कि उसकी और देखकर अनानियास मे क्या कहा होगा। वह स्वामी और उन दोनों दासों के सामने बिलकुल सामान्य महसूस नहीं कर रहा था।

---

[३] ब

''स्वामी आपने मुझे एक और केवल एक ही तोड़ा दिया था''

''जैसा आप जानते है, स्वामी, आप एक कठारे व्यापारी के नाम से जाने जाते है। क्यों कि मै यह बात जानता था मैने जोखिम उठाना उचित नहीं समझा। उसलियें मै ने उस तोड़े का कोई उपयोग नही किया। मैने सुरक्षित रखने के लिये उसे जमीन में गाड़ दिया था। वह वहां एकदम सुरक्षित था। मैने उसे खोया नही। मैं नम्रता के साथ आपको यह तोड़ा लौटा रहा हूं जो आपने मुझे दिया था।''

जब अनानियास कह रहा था, स्वामी के हाव भाव बदल गए। उसने अनानियात पर प्रतिक्रिया किया परंतु उसका नाम भी नहीं लिया:

''हे दुष्ट और आलसी दास! जब तु यह जानता था कि मैं एक कठोर व्यापारी हूं और मेरी संपत्ति से लाभ पाना चाहता हूं तब तूने मेरे धन को लेकर बैक में जमा क्यों नहीं कर दिया ताकि मुझे उस पर व्याज मिल जाता ..... पहरेदारो! इस निकम्मे मनुष्य से वह तोड़ा लेलो और उसे शिमौन कों दे दो। और इसे बाहर के अंधियारे में टालदो जहां रोना और खेद होगा।''[४]

कितनी कठोर प्रतिक्रिया! क्या यह वही परमेश्वर है जिसे हम जानते है? परमेश्वर निर्धनों पर करुणा करता है और स्पष्ट रूप से यह तीसरा दास भी निर्धन था। क्या परमेश्वर उस पर दया नहीं का सकता था? उस टरपोक दास ने न केवल उसके पास जो था उसे खोया परंतु उसे उसके स्वामी के राज्य से बाहर फेंक दिया गया।

फिर हमारी सभा के छोटे समूह इस समीकरण पर कार्य करते है। इस दुष्टांत की हम इस प्रकट समीक्षा कर सकते है:

	दास
+	**१ तोड़ा**
x	०
=	०
+	**दास निकालागया और अछरे में डाल दिया गया**

परमेश्वर के राज्य के लिये तात्पर्य (आशय)

ये कहानियां सभी मसीहियों को लिये महत्वपूर्ण आशाय हैं परंतु विशेषकर उनके लिये जो यह सोचते हैं कि उनकी चरूरतों के लिये उनके पास पर्याप्त साधन हैं। ये कहानियां और समीकरण निम्न लिखित जाते सिखाते हैं:ॉ

[४] ब

- सभी लोग, चाहे उनके पास कितनी भी धन संपत्ति या शोहरत क्यों न हो, वे सब परमेश्वर के द्वारा बुलाए गए है कि जो कुछ उनके पास है उसे देदे। किसी को भी चाहे वह गरीब ही क्यों न। हो छूट नहीं है।
- ऐसा कभी नहीं होता कि जो कुछ हमारे पास है वह ''बहुत कम'' या ''इतना महत्वपूर्ण नहीं है ''जिसे परमेश्वर उपयोग में नहीं ला सकता।
- जब भी परमेश्वर हमसे चाहे हमें उसे देना चाहिये, चाहे हमारी परिसथिति कुछ भी क्यों न हो।
- परमेश्वर पर विखास और परमेश्वर के लिये प्रेम देने के विषय हमारा लक्ष्य होना चाहिये। प्राप्ति और भरपूरी आ सकती है परंतु देने का विषय बदले में कुछ पाने की आशा पर आधारित नहीं होना चाहिये।
- त्यागपूर्ण दान बहुतायात या गुणन में परिवर्तित होता है। हम जो कुछ देते हैं परमेश्वर हमेशा उसे कई गुणा बढ़ाता है।
- जितना बड़ा त्याग उतनी बड़ी बढ़ौतरी।
- अंतिम पाठ शायद सबसे कठिन है: जो कुछ परमेश्वर ने हमें दिया है यदि हम उसे परमेश्वर को नही देते तो हम उसे केवल खोते ही नहीं परंतु स्वामी के घर से निकाले जाने का जोखिम भी उठाने हैं।

जब हम परमेश्वर के राज्य के गणित के सिद्धांत के विषय सोचते है, तो हमे आश्चर्य होगा कि एक प्रेमी परमेश्वर उस प्रकार के बड़े त्याग की मांग कैसे कर सकता है। फिर भी हमने देखा कि जब एक व्यक्ति ने प्रेम और आज्ञाकारी त्याग पर अमल किया तो परमेश्वर के राज्य की सामर्थ कारागार हुई। परमेश्वर चाहता है कि हम उसके समान बने, और प्रेमपूण त्याग परमेश्वर के चरित्र को प्रगट करता है। जितना अधिक हम उसके समान बनते हैं उतना ही अधिक हम उन्नति करेंगी, और उतनी ही हमारे आसपास की दुनिया भी उन्नति करेगी। त्याग की मांग सचमुच ऐसी परमेश्वर की ओर से है जो हमसे प्रेम करता है - ऐसे परमेश्वर से जो प्रेम है।

''तुम्हारे हाथ मे क्या है?''

कई मसीही स्वयं को देखकर कहते है: ''मै परमेश्वर के राज्य के लिये कुछ नहीं कर सकता । मुझमें कोई प्रतिभा नहीं है। मैं अगुवा नही हूँ। मैं प्रचार नहीं कर सकता और शिक्षा नहीं दे सकता। मेरे पास इतना नहीं है कि मै दूसरों की मदद कर सकूं।'' वे स्वंय को अपर्याप्त समझते हैं। इसका वचन में पहला उदाहरण मूसा था।[५] परमेश्वर जलती झाड़ी में मूसा से मिला और कहा, ''मूसा, मैं चाहता हूँ कितू फिरौन के पास जाए और मेरे लोगों को मिश्र से निकालकर उस देश में ले चल जिसकी मैने तेरे पुरखाओं से प्रतिज्ञा की थी। हम कल्पना कर सकते है कि मूसा के दिमाग में क्या था: ''परमेश्वर क्या तू नहीं जानता कि मिस्र में मेरे सिर पर इनाम रखा हैं। मैने एक मनुष्य को मारडाला है। चालीस

[५] ब

वर्षों से मै मिस्र से बाहर हूं। मै तो अब वहां की संस्कृति भी नही जानता कि वहां क्या हों रहा है। मै सचमुच ऐसा करने के लिये तैयार नहीं हूं। मूसा ने कहा, ''कौन, मै?'' ''मै कौन हूं कि फिरौन के पास जाऊं और इस्त्राएल के गुलामों को मिस्र से बाहर भेजने की मांग करूं?''

परमेश्वर मे ..... दिया, ''परंतु मूसा, मैं तेरे संग रहूंगा।'' तब मूसा ने कई बहाने बनाए: ''परमेश्वर मैं तो ठीक से बोलना भी नहीं जानता। मुझमें कोई प्रतिभा भी नहीं है। सि काम के लिये मेरा भाई मुझसे बेहतर है।''

तब परमेश्वर ने मूसा से कहा। मै उसकी आवज में नाराजगी को समझ सकता हूं: ''सूसा तेरे हाथ में वह क्या है? मूसा ने कहा: ''यह केवल एक लाठी ही है - एक डंडा।'' परमेश्वर ने उसे भूमि पर ..... को कहा। सूसा ने उसे भूमि पर डाल दिया आट वह एक सांप बन गई! परमेश्वर ने मूसा को उसे उठाने को कहा। आश्चर्य जनक मूसा ने ऐसा ही किया। वह फिर से लाठी बन गई। परमेश्वर ने उस लाठी का उपयोग फिरौन के सामने अपनी सामर्थ के प्रदर्शन के लिये किया। उसने उसका उपयोग लाल समुद्र को दो भागों में बांटने के लिये किया ताकि इस्त्राएली लोग मिसा की सेना के आगे होकर समूद्र से पाट हो जाएं। उसने उसका उपयोग एक चट्टानपर मारकर महस्थल में पानी निकाला एक ..... की प्यास बुझाने के लिये किया। उसने उसका उपयोग शत्रु को ..... इस्त्राएल की शक्ति को बनाए रखने के लिये किया। जब तक परमेश्वर ने उसका उपयोग नहीं किया वह केवल एक लाठी ही था। मूसा ने सोचा कि जो कुछ परमेश्वर उससे करने को कह रहा है उसके लियें वह अयोग्य है, और सोचा कि लाठी कोई महत्व नहीं रखती। सूसाको लाठी भूमि पर फेंकने की आज्ञा के द्वारा परमेश्वर कह रहा था, ''मूसा जो कुछ तेरे हाथ में है मुझे दे दे, मैं उसे लेकर मेरे राज्य की बढ़ौतरी के लिये उयोग में लाउंगा।''

हमें इस बात को याद रखना चाहिये कि परमेश्वर चाहता है कि जो कुछ हमारे हाथ में है उसे हम परमेश्वर द्वारा उपयोग में लाने के लिये देदें। यह जोखिम भरा दिख पड़ेगा। सृजनहार की संसान होने के नाते कमी घटी में भी ऐसे जोखिम उठाना हमारे लिये उचित है। यह जोखिम अंधा विश्वास नहीं है, परंतु यह परमेश्वर पर भरोसा है। उस बात को याद करना जरूरी है कि जब हम परमेश्वर के हाज्य के लिये जोखिम उठाते है तो जिन बातों की हम जोखिम उठाते है वे हमारि अपनी नहीं होती। जो जोखिम हम उठाते है वह ''तौड़ा'' है जिसे परमेश्वर ने हमें दिया है। बाइबल हमें बताती है, ''उसकी इश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से संबंध रखता है हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सदगुण के अनुसार बुलाया है।''[६] उसका आदर करने के लिये उसने आवश्यक सब कुछ हमें दे दिया है। हमारे पास आशा है। इस बात की निश्चयता है कि परमेश्वर अपनी संतानों की इमानदारी का आदर करता है। परमेश्वर के प्रेम के प्रगटिकरण में कलीसिया को धैर्यवान होना चाहिये। वास्तविक त्याग के लियें हिम्मत की जरूरत हो ती है। ''महत्वपूण त्याग के लिये अयोग्य जीवन साहसपूर्ण कार्य के लिये भी अयोग्य है।''[७]

---

[६] ब

[७] ब

स्थानीय कलीसिया के लिये तात्पर्य (आशय)

स्थानीय कलीसियों के लिये कुछ बाध्य तात्पर्य (आशय) है:

- स्थानीय कलीसियाएं - चाहे उनके पास बहुत कम भौतिक साधन क्यों न हों - सामर्थ हीन नहीं हैं। जो कुछ वे आज्ञापालन से देते हैं परमेश्वर उसका उपयोग करेगा, और उसकी महिमा के लिये वह उसे बढ़ाएगा। जब परमेश्वर की महिमा होती है तब उसका राज्य भी बढ़ता है।

- जो कुछ उनके पास है उसे स्वयं के लिये रोके रखना स्थानीय कलीसिया के लिये खतरनाक बात है। कलीसिया को चाहिये कि परमेश्वर की करुणा के प्रगटीकरण के लिये दूसरों की मदद हेतु अपने ..... का/साधनों का उपयोग करे।

- जब परमेश्वर के राज्य के लोगों को छोटकर दूसरों का त्यागपूर्ण सहायता मिलती हैं तब उसका महत्व किसी की बढ़ती में से दी हुई सहायता से कही ज्यादा पढ़ जाता है।

- कलीसियाओं को चाहिये कि वे अपने लोगों को देना सिखाएं। हम परमेश्वर के राज्य के गणित के सिद्धांत सिखाना चाहिये। इन सच्चाइयों को न सिखाने से परमेश्वर द्वारा उन्हें दी जाने वाली आशीषों से वे वंचित रह जाते हैं।

- स्थानीय कलीसियाओं को चाहिये कि वे उनके लोगों के द्वारा दिये गए त्यागपूर्ण दान को घोषित करें, केवल कलीसिया में पाऐ जाने वाले साधनों से नहीं परंतु स्वेच्छा और त्यागपूर्ण रीति से उन्हें कलीसिया के बाहर निवेश के द्वारा।

- कलीसियाओं को डरने की जरूरत नहीं परंतु परमेश्वर पर विश्वास रखने की जरूरत है जो आशीषों को बढ़ाता है। तीनों के दृष्टांत में जो एक फर्क था वह था -जिस तरह उन्हों ने विश्वास'' को समझा। पहले दोनों उसे ''जोखिम'' कहा। तीसरे दास ने उसे ''डर'' - कहा - अर्थात उसके पास जो कुछ थोड़ा सा था उसे भी खो देने का डर।

परिवर्तन के साधन १२

सन १९८० के शुरुवाती दिनों में हार्वेस्ट ने लेटिन अमेरिक की कलीसिया को उनके समाज में जो आर्थिक रीति से कमजोर थी, संतुलित सेवकाई समझने के लिये साधारण उदाहरणों का उपयोग किया। हम यह कहते हैं कि पवित्र आत्मा ने लुका जो एक युनानी डाक्टर था उसे यीशु के बढ़ने के बारे मे ऐसा लिखने के लिये प्रेरित किया: ''और यीशु बुद्धि और डील-डौल में, और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।''[१] यह भाग हमें एक साधारण और उपयोग में लाने योग्य तरीके से मनुष्य के बढ़ने को सिखाता है - साथ ही परमेश्वर के तरीकों को भी। वचन में कहीं भी लोगों को यीशु की तरह बढ़ने की आज्ञा नहीं दी गई। फिर भी वह मनुष्य रूप में अनंत परमेश्वर था। मनुष्य को लिये परमेश्वर की योजनाओं को प्रगट करने के लिये वह एकमात्र व्यक्ति था। - इसीलिये हमने लूका द्वारा लिखित यीशु के बढ़ने के वर्णन को आदर्श के रूप में लिया। यह छोटा पद मनुष्य के बढ़ने की चार श्रेणियों को बताता है।

- ''कत'' में बढना शारीरिक बढ़नेको बता ता है।
- ''परमेश्वर के अनुग्रह'' में बढ़ना आत्मिक बढ़ने को बताता है।
- ''मनुष्य के अनुग्रह में बढ़ना सामाजिक तौर पर बढ़ने को बताता है।[२]
- ''बुद्धि'' में बढ़ना परमेश्वर के विषय और उसके मार्गो, आज्ञाओं, विचारों, निर्देशों और हमारे शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक संवेधों के विषय सीखने को बताता है।

व्यक्तिगत, पारिवारिक कलीसिया, समाज और सामाजिक उन्नति के लिये हमने लूका २:५२ को आदर्श के रूप में पाया। जब हमने उसे सेवकाई के लिये उदाहरण के रूप में इसकी शिक्षा दी तो हम पर सरलवाद का आरोप लगाया गया। हो हम जानते हैं कि विश्वविद्यालय उसके अध्ययन के लिये एक पूरा विभाग ही समर्पित कर देते है जो लोगों को फलाता-फुलाता या लड़खड़ाता है। हम यह बात समझते है कि सामाजिक उन्नति को ज्यादा पेचीदा तरीकों से बताया जा सकता है। परंतु हम इस बात पर विश्वास नहीं करते कि एक व्यक्ति को ..... या एक राष्ट्र के परिवर्तन के लिये इन पेचीदारियों मे महारत हासिल करना आवश्यक था। मनुष्य और समाज की उन्नति के शैक्षणिक पे ..... तरीके केवल उचित समय पर ही उपयोगी रोते है, परंतु हमारे साथ कार्यरत स्थानीय कलीसियाओ के लिये ये तरीके बिना वजह पेचीदे और अव्यवहारिक थे। हमारा विश्वास था कि परमेश्वर का वचन - जो इश्वरीय ज्ञान में दक्ष पीढ़ियों द्वारा गहन अध्ययन किया जाए - सरल वास्तविक और उपयोगी है।

---

[१] ब

[२] ब

हम पर आरोप था कि हम बाइबल के भागों को उसके उद्देश्य के बाहर भी खींचते हैं। हमें बताया गया था कि बायबल के भागों की इस तरह अव्हेलना विफल होगा, परंतु हमारे पुराने अनुभवों ने मुझे आश्वत कर दिया कि डाक्टर लूका की कलम से लिखा गया यह छोटा पद सकारात्मक परिवर्तन को लाएगा।

ऐसा ही एक अनुभव ब्राझील में हुआ। मैने युथ विथ ए मिशन के ब्राझील के मिश्नरियों को लूका २:५२ को सिखाया। वे तुरंत पूरे ब्राझील में फै लगये। विद्यार्थियों में से दो अविवाहित स्त्रियां थी जिन्हों ने अमेझान नदी के किनारे एक बसे लोगों को जो क पिछड़ी जाति के ...., उन्हें वचन सुनाया। वहां शिक्षा का स्तर काफी नीचे था उसलिये उन्हों ने संदेश को कहानियों और चित्रों के द्वारा सिखाया। आदिवासियों को सिखाने के पस्चात, मिश्नरियों ने उन्हें चार में से एक तरीके को चुनने को वहा जिसपर वे कार्य कर सकते थे। अगुवे बने। नदी के लोगों ने दर्शन को इतना स्पष्ट रीति से समझ लिया कि मिश्नरियों ने चार अगुवों को और सहायकों को शिष्य बनाया कि वे गांव के लोगों और जीवन की लूका २:५२ के प्रेाणियों के अनुसार अगुवाई करें।

स्थानीय कलीसियाओं ने इस आदर्श को सेवकाई के लिये सराहा। लूका २:५२ का यह उदाहरण समझने, याद रखने और अमल करने के लिये सरल रहा है। इसे पिछले बीस वर्षों से भी अधिक समय से हजारों कलीसियाओं, विभिन्न संस्कृतियों, और लगभग सभी महाद्वीपों में उपयोग में लाया जा रहा है। जो साधन हारवेस्ट ने विकसित किये वे लूका २:५२ में यीशु के बढ़ने के चार भागों से संबंधित है। दो प्राथमिक साधन है प्रेम का अनुशासन और मूल योजनाए:

- प्रेम का अनुशासन प्रत्येक मसीहि के परमेश्वर की आज्ञानुसार दूसरों की प्रेमपूर्ण सेवा कार्यो की योजना बनाने और उसपर कार्य करने में सहायक होता है। यह साधन इसके उपयोग करने वाले को जरूरत की चार बातों के लिये दूसरों की सेवा करने को सखिाता है - बुद्धि, शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक। यह इसे ३ क्षेत्रों में करने का निर्देश देता है - परिवार में कलीसिया में और स्थानीय समाज में। उन साधनों के उपयोग से पड़ोसि से प्रेम करना एक आदत और जीवनशैलि बन जाना चाहिये।

- मूल योजनाएं प्रेमपूर्ण सेवा के कार्य हैं जो कलीसिया के छोटे समूह के सदस्यों द्वारा कलीसिया के बाहर स्थानीय समाज या अन्यत्र स्थान की जरूरतों को पूरा करने के लिये किये जाते है। ऐसी योजनाएं करने योग्य सरल, अल्पकालीन और स्थानीय साधनों द्वारा कीजाने योग्य होती हैं। वे परमेश्वर की इच्छाओं और करुणा से परिपूर्ण तथा। ..... रहित होनी चाहिये। उन्हें प्रार्थना पूर्वक और सोचविचार कर तैयार करना चाहिये। जहां हो सके ..... को सहभागी होने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये। जहां उचित हो उन्हें आत्मिक से भी सहभागी करना चाहिये। जब कार्य पूरा हो जाए तो उनकी परमेश्वर के राज्य के पैमाने से समीक्षा की जानी चाहिये।

साधनों और योजना के फार्म ''यदि यीशु मेयर होता'' इस पुस्तिका के संक्षिप्त संस्करण के चौथे भाग में दिये गये हैं। उसी से संबंधित जानकारियां हारवेस्ट वेबसाइट: (www.harvestfoundation.org) (Home page क्लिक करे material ling). जो कलीसियाएं बहुउद्देश्यीय सेवकाई में रुचि रखती हैं उन्हें इन स्त्रोतों का फायदा उठाने की सलाह दी जाती है।

अमेरिका की एक कलीसिया के कई सदस्य योजना के साधनों पर अमल करने के लिये तत्पर होंगे! उन्हों ने उन परिचारिकाओं के लिये मूल योजना शुरू करने का निश्चय किया जो सामाजिक आश्रम में बुजुर्गो की देखदेख करते है। उन्हों ने एक यादगार भोज और प्रेरणादायक कार्यक्रम का आयोजन किया। बाद में कलीसिया के सदस्यों ने कहाः ''यदि हम बैठ कर योजना न बनाए होते तो इस मूल योजना को शुरू ही न कर पाते। योजना के कारण ही परिवर्तन आया।''[३]

साधनों के उपयोग हेतु मुख्य सिद्धांतः

<u>सिद्धांत १</u>: मूल योजनाओं में कई झंझटें होती है - विशेषकर क्यों कि वे त्याग के विषय बताती है- और हमारी सेवा का प्रभाव हमारे त्याग के अनुपात मे ही होता है।

भूल या बीज के ..... सबसे अधिक जानकारी या शिश्य यीशु की अपनी मृत्यु के भविष्यवाणी से मिलती है।''[४]

बीज या मूल त्याग को दर्शाते है। बीज को जिस कार्य के लिये उसे बनाया गया है उस कार्य के लिये मरना ही होता है। जब तक वे मर नहीं जाते, वे फल नहीं ला सकते। जब वे मरते है तब वे बहुतायात से बढ़ते है। मृत्यु ही अंतिम त्याग होता है - बीज के लिये, मनुष्यों के लिये और यहां तक कि उस व्यक्ति भी जो स्वंय परमेश्वर था। यीशु ने अपने चेलों को यह स्पष्ट कर दिया था। कि शिष्यता की कीमत अपने आपसे इन्कार था। हर बात के लिये मृत्यु केवल उसके पीछे चलने को छोड़कर/ परमेश्वर के राज्य के हिसाब में केवल यहीं एकमात्र त्याग है जो चंगाई, उद्धार और परिवर्तन की सामर्थ को प्रदान करता है।

<u>सिद्धांत २</u>: पमेश्वर ही है जो फल लगाता है। हमे आज्ञाकारिता के साथ बीज बोना चाहिये परंतु परमेश्वर ही योजनाओं को फलवंत काता है।

यीशु ने चेलों को याद दिलाया कि उनके द्वारा की जाने वाली सेवा का प्रभाव ऐसा नही था जिसका प्रेम उन्हें मिलता।

> *''मैने तुमहें वह खेत काटने के लिये भेजा जिसमें तुमने परिश्रम नही किया दूसरों ने परिश्रम किया और तुम उनके परिश्रम के फल में भागी हुए।''*[५]

यही बात हम पर भी लागू होती है। जिनकी हम सेवा करते है परमेश्वर ने उनके हृदय में बहुत पहले से ही कार्य करना आरंभ कर दिया है। जो परमेश्वर ने किया है उसका प्रेम लेना गलत है। यहां तक किय यह खतरनाक भी है। यह परमेश्वर के महिमा और श्रेय की चोरी है। जब हमारी आज्ञापालन के द्वारा परमेश्वर के राज्य में प्रभाव दिख पड़ता है, हमारे विचारों में और शब्दों के द्वारा हम किसे श्रेय देते है। पौलुस ने कहा ''इसीलिये न तो लगाने वाला कुछ है और न सींचने वाला, परंतु परमेश्वर ही सब कुछ है जो बढ़ाने वाला है।''[६]

---

[३] ब

[४] ब

[५] ब

[६] ब

<u>सिद्दांत ३</u>: व्यक्ति और कलीसियाओ को यदि वे यीशु के प्रेम को जीवन शैली के रूप में प्रगट करना चाहते हैं तो उन्हे अनुशासन की जरूरत है।

जब मै ऑस्वल्ड चेम्बर्स की My Utmost for His Highest पुस्तक को पढ़ रहा था तो २ पतरस १:५-७ पर उनके विचारों से जो उस प्रकार है, मै बहुत प्रोत्साहित हुआ था:

> *''इसी कारण तुम सब प्रकार का यत्न करके अपने विश्वास पर सदगुण, और सदगुण पर समझ, और समझ पर संयम, और संयम पर धीरज, और धीरज पर भक्ति और भक्ति पर भाइचारे की प्रीति और भाईचारे की प्रिति पर प्रेम बठाते जाओ।''*

चेम्बर्स ने इसप्रकार समझाया:

> हमें हमारे जीवन मे चरित्र से संबंधित सभी जातों को जोड़ना चाहिये। कोई भी व्यक्ति प्रकृतिक या आप्राकृतिक तौर या चरित्र के साथ पैदा नहीं हुआ; उसे बढाया या विकसित किया जाना चाहिये। न ही हम आदतों को लेकर पैदा हुए है - जो नया जीवन परमेश्वर ने हमारे भीतर दिया है हमें उसी के आधार पर इश्वरीय पवित्र आदतों को आपने जीवन मे लाना होगा।[७]

परमेश्वर के प्रेम को हमारी जीवन शैली के रूप में प्रगट करने के लिये हमे अनुशासन की जरूरत है। पतरस लिखता है कि चरित्र जोड़ने से विकसित होत है। परंतु हम बिना लक्ष्य के कभी-कभार ही ऐसा करते है। उस गधांश में पतरस का आव्हान उस अनुशासन के जोड़ने से हैं जो प्रेम और परिपक्वता की जीवन शैली को लाता है।

<u>सिद्धांत ४</u>: जीवन शैली के रूप में प्रगट करने हेतु कलीसिया की सुसमाचारीय सेवा में व्यक्तिगत और कलीसियाई स्तर पर परमेश्वर के प्रेम के भाव निहित होना चाहिये

लोग मूल (बीज) योजना की ओर आकशित होते हैं। वे प्रकट, तुरंत और मार्ग स्पर्शी होते है। वे आग्रही और सामर्थी होते हैं। वे परिवर्तन लाते हैं। वे उत्साह को उत्पन्न करते हैं। वे उत्तेजक और नाटकीय होते हैं। उनका कुछ अर्थ /उद्देश्य होता है। फिर भी मै उस बात से परशान हूं कि लोग प्रेम के व्यक्तिगत स्तर पर अमल करने वाली बातों को बहुत कम ही समझ पाते हैं। किसी न किसी कारणवश व्यक्तिगत अनुशासन मूल (नीज) योजना के समान उत्तेजक नहीं दिख पडते। दोनो बातों कठिन है। दोनो का किया जाना जरूरी है। लकातार लगेरहना ही कुंजी है। यदि कलीसिया अपने पड़ोसियों के साथ प्रेमपूर्ण कार्यकरर्ता रहे परंतु उसके सदस्य व्यक्तिगत स्तर पर कुछ न करे तो संसार इस बात पर गौर करता है। यदि लोग व्यक्तिकत स्तरपर ..... की सेवा करे और कलीसिया कुछ न करे तौ भी संसार देखता है।

सौभाग्यवश हमें चुनाव करने की जरूरत नहीं है। कलीसिया, परमेश्वर के राज्य को प्रगट करने के लिये दोनों साधनों का उपयोग कर सकती है। प्रेम के अनुशासन में एक व्यक्ति परमेश्वर के राज्य का राजदूत होता है। मूल (बीज) योजना में कलीसिया परमेश्वर के राज्य की राजदूत होती है। जब

---

[७] ब

कलीसिया सुसमाचार प्रचार की योजना बनाएं तो उसे दोनो अर्थात व्यक्तिगत और कलीसियाई स्तर पर परमेश्वर के प्रेम के प्रगटीकरण का उपयोग करना चाहिये।

व्यक्तिगत तथा बहुउद्देशीय शिष्यता के प्रेम का अनुशासन और मूल बीज योजना व्यक्तिगत और बहुउद्देशीय शिष्या के दो साधन है - और कुछ अन्य साधन भी हैं। जिस प्रकार सीखने वाली गाड़ी के ..... या पिता के सम्हालने वाले हाथ बच्चे को सायकिल सीखने में सहायक होते है उसी प्रकार वे भी परमेश्वर के पूरे सुसमाचार को सुनाने के लिये साधन तथा ..... हैं जो लोगों के विश्वास और अनुभव को बढ़ाते है। और प्रशिक्षण के चाकों की तरह उन्हें अनुभव और विश्वास प्राप्त करने के पश्चात अलग किया जा सकता है। फिर भी प्रशिक्षित ''अगुवों'' को कौशल्य, तकनीकों, अनुशासनों और संतुलन को भूलना नही चाहिये जब वे उनके पड़ोसियों के साथ परमेश्वर के प्रेम बांटते हैं - और दूसरों को प्रशिक्षित करने के लिये साधनों का उपयोग करते है।

सेवा एक जीवन शैली होना चाहिये! जब लोग मसीहि परिपक्वता के किसी भी स्तर पर किसी योजना या अनुशासन को पूरा कर लेतेहै तब उनके पास संतोष के साथ मुस्कुराने और उनके तौलियों या बेसिन - या उनके मूल योजना की समीक्षा के अवसर भी नहीं होते। नहीं, वे लोग तो बस परमेश्वर के प्रेम और सेवा के लिये बेहतर तैयार रहते हैं।

यदि यीशु मेयर होता तो मेरा विश्वास है कि वह उसके लोगों को - व्यक्तिगत और कलीसिया के रूप में - छोटे, त्यागपूर्ण बीजों को डालने के लिये प्रोत्साहित किया होता। ये उसी प्रकार के प्रोमपूर्ण सेवा के बीज होते जिन्हें हम वचन में पढ़ते और स्वयं भी वैसा ही कर सकते हैं। यदि यीशु मेयर होता तो वह हमारे त्यागपूर्ण प्रयत्नों को उसी रीति से आशीषित करता जैसे वचन में लिखे अनुसार उसने किया था - और आज भी वह कर रहा है।

जो साधन हममे बताए है वे आपको, आपकी कलीसिया को और कलीसिया के प्रत्येक सदस्य को परमेश्वर के परिवर्तन की योजना को पूरा करने में आपकी प्रोत्साहित को और सिद्ध होने में आपकी प्रोत्साहित को और सिद्ध होने में ..... सहायता को - ठीक वैसे ही जैसे यीशु मेयर रहते हुए किया होता।

उपसंहार

यदि यीशु मेयर होता तो आपका समाज किस प्रकार बदला होता?

यह एक बड़ा प्रश्न हैं, हैना? आपके साथ मेरे विचारों को बांटने का यह मेरे लिये एक मौका है। मेरा विश्वास है संभव हम और् नकी ..... सोचने में आपके भी कठिनाई और चुनौती का सामना करना पड़ा होगा।

यीशु एक मेयर के समान उन कई ..... मे से एक है जिसे हम समाज प्रत्येक कलीसिया के लिये परमेश्वर की योजना को जानने के लिये उपयोग कर सकते है। यह एक रुचिकर और चुनौतिपूर्ण चित्रण है। उसमें कोई प्रश्न की बात ही नही कि परमेश्वर चाहता है कि प्रत्येक स्थानीय कलीसिया जो उसके शिष्य है उसके राज्य का एम्बेसी (दूतावास) बनें - उसके योजनाओं का चर्चा करने और उन्हें कार्यान्वित करने के लिये।

अब जब हम महां अपनी बात यहां बंद कर रहे है यह मेरा सौभाग्य है कि हम हमारे ..... मदद मांगे कि हम इसकी इच्छाओं को जाने और उन्हें पूरा करें एसे समय जब हम हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में इसप्रकार का जवाब देते है: यदि यीशु मेयर होता तो आपका समाज किस प्रकार बदला होता?

पिता मेरे भाई -बहनों के लिये धन्यवाद। आपने मुझे यह सोभाग्य तथा सम्मान दिया कि मै उनके साथ आपकी दुल्हन और उसके उद्देश्य के विषय उनके साथ अपने विचार बांट सकूं।

जो कुछ मैने लिखाहै, आपकी आत्मा के द्वारा गेहूं को भूसे से अलग करें।

पिता हमें आपकी आज्ञा पालन करने की प्रबल भावना से हमें और अधिक परिपूर्ण करे - प्रथम हमारे जीवन में और फिर कलीसिया में जिसकी हम सेवा करते है - जब तक आपके राज्य की महिमा सभी खोए हुए और .... हुओं को आपके चंगाी की ज्योति में न ले आए।

हमारे विचारों और हृदयों को सच्चाई से भर दीजिये कि आपका पुत्र - हमारा मेयर - उनकी इच्छाओं के हमारा..... पूरी कर सके। हमें प्रेरित करें कि हम मेयर के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये अपने आप को रोक न सकें परंतु पूरी तरह से अमीर्पित हो सकें।

आपका राज्य आए, आपके इच्छा पृथ्वी पर पूरी हो जैसे स्वर्ग मे पूरी होती है।

यीशु के नाम में आमीन